नई दिल्ली
शुक्रवार
03 मई, 2024
वर्षः 10, अंकः 241
पृष्ठः 08, मूल्य 2 रु0

E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
सद्भावना टुडे
आवाज़ अधिकार की

उत्तर से दक्षिण पूर्व से पश्चिम तक फैला है भ्रष्टाचारियों...पेज-05

DELHIN/2014/58158

भाजपा की जुमलेबाजी इस बार काम नहीं...पेज-08

हिन्दी में प्रकाशित होने वाला सबसे लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र
'सद्भावना टुडे'
में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :-
011-43678240
E-mail
story@sadbhawna.today
sadbhavnatoday@gmail.com
web: www.sadbhawna.today

एक नजर

लोस चुनाव प्रभावित करने की कोशिश कर रहा है अमेरिका

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत ने अमेरिका के अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग को एक पक्षपाती संगठन और उसकी रिपोर्ट को राजनीतिक एजेंडा करार दिया है तथा कहा है कि इसके जरिये भारत के आम चुनावों को प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने गुरुवार को यहां मीडिया की नियमित ब्रीफिंग में कहा, यूनाइटेड स्टेट्स कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम (यूएससीआईआरएफ) ने कल अपनी रिपोर्ट 2024 जारी की है। वे पहले भी अपनी रिपोर्ट जारी करते रहे हैं। प्रवक्ता ने कहा कि यूएससीआईआरएफ को एक पक्षपाती संगठन के रूप में जाना जाता है। वे वार्षिक रिपोर्ट को भारत पर अपने एक राजनीतिक एजेंडे के हिस्से के रूप में प्रचारित करते हैं। उन्होंने कहा, हमें वास्तव में कोई उम्मीद नहीं है कि यूएससीआईआरएफ कभी यह समझने की कोशिश करेगा कि दुनिया में सबसे बड़े चुनावी अभियान में हस्तक्षेप करने के उनके प्रयास कभी सफल नहीं होंगे।

भारत ने खारिज की ऑस्ट्रेलियाई मीडिया रिपोर्ट

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत ने ऑस्ट्रेलियाई मीडिया की उन रिपोर्टों को अटकलबाजी बताते हुए गुरुवार को खारिज कर दिया जिनमें कहा गया है कि 2020 में दो भारतीय जासूसों को किसी खुफिया जानकारी हासिल करने की कोशिश करते हुए पकड़े जाने पर निष्कासित किया गया था। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने यहां मीडिया की नियमित ब्रीफिंग में ऑस्ट्रेलियाई मीडिया रिपोर्टों के बारे में पूछे जाने पर कहा, फ्हमारे पास वास्तव में उन रिपोर्टों पर कोई टिप्पणी नहीं है। हम उन्हें अटकलों पर आधारित रिपोर्ट के रूप में देखते हैं और हमें उन पर कोई टिप्पणी नहीं करनी है। खालिस्तानी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या पर कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की टिप्पणी पर प्रवक्ता ने कहा, हमने उस कार्यक्रम के संबंध में कनाडाई उप उच्चायुक्त को तलब किया था, जिसमें प्रधानमंत्री श्री ट्रूडो ने भाग लिया था कि खालिस्तान के नारे लगाए गए। उन्होंने कहा, आप जिस अन्य मीडिया कार्यक्रम का जिक्र कर रहे हैं, वह इस कार्यक्रम के इतर हुआ था। इसलिए, यह कोई नई बात नहीं है कि कनाडा में अलगाववाद, उग्रवाद और हिंसा को राजनीतिक स्थान दिया गया है, यह न केवल भारत-कनाडा संबंधों को प्रभावित करता है बल्कि कनाडा में अपने नागरिकों के लिए हिंसा और आपराधिकता के माहौल को भी बढ़ावा देता है।

मेरा हर पल देश को विकसित बनाने के लिये हैः प्रधानमंत्री

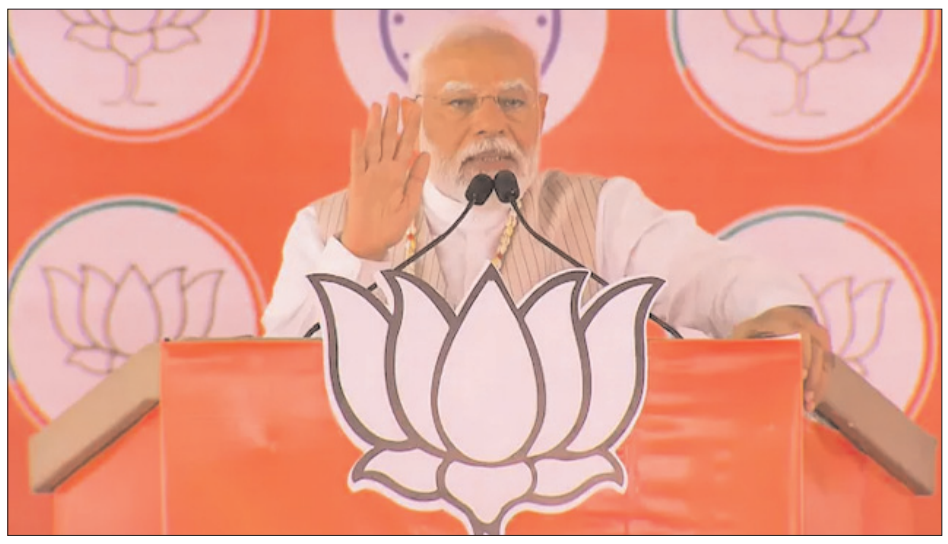

पीएम नरेंद्र मोदी ने गुजरात के आणंद में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुये कहा

आणंद,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को गुजरात के आणंद में कहा कि उनका हर पल देश को विकसित बनाने के लिये है। श्री मोदी ने गुजरात के आणंद में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुये कहा कि उनके लिये आश्चर्य है, आणंद का यह विशाल केसरिया सागर यह देखकर उन्हें लगता है कि इसने आज सभी रिकॉर्ड तोड़े हैं। इस चुनाव में भी आणंद और खेडा सभी रिकॉर्ड तोड़ेंगे। उन्होंने कहा, अब जब आपने मुझे जब देश का काम सौंपा है, तब मेरा एक ही सपना है। कि 2047 में जब भारत की आजादी के सौ वर्ष हो जायें, तब अपना हिन्दुस्तान विकसित भारत होना चाहिये और अपना गुजरात भी विकसित भारत होना चाहिये। प्रधानमंत्री ने कहा, विकसित का मतलब क्या है, यह आणंद खेड़ा वालों को समझाने जरूरत नहीं है, क्योंकि इन्होंने तो पूरी दुनिया देखी हुई है। समृद्ध दुनिया कैसी हो, इन्हें पता है। प्रगति कैसी हो, इन्होंने देखी है। इनके कुटुंबजन आज भी दुनिया के समृद्ध देशों में रहते हैं। हमें एसा विकसित भारत बनाना है और उसके लिये मेरा हर पल आपके और देश के लिये है। मैने देश को गारंटी दी है, 24गुना7 और 2047, इस महान काम के लिये 140 करोड़ देशवासियों के सपने पूरा करने के लिये मुझे आपके और सरदार साहब की भूमि के आशीर्वाद चाहिये। पूरे देश में से आशीर्वाद मिलें, साथ ही जब सरदार साहब की भूमि के आशीर्वाद मिलें तो उसे चार चांद लग जाये। इसलिए मैं आज गुजरात की धरती के पास आशीर्वाद लेने आया हूं। उन्होंने कहा, यहां मेरी पहचान में कहा गया कि अब पीएम साहेब बोलसे (पीएम साहब बोलेंगे) कैसा अटपटा लगता है और कहो, नरेन्द्रभाई, अपने नरेन्द्रभाई बोलने की जो मजा है वो पीएम साहेब बोलने में नहीं है और जब घर आयें और घर के स्वजन कहें, आओ नरेन्द्रभाई केम छो (नरेन्द्रभाई कैसे हैं)। ऐसा सुनकर अच्छा लगता है। इसलिये मुझे तो गुजरात का कोई भाई मिले और कहे ओ नरेन्द्रभाई तो मैं समझ जाता हूं और दुनिया के किसी भी देश में जाऊं, तो एकाध तो मिल ही जाता है। आपका यह प्रेम और आशीर्वाद हकीकत में मेरे जीवन की बड़ी मूडी (पूंजी) है।

गुजरात का एहसान कभी भी भूल नहीं सकताः मोदी

सुरेंद्रनगर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को सुरेंद्रनगर में कहा कि गुजरात जिस तरह से उन पर प्रेम बरसा रहा है, इसका वह एहसान कभी भी भूल नहीं सकते। श्री मोदी ने गुजरात के सुरेंद्रनगर में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुये कहा कि इतनी बड़ी संख्या में माताओं-बहनों ने खड़े होकर आशीर्वाद दिया, वह उन सबके प्रति सिर नवांकर आभारी हैं। दो दिन से जिस तरह से गुजरात उन पर प्रेम बरसा रहा है। वह गुजरात का ऋण कभी भी भूल नहीं सकते। उनकी शासकीय कार्य कीर्ति सौराष्ट्र से शुरू हुई। उन्हें पहली बार विधायक सौराष्ट्र ने बनाया। इस गुजरात ने उन्हें इतना पक्का गढ़ा है कि वह कहीं कच्चा पड़ते ही नहीं। लोगों का सिर ऊंचा हो, लोगों की छाती 56 इंच की हो जाये, ऐसा उन्होंने किया है। इसका कारण लोगों के आशीर्वाद और प्रेम हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि हम छोटा सोचते ही नहीं, छोटा करते ही नहीं, स्टेचू बनाया तो दुनिया में बड़े से बड़ा, स्टेडियम बनाया तो दुनिया में बड़े से बड़ा, मतलब कच्चा कुछ करना ही नहीं।

चार जून के बाद राहुल बाबा की कांग्रेस ढूंढो यात्रा शुरु होगीः अमित शाह

बरेली,एजेंसी। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने गुरुवार को दावा किया कि लोकसभा चुनाव में इंडिया समूह की करारी हार तय है और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी चार जून से कांग्रेस ढूढो यात्रा पर निकलेंगे। बरेली में चुनावी जनसभा संबोधित करते हुए श्री शाह ने कहा घमंडिया गठबंधन के शहजादे राहुल बाबा ने चुनाव की शुरुआत तो भारत जोड़ो यात्रा से की थी लेकिन चार जून के बाद कांग्रेस ढूंढो यात्रा शुरू होगी। उन्होने कहा बाबा अलखनाथ नाथ और बाबा त्रिवटीनाथ की भूमिका को प्रणाम, महाभारत की यह भूमि है। हमारे सामने इंडी गठबंधन चुनाव लड़ रहा है। राहुल बाबा ने चुनाव से पहले भारत जोड़ो यात्रा की शुरुआत की 4 जून के बाद कांग्रेस ढूंढो यात्रा से समापन होगा। इस बार नरेंद्र मोदी 400 से बहुत आगे निकल रहे हैं।

श्री शाह ने अधिकाधिक मतदान की अपील करते हुये कहा एक-एक वोट भाजपा चुनाव चिन्ह कमल पर जानी चाहिए। यह चुनाव नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का चुनाव है। यह चुनाव आतंकवाद में नक्सलवाद को समाप्त करने का चुनाव है। जब जब यहां आया हूं। मैं पूछना चाहता हूं कि अयोध्या में राम मंदिर बनना चाहिए था या नहीं। 70 साल से कांग्रेस राम मंदिर के मसले को भटका रही थी, लटका रही थी। आपने दूसरी बार मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाया और 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा हुई। उन्होंने कहा कि सपा मुखिया अखिलेश यादव, राहुल बाबा और प्रियंका गांधी को निमंत्रण दिया लेकिन यह प्राण प्रतिष्ठा में नहीं आये क्योंकि वहां जाएंगे तो इनको वोट नहीं मिलेगा। विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि यह लोग तुष्टिकरण की राजनीति करते रहे हैं। यह कश्मीर हमारा है या नहीं। उत्तर प्रदेश और राजस्थान वालों का कश्मीर से क्या लेना देना, यह कहते थे। लेकिन बरेली का बच्चा-बच्चा मेरे कश्मीर के लिए जान देने के लिए तैयार है। श्री शाह ने कहा कि कांग्रेस कश्मीर में धारा 370 को हटाने के खिलाफ थी लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 370 हटाई। पूरे कश्मीर में आज हमारा तिरंगा शान से लहरा रहा है। मोदी ने देश को आतंकवाद से मुक्त कर दिया। सोनिया और मनमोहन की सरकार में आतंकी घुस जाते थे और धमाके करते थे। उन्होंने कहा कि 80 करोड़ गरीबों को अनाज देने का काम किया।

चुनाव के दौरान प्रस्तावित योजनाओं के लाभार्थियों के सर्वे पर कार्रवाई करेगा आयोग

नई दिल्ली,एजेंसी। चुनाव आयोग ने चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों द्वारा अपनी प्रस्तावित योजनाओं के लिए संभावित लाभार्थीयों के सर्वेक्षण और लोगों से विवरण की अपील जारी न करने के निर्देश दिए हैं। आयोग ने अधिकारियों से इसका उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए हैं। आयोग ने गुरुवार को कहा कि उसने इस तरह के सर्वे और अपील को गंभीरता से लिया है और इसे जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 123 (1) के तहत मतदाताओं को रिश्वत देने जैसा भ्रष्टाचार मानता है।

आयोग की एक विज्ञप्ति में कहा गया है, कुछ राजनीतिक दल और उम्मीदवार ऐसी गतिविधियों में संलग्न रहे हैं जो किसी वैध सर्वेक्षण और चुनाव के बाद लाभार्थी-उन्मुख योजनाओं के लिए व्यक्तियों को पंजीकृत करने के पक्षपातपूर्ण प्रयासों के बीच के अंतर को धुंधला करती हैं। आयोग ने इस समय चल रहे आम चुनाव 2024 में इस प्रकार की विभिन्न घटनाओं पर गौर करते हुए आज इस सबंध में एक परामर्श-पत्र जारी किया है। इसमें सभी राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों को किसी भी विज्ञापन/सर्वेक्षण/ऐप के माध्यम से चुनाव के बाद लाभार्थी-उन्मुख योजनाओं के लिए व्यक्तियों को पंजीकृत करने वाली किसी भी गतिविधि को तुरंत बंद करने और उससे दूर रहने के लिए कहा गया है। आयोग ने कहा कि चुनाव के बाद के प्रस्तावित लाभों के लिए पंजीकरण करने के लिए व्यक्तिगत मतदाताओं को आमंत्रित करना या उनका आह्वान करना उनके बीच पास्परिक लेन-देन के सौदे का आभास उत्पन्न कर सकता है । यह एक विशेष तरीके से एकतरफा मतदान के प्रलोभन की व्यवस्था है। आयोग ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को वैधानिक प्रावधानों के तहत ऐसे किसी भी विज्ञापन के खिलाफ उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया है, जैसे कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 127 ए, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 123 (1), और भारतीय दंड संहिता की धारा 171 (बी) के तहत कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

इंडी गठबंधन को वोट देना महापापः योगी

संजय सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

फिरोजाबाद। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को कहा कि बाप दादाओ की संपत्ति पर डाका डालने के लिए विरासत टैक्स लगाने की सोच रही कांग्रेस नीति इंडिया समूह को वोट देने का मतलब महापाप होगा।

सिरसागंज के गिरधारी लाल इंटर कॉलेज में भाजपा प्रत्याशी विश्वदीप सिंह के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए उन्होने कहा कि श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नए भारत का दुनिया में सम्मान बढ़ा है। बिना किसी धर्म जात भेदभाव के सब का साथ सबका विकास की नीति पर सभी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जनता के हर वर्ग को मिल रहा है। श्री मोदी के नेतृत्व में आपकी आस्था और विरासत और देश पूरी तरह सुरक्षित संरक्षित है सभी के चेहरे पर खुशी हो सभी वर्ग के लोग आत्मनिर्भर बने यह बीजेपी का संकल्प है। उन्होंने कांग्रेस पर हमला करते हुए कहा कि दूसरी ओर कांग्रेस और ईडी गठबंधन के नेता आप के बाप दादाओ की संपत्ति पर डाका डालने की नीयत से औरंगजेब के नए अवतार के रूप में प्रकट हुए हैं जो जजिया कर की तरह विरासत कर लगाने की बात कर रहे हैं। योगी ने कहा कि बाबा साहब डा भीमराव अंबेडकर ने धार्मिक आरक्षण का विरोध किया था लेकिन इंडी गठबंधन वाले नेताऔ की पिछड़ी जातियों के आरक्षण पर डाका डालकर धार्मिक आरक्षण लागू करने की मंशा है। उन्होने कहा कि कांग्रेस सपा हमेशा पिछड़ों के खिलाफ रही है केवल तुष्टिकरण की राजनीति करते हैं भगवान राम के अस्तित्व पर सवाल उठाते हैं। सपा शासन में माफिया राज होता है। हमने राम मंदिर बनवाया और हम माफियाओं की राम नाम सत्य भी करते हैं। जनसभा को मुख्य रूप से केंद्रीय मंत्री एस पी सिंह बघेल सहित अन्य स्थानीय नेताओं ने भी संबोधित किया।

राजनयिक पासपोर्ट पर जर्मनी भागा है प्रज्वल रेवन्ना

नई दिल्ली। कर्नाटक में जनता दल सेकुलर (जद-एस) के सांसद और करीब तीन हजार महिलाओं के साथ दुष्कर्म के आरोपी प्रज्वल रेवन्ना राजनयिक पासपोर्ट पर जर्मनी फरार हुआ है और जाने से पहले उसने सरकार से किसी तरह की कोई जानकारी साझा नहीं की है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने आज यहां नियमित ब्रीफिंग में पत्रकारों के सवालों के जवाब में यह जानकारी दी। श्री जायसवाल ने कहा, उक्त सांसद की जर्मनी यात्रा के संबंध में विदेश मंत्रालय से न तो कोई राजनीतिक मंजूरी मांगी गई थी और न ही जारी की गई थी। जाहिर है, कोई वीजा नोट भी जारी नहीं किया गया था। कोई वीजा नहीं राजनयिक पासपोर्ट धारकों के लिए जर्मनी की यात्रा करना आवश्यक है। मंत्रालय ने उक्त सांसद के लिए किसी अन्य देश के लिए कोई वीज़ा नोट भी जारी नहीं किया है...हां, उन्होंने राजनयिक पासपोर्ट पर यात्रा की थी।

किसान अधिक उत्पादन के लिए नई किस्मों का करे प्रयोगः सिंह

जयपुर,एजेंसी। राजस्थान में श्री कर्ण नरेंद्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर के कुलपति डॉ बलराज सिंह ने कहा है कि किसानों को अधिक उत्पादन के लिए पारंपरिक किस्मों के बजाय नवीनतम विकसित किस्मों का उपयोग करना चाहिए ताकि उत्पादन के साथ आय भी बढ़ सके। डा सिंह महाविद्यालय में गुरुवार को पादप प्रजनन की आधुनिक कृषि में आवश्यकता विषय पर आयोजित कार्यशाला में बोल रहे थे।

इस कार्यशाला के प्रमुख वक्ता पादप प्रजनक प्रो गजराज दहिया एवं प्रो ए के मिश्रा रहे। दिल्ली एवं हिसार के वैज्ञानिकों ने रेडी कार्यक्रम के दौरान संग्रहित किए गए विभिन्न संग्रहण जैसे बीज,रोग , कीट, खरपतवार एवं उर्वरक आदि को बारीकी से देखा एवं अच्छे कार्य से प्रभावित होकर प्रशंसा की। डॉ दहिया एवं डॉ मिश्रा ने कहा की रेडी छात्रों का कार्य प्रशंसनीय हैं। पादप प्रजनक डॉ ए के मिश्रा प्रधान वैज्ञानिक (हिसार कृषि विश्विद्यालय) पादप प्रजनन के महत्व के बारे में बताया कि पौधों के प्रजनन क्षेत्र में नवीन उत्पादनों की

खोज और विकास की यात्रा लगातार अग्रसर है, जिससे पौधों की प्रतिरोधक क्षमता, उपज और पोषण में सुधार होता है, आधुनिक प्रौद्योगिकीयों के उपयोग से, वैज्ञानिक समुदाय नवीन प्रजनन तकनीकों को विकसित कर रहे हैं जो कृषि क्षेत्र में क्रांति ला रहे हैं। यह उत्पादकता को बढ़ाने, रोग प्रतिरोधक्षमता को बढ़ाने और मिट्टी की गुणवत्ता को सुधारने में मदद करता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि इन नवीन प्रजनन तकनीकों के प्रयोग से, पर्यावरणीय परिस्थितियों में बदलाव के साथ कृषि उत्पादन में भी सुधार हो रहा है। साथ ही उन्होंने बताया कि विद्यार्थी अपना लक्ष्य निर्धारित करके उसके अनुरूप विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी करे। साथ ही लक्ष्य निर्धारित कर नियमित पुस्तकालय में पढ़ना भी चाहिए। डा दहिया ने विद्यार्थियों को सैद्धांतिक शिक्षा के बजाय प्रायोगिक शिक्षा पर ध्यान देने की जरुरत बताते हुए कहा कि स्नातक, स्नातकोतर एवं विद्यावाचस्पति की डिग्री अलग-अलग संस्थाओं से करनी चाहिए। उन्होंने छात्रों को आनुवांशिकी व पादप प्रजनन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पारंपरिक पादप प्रजनन विधियां के साथ साथ नवीन तकनीकियों का उपयोग आवश्यक है जिसके कारण पादप प्रजनन में नई तकनीकियों जैसे प्री ब्रीडिंग, स्पीड ब्रीडिंग, प्रिसिजन फिनोटाइपिंग व मारकर एडेड ब्रीडिंग आदि अपनाने की आवश्यकता है साथ ही उन्होंने कार्यशाला में मौजूद विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को सभी विषयों का सामान्य ज्ञान होना आवश्यक है जिसके लिए उन्हें किताबें पढ़नी चाहिए। डॉ दहिया व डॉ मिश्रा ने पादप प्रजनन विभाग के एमएससी व पीएचडी के छात्रों से वार्तालाप की, साथ ही बेहतर कृषि वैज्ञानिक बनने के टिप्स भी बताएं।

शक्सगाम घाटी भारत का हिस्सा, चीन को दी कड़ी चेतावनी

नई दिल्ली। भारत ने चीन को आज चेतावनी दी कि सियाचिन ग्लेशियर के समीप शक्सगाम घाटी भारत का हिस्सा है और चीन द्वारा जमीन पर किसी भी बदलाव की दशा में अपने हितों की रक्षा के लिए भारत जरूरी उपाय करेगा। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने यहां मीडिया की नियमित ब्रीफिंग में सियाचिन के पास चीनी गतिविधियों के बारे में पूछे जाने पर कहा, हम शक्सगाम घाटी को अपना क्षेत्र मानते हैं। हमने 1963 के तथाकथित चीन-पाकिस्तान सीमा समझौते को कभी स्वीकार नहीं किया है, जिसके माध्यम से पाकिस्तान ने अवैध रूप से इस क्षेत्र को चीन को सौंपने का प्रयास किया था। श्री जायसवाल ने कहा, हमने लगातार अपनी अस्वीकृति व्यक्त की है।

खडगे का मोदी को पत्र 'झूठ का असर नहीं होने से हैं आप हताश और चिंतित'

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर कहा है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन-राजग उम्मीदवारों को जनता से संवाद करने को लिए श्री मोदी ने जो पत्र लिखा है उससे जाहिर होता है कि वह हताश और चिंतित हैं और उन्होंने जो झूठ परोसा है इसका असर नहीं हो रहा है इसलिए वह उम्मीदवारों से भी झूठ बुलवाना चाहते हैं। श्री खडगे ने कहा मैंने राजग के उम्मीदवारों को लिखा आपका पत्र देखा जिसमें आपने उन्हें बताया है कि मतदाताओं से क्या संवाद करना है। पत्र के लहजे और विषयवस्तु से ऐसा लगता है कि आप बहुत हताश और चिंतित है इसलिए आप ऐसी भाषा के उपयोग के लिए उन्हें कह रहे है लेकिन यह भाषा प्रधानमंत्री कार्यालय के लिए उपयुक्त नहीं है। पत्र से यह भी प्रतीत होता है कि आप जो चाहते हैं आपके भाषणों में परोसे जा रहे झूठ का वैसा असर नहीं हो रहा हैं इसलिए अब आप चाहते हैं कि राजग उम्मीदवार आपके झूठ को बढ़ाएँ लेकिन एक झूठ को हजार बार दोहराने से वह सच नहीं बन जाता। उन्होंने लिखा मतदाता इतने समझदार हैं कि कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में क्या लिखा है और हमने क्या गारंटी का वादा किया है, वह खुद पढ़ और समझ रहे हैं।

भाजपा ने कोविशील्ड वैक्सीन की कंपनी से ली 52 करोड़ की रिश्वत, देश से माफी मांगें पीएम मोदीः संजय सिंह

मो. हबीबुल्लाह उर्फ मुन्ना,
सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के नेता व राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने भाजपा पर कोविशील्ड वैक्सीन की कंपनी से 52 करोड़ 50 लाख रुपये की रिश्वत लेने का आरोप लगाया. आरोप है कि 150 रुपये वैक्सीन के रेट से कंपनी को मुनाफा हो रहा था. इसके बाद भी भाजपा ने रेट 600 रुपये करा दिया. कोविशील्ड वैक्सीन के दुष्परिणाम के कारण कई देशों ने इस वैक्सीन पर बैन लगा दिया था.लेकिन भाजपा की केंद्र सरकार ने 10 करोड़ वैक्सीन बनाने का और ठेका दे दिया था. इस वैक्सीन के दुष्परिणाम से लोगों को हार्ट अटैक आ रहा है और उनकी मौत तक हो जा रही है. सरकार इस मामले में चुप है. जिन लोगों की मौत हुई उनके परिवार को हर्जाना मिले और पीएम मोदी देश से माफी मांगें. संजय सिंह ने कहा कि जब श्मशान में लाशें जल रही थीं, अस्पतालों में लोगों की मौत हो रही थी, कोविशील्ड नाम की कंपनी को वैक्सीन का ठेका दिया गया. एक करोड़ 10 लाख डोज कंपनी से मांग लिया गया. उसका दाम 150 रुपये रखा गया. वैक्सीन मार्केट में आई तो दुनिया के कई हिस्सों में हाहाकार मच गया क्योंकि इस वैक्सीन को लगाने से लोगों में दुष्परिणाम आने लगे. मार्च 2021 में दुनिया के तमाम देशों ने कोविशील्ड वैक्सीन को बैन कर दिया. तभी भारत सरकार ने 10 करोड़ का ठेका फिर इसी कंपनी को दे दिया. वैक्सीन लगवाने पर सर्टिफिकेट दिया गया, जिस पर पीएम मोदी का चेहरा था.

संजय सिंह ने कहा कि मई 2021 में इस वैक्सीन का दाम अचानक बढ़ाकर 600 रुपये कर दिया गया. देश महामारी से मर रहा था. अमेरिका में 400, बांग्लादेश में 280 रुपये, यूके में 210 रुपये में दी गई. जबकि वैक्सीन बनाने वाले पूनावाला ने कहा था कि 150 रुपये में भी उन्हें फायदा हो रहा है. अगस्त 2021 में 52 करोड़ 50 लाख रुपये की रिश्वत कोविशील्ड वैक्सीन बनाने वाली कंपनी से भारतीय जनता पार्टी ने ली. दाम बढ़ाया गया और रिश्वत ली गई. जब ब्रिटेन में इस वैक्सीन की कंपनी पर एक हजार करोड़ रुपये का हर्जाना लगा, तब इसका खुलासा हुआ कि इसके दुष्प्रभाव के कारण लोगों की जान जा रही है. भ्रष्टाचार के प्रति भाजपा का इतना समर्पण है. मोदी जी ने लोगों को वैक्सीन लगवाई, इसके लिए 6 हजार करोड़ रुपये के पोस्टर लगवाए.

संजय सिंह ने कहा कि जिस तरह इस कंपनी के ऊपर एक हजार करोड़ रुपये का जुर्माना है. उसी तरह जितने लोगों को जान गई है उनको हर्जाना मिलना चाहिए. भारत सरकार ने इस पर पहल क्यों नहीं की. यह मामला संसद में भी उठाया गया था लेकिन आखिर इसके खिलाफ कोई जांच क्यों नहीं हुई. जिन लोगों की मौत हुई उनके परिवार की कोई मदद नहीं हुई. क्योंकि गंदा है पर धंधा है ये, बीजेपी का चंदा है ये. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस देश की जनता से माफी मांगें.

पूरे देश में दिल्ली में सबसे बेहतर काम कर रहा दिल्ली महिला आयोग

पीएम और एलजी को इस बात से समस्या है कि दिल्ली में महिला आयोग पूरे देश में सबसे अच्छा काम कर रहा है. महिला आयोग अच्छे ढंग से कैसे काम कर रहा है. इस बात से समस्या है. इसलिए कर्मचारियों को निकाला जा रहा है. प्रज्वल रेवन्ना के भारत से बाहर जाने पर संजय सिंह ने कहा कि बिना पॉलिटिकल क्लीयरेंस के कोई भी सांसद विदेश नहीं जाता है. बीजेपी ने उसे भगाया है. इसलिए बीजेपी की सरकार में देश की महिलाएं सुरक्षित नहीं है.

कोविशील्ड टीके के दुष्प्रभाव पर लोगों को मुआवजा दिया जाना चाहिएः कांग्रेस

सैफुल्लाह सिद्दीकी, सद्भावना टुडे

नई दिल्ली। विपक्षी दल कांग्रेस ने आरोप लगाया कि केंद्र की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत सरकार ने कोरोना वायरस महामारी के दौरान टीके के दुष्प्रभाव को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के दिशानिर्देशों का पालन नहीं किया। कांग्रेस ने मांग की कि कोरोना वायरस रोधी कोविशील्ड टीके लेने के बाद दिल का दौरा या मिलते जुलते कारणों से जान गंवाने वालों के परिजनों को मुआवजा दिया जाए। हालांकि, भाजपा की गुजरात इकाई से जुड़े चिकित्सकों ने कहा कि राज्य में विशेषज्ञ समिति के एक अध्ययन से पता चला है कि कोविड-19 रोधी टीकों और रक्त के थक्के के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है।

ब्रिटेन की फार्मास्युटिकल कंपनी एस्ट्राजेनेका ने ब्रिटेन की अदालत में स्वीकार किया है कि उसका कोविड टीका रक्त के थक्के जमाने संबंधी दुष्प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। भारत में, सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) द्वारा निर्मित इस टीके को कोविशील्ड नाम से जाना जाता है। कांग्रेस की गुजरात इकाई के अध्यक्ष और राज्यसभा सदस्य शक्तिसिंह गोहिल ने सवाल किया कि डब्ल्यूएचओ की सलाह के बावजूद दुष्प्रभाव को लेकर डेटा एकत्र क्यों नहीं किया गया। उन्होंने कहा, ''चूंकि उस समय दुनिया के पास टीकों के दुष्प्रभावों का विश्लेषण करने का समय नहीं था, इसलिए डब्ल्यूएचओ ने कहा था कि देशों को दुष्प्रभावों के आंकड़ों का रिकॉर्ड रखना चाहिए। अन्य देशों ने इस सलाह का पालन किया और रिकॉर्ड रखा। गोहिल ने दावा किया, ''लेकिन, हमारे देश में ऐसा कोई डेटा एकत्र नहीं किया गया।

प्रदेश भाजपा के चिकित्सक प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. धर्मेंद्र गज्जर ने गोहिल के दावों का खंडन किया। उन्होंने कहा, ''कांग्रेस मिथक फैला रही है। आईसीएमआर ने नवंबर 2023 में एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी और घोषणा की थी कि टीकों से खून का थक्का नहीं जमता है। एस्ट्राजेनेका ने भी कहा है कि खून के थक्के जमने की संभावना 0.004 प्रतिशत है, जो बहुत कम है। हर टीके के अपने दुष्प्रभाव होते हैं लेकिन, हम जोखिम बनाम लाभ अनुपात को भी ध्यान में रखते हैं। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कोरोना वैक्सीन के दुष्प्रभाव को लेकर अध्ययन करवाने की मांग की है। गहलोत ने बुधवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स पर पोस्ट कर कहा, ''कोरोना से ग्रस्त होने के बाद सामने आईं स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर चिकित्सकों ने लगातार जनता को आगाह किया है। अब कोविशील्ड वैक्सीन को लेकर उठे सवालों से जनता के मन में संशय की स्थिति पैदा हो गई है।

शाहदरा फ्लाईओवर पर महिला प्रोफेसर के साथ लूटपाट, विरोध करने पर मारा चाकू

नई दिल्ली। शाहदरा फ्लाईओवर पर लूटपाट का विरोध करने पर महिला प्रोफेसर को चाकू मारे जाने का मामला समाने आया है। घायल महिला का वीडियो भी सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है. जीटीबी एन्क्लेव थाना पुलिस ने महिला की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लूटपाट में शामिल एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के मुताबिक नमिता जैन(47) मानसरोवर मार्केट डीडीए फ्लैट में परिवार के साथ रहती हैं. वह बागपत के एक कॉलेज में प्रोफेसर हैं. 29 अप्रैल को नमिता रात करीब 9 बजे अप्सरा बॉर्डर पर घर जाने के लिए ई रिक्शे में बैठीं. रिक्शे पर कुछ सवारियां पहले से बैठी हुई थीं. रिक्शा जब शाहदरा फ्लाईओवर पर पहुंचा तो उस पर पहले से सवार एक शख्स ने रिक्शा रुकवाया। नमिता को लगा कि शख्स ने उतरने के लिए रिक्शे को रुकवाया है. लेकिन रिक्शे से उतरते ही शख्स ने नमिता को चेन और अंगूठी देने के लिए कहा. नमिता ने मना किया तो बदमाशों ने चाकू निकाल लिया और उनकी बाजू पर हमला कर घायल कर दिया और उनका चेन लूट कर फरार हो गए। नमिता के मुताबिक उनकी चेन आर्टिफिशियल थी. किसी राहगीर ने घटना की सूचना पुलिस को दी. सूचना मिलते ही जीटीबी एनक्लेव थाना पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। घायल महिला को जीटीबी अस्पताल ले जाएगा, जहां इलाज के बाद उन्हें छुट्टी दे दी गई है. पुलिस का कहना है कि पीड़ित महिला की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई है. सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी चांद हसन की पहचान हो गई और उसे सीमापुरी इलाके से गिरफ्तार कर लिया गया।

दिल्ली पुलिस एनकाउंटर में वांटेड उमर गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली के सिग्नेचर ब्रिज के पास यमुना खादर में पुलिस और मर्डर आरोपी के बीच हुए एनकाउंटर में आरोपी के पैर में गोली लग गई. जिसके बाद पुलिस ने उन्हें मौके पर से गिरफ्तार कर लिया. आरोपी की पहचान चौहान बांगर निवासी उमर 24 वर्षीय उम्र के तौर पर हुई. उसके पास से 7.65 एमएम की पिस्टल भी बरामद की गई है. पुलिस के मुताबिक, आरोपी अरबाज के हत्या मामले में फरार चल रहा था, जिसे अब गिरफ्तार कर लिया गया है. इस घटना में उत्तर पूर्वी दिल्ली के डीसीपी डॉक्टर जॉय टिर्की ने बताया कि गुरुवार की सुबह को सीलमपुर पुलिस स्टेशन के स्टाफ ने हेड कांस्टेबल जयबीर, हेड कांस्टेबल नवनेश, हेड कांस्टेबल सुनील और कांस्टेबल मनीष को यमुना खादर इलाके में मर्डर आरोपी उमर के बारे में जानकारी मिली. सूचना मिलते ही पुलिस टीम ने आरोपी को गिरफ्तार करने की योजना बनाई.

इस बीच सुबह करीब 07:15 बजे उमर मोटरसाइकिल से सिगनेचर ब्रिज के पास यमुना खादर पहुंचा. जब पुलिस टीम ने उसे रुकने के लिए कहा तो उसने पुलिस टीम पर गोली चला दी. जिसके जवाब में पुलिस ने एक राउंड फायर किया और उमर के दाहिने पैर में गोली लग गई और उसके बाद उसे मौके पर से गिरफ्तार कर लिया गया. इसके बाद उन्हें जगप्रवेश अस्पताल ले जाया गया और इलाज के बाद छुट्टी दे दी गई. वहीं, इस एनकांउटर में पुलिस टीम से कोई भी घायल नहीं हुआ है. डीसीसपी का कहना है कि अरबाज हत्या मामले में आरोपी उमर फरार चल रहा था, जिसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया. वहीं, उसके एक और साथी की तलाशी अभी जारी है. इस मामले में पांच लोगों को आरोपी बनाया गया था.

कन्हैया कुमार ने दिल्ली की जनता मांगे सुझाव, कहा- घोषणापत्र में सहभागिता की ज़रूरत

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव को लेकर उत्तर पूर्वी दिल्ली से कांग्रेस उम्मीदवार कन्हैया कुमार ने कमर कस ली है। कांग्रेस में अनबन के बीच कन्हैया कुमार ने दिल्ली के जनता से संवाद शुरू कर दिया है। इसके साथ ही उन्होंने घोषणापत्र को लेकर लोगों से सुझाव मांगे हैं। बता दें कि राजधानी दिल्ली में 25 मई को मतदान होना है। नामांकन प्रक्रिया भी तेज हो गई है। कन्हैया कुमार ने बुधवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल से मुलाकात की थी। करीब 30 मिनट चली बातचीत में दोनों के बीच चुनावी रणनीति को लेकर चर्चा हुई। दिल्ली में भाजपा के खिलाफ कांग्रेस और आम आदमी पार्टी इंडिया गठबंधन के तहत साझा चुनाव लड़ रही है। कन्हैया कुमार ने अपने ट्वीट में लिखा है, %मौजूदा सांसद की अनदेखी के कारण ही हमारी उत्तर पूर्वी दिल्ली विकास के पैमानों पर दिल्ली में सबसे पीछे जा चुकी है। हमारा लक्ष्य 2029 तक इसे दिल्ली के विकसित क्षेत्रों के समकक्ष खड़ा करने का है। इस लक्ष्य को पूरा करने में हमें आपकी सहभागिता की ज़रूरत है। सहभागिता - महात्मा गांधी जी के देखे स्वराज के सपने की पहली सीढ़ी है। सहभागिता से ही अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का भी सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सकता है। तो आइए सहभागिता से अपने इस प्यारे छेत्र को संवारें। आप हमें यहाँ की उन समस्याओं के बारे में बताइये जिसके समाधान से इस छेत्र को बेहतर बनाया जा सकता है। आपके अनुसार, आपको ऐसी कौन सी चीज़ों का आभाव अपने क्षेत्र में लगता है ? इसके बारे में हमें बतायें। हम इसके आधार पर ही अपना घोषणापत्र बनायेंगे, जो आपका अपना घोषणापत्र होगा। मैं आने वाले 5 सालों में 'हमारे घोषणापत्र' के सारे कार्यों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हूं। आप सभी से अपील है कि अपनी समस्याओं और सुझाव को वीडियो के माध्यम से दिये गये इस WhatsApp 9811902999 पर शेयर करें।

जेएनयू में सफाई कर्मियों को नौकरी से निकालने पर छात्र संघ ने किया प्रदर्शन

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में बुधवार को 6 सफाई कर्मियों को नौकरी से निकाले जाने के विरोध में एडमिन ब्लॉक पर जेएनयू छात्रसंघ पदाधिकारियों के साथ अन्य छात्रों ने प्रदर्शन किया. यह सफाई कर्मी जेएनयू में अनुबंध पर कार्यरत थे। जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्ष धनंजय ने विरोध प्रदर्शन के दौरान कहा कि इन सफाई कर्मियों की उम्र 55 साल से ज्यादा हो चुकी है. इसको आधार बनाकर उन्हें नौकरी से टर्मिनेट कर दिया गया. पिछले महीने जेएनयू प्रशासन यह नियम लेकर आया कि अब विश्वविद्यालय में कर्मचारियों को 18 साल से लेकर 55 साल की उम्र तक ही नौकरी पर रखा जाएगा. इससे अधिक उम्र होने पर उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा. इस नियम को लाने से पहले मजदूरों को बताया भी नहीं गया। जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्ष ने कहा कि इस देश में बड़े कर्मचारियों के रिटायरमेंट की उम्र सीमा 60 साल से लेकर 65 साल तक है. इसलिए इस तरह का नियम लाकर मजदूरों को नौकरी से निकालना अन्यायपूर्ण है. मजदूर दिवस के दिन एक मई को इन मजदूरों को नौकरी से निकाला जाना दुर्भाग्यपूर्ण है. इसलिए जेएनयू छात्रसंघ जेएनयू प्रशासन से लगातार मजदूरों को वापस नौकरी पर रखने की मांग कर रहे हैं। धनंजय ने कहा कि असंगठित क्षेत्र में वैसे बहुत सारी समस्याएं हैं. सब लोग यह जानते हैं कि संगठित क्षेत्र में नौकरी से रिटायरमेंट की कोई उम्र सीमा तय नहीं है. इसलिए 55 साल की उम्र वाला नियम लाना गलत है. मजदूरों के साथ इस तरह का बर्ताव करके जेएनयू प्रशासन अत्याचार कर रहा है. बता दें, जेएनयू में पहले भी कर्मचारियों को निकाले जाने को लेकर वामपंथी छात्र संगठनों एवं छात्र संघ ने कड़ा विरोध जताया था. इससे पहले जेएनयू प्रशासन द्वारा और अधिक कर्मचारियों को नौकरी से बाहर निकाल गया था।

दिल्लीः उपराज्यपाल ने डीसीडब्ल्यू में नियुक्त 223 कर्मचारियों की बर्खास्तगी की मंजूरी दी

शबाना बेगम, सद्भावना टुडे

नई दिल्ली। दिल्ली के उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने दिल्ली महिला आयोग (डीसीडब्ल्यू) के 223 संविदा कर्मचारियों को बर्खास्त करने संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी दे दी जिसके बाद इस सिलसिले में एक आदेश जारी किया है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास (डब्ल्यूसीडी) विभाग ने डीसीडब्ल्यू को इन संविदा कर्मचारियों को बर्खास्त करने का निर्देश दिया है। उसका कहना है कि उन्हें उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना काम पर रखा गया था।

वहीं दिल्ली महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष और आम आदमी पार्टी (आप) की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल ने इस आदेश की आलोचना की है। सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में मालीवाल ने कहा, उपराज्यपाल साहब ने दिल्ली महिला आयोग के सारे संविदा कर्मियों को हटाने का एक तुगलकी फरमान जारी किया है। आज महिला आयोग में कुल 90 कर्मचारी हैं जिनमें से, सरकार ने केवल आठ लोग ही दिए हैं। बाकी सभी कर्मचारी तीन-तीन महीने

के अनुबंध पर हैं। उन्होंने कहा कि अगर सभी संविदा कर्मियों हटा दिया जाएगा, तो महिला आयोग में ताला लग जाएगा। ऐसा क्यों कर रहे हैं ये लोग ? यह संस्था खून पसीने से बनी है। उसको स्टाफ और सरंक्षण देने की जगह आप जड़ से खत्म कर रहे हैं ? मालीवाल ने कहा ''मेरे जीते जी मैं महिला आयोग को बंद नहीं होने दूंगी। मुझे जेल में डाल दें, महिलाओं पर जुल्म न करें। डब्ल्यूसीडी विभाग द्वारा जारी एक आधिकारिक आदेश के मुताबिक, उपराज्यपाल ने नियुक्तियां खत्म करने संबंधी विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी, जिसके बाद यह आदेश जारी किया गया है। उपराज्यपाल ने विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है कि डीसीडब्ल्यू में उचित प्रक्रियाओं का पालन किए बिना संविदा कर्मचारियों की नियुक्ति को जारी नहीं रखा जा सकता।

लॉ कोर्स 5 साल का या 4 साल का, दिल्ली हाईकोर्ट का दखल देने से इनकार

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने गुरुवार को उस याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया, जिसमें केंद्र को मौजूदा पांच साल के लॉ कोर्स के बजाय चार साल के लॉ कोर्स की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए एक कानूनी शिक्षा आयोग गठित करने के लिए निर्देश देने की मांग की गई थी. कोर्ट ने कहा कि चूंकि यह न्यायपालिका के अधिकार क्षेत्र में नहीं है, इसलिए वह इस मामले में हस्तक्षेप करने को इच्छुक नहीं है.

कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत पीएस अरोड़ा की पीठ ने कहा कि हम पाठ्यक्रम डिजाइन नहीं करते. आप पांच साल के लॉ कोर्स को इस तरह से खत्म नहीं कर सकते. यदि आप उन्हें (अधिकारियों) रिप्रेजेन्टेशन देना चाहते हैं तो आप ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं. जैसे ही पीठ ने संकेत दिया कि वह याचिका खारिज करने जा रही है, याचिकाकर्ता वकील अश्विनी कुमार उपाध्याय ने इसे वापस लेने की स्वतंत्रता मांगी और उनके अनुरोध को अदालत ने स्वीकार कर लिया. याचिका में केंद्र को चिकित्सा शिक्षा आयोग की तरह एक कानूनी शिक्षा आयोग गठित करने का निर्देश देने की मांग की गई थी, जिसमें सेवानिवृत्त न्यायाधीश, कानून के प्रोफेसर और वकील शामिल हों. ताकि चार साल के बी-टेक की तरह चार साल के लॉ ग्रैजुएशन कोर्स की व्यवहार्यता का पता लगाया जा सके. वैकल्पिक रूप से, याचिकाकर्ता ने अदालत से बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ पांच वर्षीय कानून स्नातक पाठ्यक्रम की सुसंगतता की जांच करने के लिए सेवानिवृत्त न्यायाधीशों, न्यायविदों और शिक्षाविदों की एक विशेषज्ञ समिति बनाने का निर्देश देने का आग्रह किया था. याचिकाकर्ता ने कहा कि कानून के छात्रों को समाजशास्त्र, इतिहास और अर्थशास्त्र जैसे विषयों का अध्ययन कराया जा रहा है, जिनकी आवश्यकता नहीं है.

पश्चिमी दिल्ली में लगा कई किलोमीटर लंबा जाम, सड़क पर रेंगते रहे वाहन

शहनवाज़ सैफ, सद्भावना टुडे संवाददाता

नई दिल्ली। तपती गर्मी में उत्तम नगर, जनकपुरी से लेकर राजौरी गार्डन तक बृहस्पतिवार को सुबह ग्यारह बजे से कई किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा। साथ ही पंखा रोड पर भी वाहन रेंग-रेंगकर आगे बढ़ते हुए नजर आए। मिनटों का सफर करने में लोगों को घंटों लगे। साथ ही धूप में खड़े वाहन चालकों का गर्मी और जाम से बुरा हाल रहा। वाहनों का दवाब अधिक होने से लोगों ने सर्विस लेन का सहारा लिया, जबकि कुछ वाहन चालक गलियों के जरिए अपने गंतव्य तक पहुंचे। हालांकि कुछ चौराहों पर पुरुष के अलावा महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी भी तैनात रहीं।

सुबह से ही वाहनों का अधिक दवाब रहा

उत्तम नगर से होते हुए जनकपुरी की ओर जाने वाले रास्ते पर सुबह से ही वाहनों का अधिक दवाब रहा। वाहन चालकों को मिनटों का सफर तय करने में घंटों का समय लगा। तेज धूप के कारण वाहन चालकों के पसीने भी छूटते हुए दिखे। जनकपुरी से तिलक नगर, टैगोर गार्डन और राजौरी गार्डन की तरफ जाने वाला रास्ते पर भी कई किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा, जिसकी वजह से वाहन चालकों को दिक्कत का सामना करना पड़ा।

पंखा रोड पर अवैध कट से आवाजाही शुरू

इन रास्तों पर जाम लगा होने से वाहन चालकों ने सर्विस लेन का प्रयोग किया लेकिन वहां पर अवैध पार्किंग के वाहन खड़े होने से केवल छोटे वाहनों को ही रास्ता मिल पाया, जबकि कार या अन्य वाहन बीच में ही फंस रहे। जाम की वजह से दो पहिया वाहनों ने पंखा रोड पर अवैध कट से आवाजाही शुरू कर दी।

महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी तैनात रहीं

कई वाहन चालक अपने बच्चों को स्कूल लेने के लिए जा रहे थे, उन्हें जाम के कारण घंटों सड़क पर धूप में ही खड़ा रहना पड़ा। वहीं उत्तम नगर के अलावा जनकपुरी के चौराहे पर महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी तैनात रहीं। वहीं ट्रैफिक पुलिस का कहना है कि हर चौराहों पर पुलिसकर्मी तैनात हैं जाम खुलवाया जा रहा है।

बारह बजे बच्चे की स्कूल से छुट्टी होती है उसे लेने के लिए जा रहा हूं लेकिन जाम के कारण पिछले एक घंटे से रास्ते में फंसा हुआ हूं। धूप में गर्मी के कारण बुरा हाल है। आम तौर पर स्कूल से घर जाने में केवल 10 मिनट लगते थे मुझे लेकिन अब एक घंटा हो चुका है। अभी भी स्कूल नहीं पहुंच पाया हूं।

- रमन, वाहन चालक

जाम के कारण उत्तम नगर से जनकपुरी आने में एक घंटा लग गया है। सड़कों पर इतना ट्रैफिक है तो उसके लिए प्लान क्यों नहीं तैयार किया जाता है। जनता धूप में परेशान हो रही है।

- वीरपाल भाटी, वाहन चालक

स्कूलों में बम धमकी का मामला : अभी तक धमकाने वालों तक नहीं पहुंच सकी दिल्ली पुलिस

नई दिल्ली। दिल्ली के 100 से अधिक स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी संबंधी ईमेल भेजने का मकसद बड़े पैमाने पर दहशत पैदा करना और सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ना था। दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ द्वारा दर्ज प्राथमिकी में यह दावा किया गया है। प्राथमिकी तक पहुंच रखने वाले आधिकारिक सूत्र के अनुसार बुधवार को सुबह 5:47 बजे से अपराह्न 2:13 बजे के बीच कई स्कूलों की तरफ से, बम धमकी मिलने के बारे में कम से कम 125 कॉल आईं। सूत्र ने कहा कि कॉल आने के बाद पुलिस नियंत्रण कक्ष (पीसीआर) वाहन स्कूल पहुंचे और जिला पुलिस, बम निरोधक दस्ता (बीडीएस), एमएसी, विशेष प्रकोष्ठ और अपराध नियंत्रण कक्ष, डीडीएमएस, एनडीआरएफ, 'फायर कैट्स व अन्य एजेंसियों को सतर्क किया गया। सूत्र के अनुसार प्राथमिकी में कहा गया है कि स्कूलों की ओर इन इकाइयों की आवाजाही के कारण काफी असुविधा हुई। उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने एक व्यापक अभ्यास के तहत स्कूलों को खाली कराया और पूरे शहर में जांच-पड़ताल की। सूत्र ने कहा कि ये ईमेल स्पष्ट रूप से बड़े पैमाने पर दहशत पैदा करने और सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने के षड्यंत्रकारी इरादे से भेजे गए थे। भारतीय दंड संहिता की धारा 505 (अफवाह फैलाना), 507 (गुमनाम संचार के माध्यम से आपराधिक धमकी) और 120 (बी) (आपराधिक षड़यंत्र के लिए सजा) के तहत विशेष प्रकोष्ठ थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई है। दिल्ली-एनसीआर के लगभग 200 स्कूलों को बुधवार को एक समान धमकी भरा ई-मेल मिला, जिसमें दावा किया गया था कि उनके परिसर में विस्फोटक लगा दिए गए हैं।

एक नजर

आरटीई में दाखिला नहीं देने पर 12 स्कूलों को नोटिस जारी

ग्रेटर नोएडा। बेसिक शिक्षा विभाग ने नोएडा और ग्रेटर नोएडा के 12 निजी स्कूलों को नोटिस जारी किए हैं। सभी स्कूल शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत बच्चों को दाखिला नहीं दे रहे हैं। अभिभावक व बच्चे परेशान हैं और लगातार विभाग के कार्यालय के चक्कर लगा रहे हैं। स्कूलों को तत्काल दाखिल करने और जवाब देने को कहा है। दाखिला नहीं देने पर कार्रवाई की चेतावनी दी है। जिले में आरटीई के तहत गरीब बच्चों के दाखिले की प्रक्रिया चल रही है। आईटीई के तहत निजी स्कूलों में 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित रहती हैं। बेसिक शिक्षा विभाग ने दो चरणों में लॉटरी के माध्यम से स्कूलों का आवंटन कर दिया है। बच्चे आवंटन पत्र लेकर निजी स्कूलों में जा रहे हैं, लेकिन स्कूल मनमानी से बाज नहीं आ रहे हैं। कुछ ना कुछ बहाना बनाकर अभिभावकों को वापस भेज देते हैं। बृहस्पतिवार को प्रभारी बीएसए ने नोएडा और ग्रेनो के 13 निजी स्कूलों को नोटिस जारी कर चेतावनी दी है। इनमें दरबारी लाल फाउंडेशन, संत किशोरी, खेतान पब्लिक स्कूल, एमिटी, राघव ग्लोबल, फॉर्चून वर्ल्ड, स्पर्श ग्लोबल, दिल्ली पब्लिक स्कूल ग्रेनो वेस्ट, नेहरू इंटरनेशनल स्कूल, आर्य कमल, आर्मी पब्लिक स्कूल और जीडी गोयंका शामिल है। प्रभारी बीएसए व डायट प्राचार्य राज सिंह यादव का कहना है कि जिन स्कूलों के खिलाफ शिकायत मिली है, उनको नोटिस जारी किया गया है, अगर अब भी दाखिला नहीं किया तो फिर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर पलटी कार, युवक की मौत

ग्रेटर नोएडा। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर चिपियाना के पास तेज रफ्तार स्विफ्ट कार डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में गाजियाबाद के गांव मकनपुर निवासी आयुष त्यागी (25) की मौत हो गई। हादसे में रोड पर चल रहे अन्य वाहन भी कार से टकरारकर चपेट में आकर क्षतिग्रस्त हुए। घटना के संबंध में पुलिस को कोई शिकायत नहीं दी गई है। थाना बिसरख प्रभारी के मुताबिक बृहस्पतिवार दोपहर करीब 12 बजे आयुष त्यागी अपनी कार से मेरठ से दिल्ली जा रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक गाड़ी की रफ्तार करीब 100 किमी प्रतिघंटे के आसपास थी। चिपियाना में लालकुआं के आगे कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में कार का आगे का हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। कार की चपेट में रास्ते से जा रहे अन्य वाहन भी आ गए। कार का एक टायर खुल कर निकल गया। हादसे के बाद एक्सप्रेसवे पर कुछ देर के लिए यातायात की गति धीमी हो गई। दुर्घटना में घायल आयुष को गाजियाबाद के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। थाना प्रभारी ने बताया कि अभी तक किसी भी तरह की शिकायत नहीं दी गई है।

परिवार के साथ मारपीट कर घर पर पथराव किया

ग्रेटर नोएडा। साकीपुर गांव में अधिवक्ता के परिवार के साथ मारपीट और पथराव करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि पथराव में कई लोगों को चोट आई। इस मामले में पीड़ित पक्ष की शिकायत पर पुलिस ने सात नामजद और कुछ अज्ञात लोगों पर मुकदमा दर्ज किया है। एडवोकेट अंकित शर्मा ने सूरजपुर पुलिस को बताया कि वह पिता के साथ नए घर से पुराने घर की तरफ जा रहे थे। इस बीच शराब के नशे में धुत गांव का रहने वाला बिंदर बिना वजह गाली-गलौज करने लगा। अधिवक्ता ने विरोध जताया तो आरोपी अपने साथियों को साथ लेकर उनके घर पहुंच गया। आरोपियों ने परिवार के लोगों के साथ मारपीट शुरू कर दी। उनके घर पर ईंट-पत्थर फेंके। पथराव में कई लोग घायल हो गए और कुछ सामान भी टूट गया। इसके बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देकर भाग गए। पीड़ित ने मामले की शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की शिकायत पर आरोपी बिंदर, कल्लू, उत्तम, सूरज और शशी समेत सात नामजद और कुछ अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। पीड़ित पक्ष के मुताबिक आरोपी घर के बाहर लगे सीसीटीवी में भी कैद हुए हैं। कोतवाली प्रभारी का कहना है कि पीड़ित पक्ष की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस सीसीटीवी के आधार पर आरोपियों की पहचान कर रही है। सभी आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

महिला को झांसे में लेकर 65 हजार ऐंठे

नोएडा। साइबर अपराधियों ने सेक्टर-135 निवासी महिला को झांसे में लेकर 65,982 रुपये ऐंठ लिए। आरोपियों ने पीड़िता के फोन पर एक लिंक भेज कर ठगी की। महिला ने एक्सप्रेसवे थाने में केस दर्ज कराया है। सेक्टर-135 एलआईजी सोसाइटी निवासी प्रति गोयल के मोबाइल पर कुछ दिन पहले एक कॉल आई। कॉलर ने अपना नाम शेख अजमुदद्दीन बताया। उसने बातों में फंसाकर उनके मोबाइल फोन में पेटीएम का लिंक भेजा। उन्होंने गलती से लिंक पर क्लिक कर दिया। इसी दौरान उनका फोन हैक हो गया और कई बार में उनके खाते से 27 हजार रुपये निकल गए। इसके अलावा उनके खाते से 38,982 रुपये का लोन भी ले लिया गया। पीड़िता ने बताया कि उनके पास लगातार लोन की रिकवरी के लिए धमकी भरे फोन आ रहे हैं। इसकी वजह से वह मानसिक रूप से परेशान हैं। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद सुविधा शिविर शनिवार को

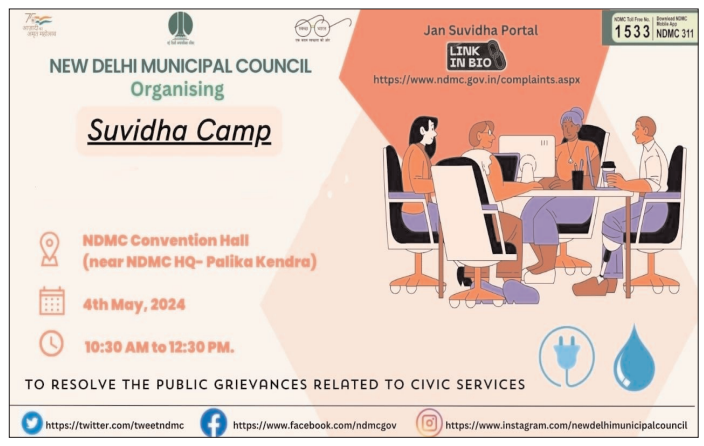

नई दिल्ली,सद्भावना टुडे। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (NDMC) अपने क्षेत्र के निवासियों और सेवा उपयोगकर्ताओं के हित में सूचना, सुविधा और शिकायत निवारण प्रदान करने के लिए अपना अगला सुविधा शिविर शनिवार, 04 मई, 2024 को सुबह 10.30 बजे से 12.30 बजे तक एनडीसीसी कन्वेंशन सेंटर, जय सिंह रोड (पालिका केंद्र के निकट), नई दिल्ली में आयोजित करेगी। इस शिकायत निवारण सुविधा कैम्प में विभिन्न विभागों के हेल्पडेस्क सेवा उपयोगकर्ताओं, कर्मचारियों, आरडब्ल्यूए, एमटीए और एनडीएमसी के निवासियों की शिकायतों का निवारण और सुविधा प्रदान करने के लिए उपलब्ध रहेंगे।

नई दिल्ली नगरपालिका परिषद के विभिन्न विभाग भी इस सुविधा कैंप का हिस्सा होंगे, वे है- सिविल इंजीनियरिंग-1 और 2, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग - 1 और 2, सार्वजनिक स्वास्थ्य, वास्तुकार और पर्यावरण, वाणिज्यिक, स्वास्थ्य लाइसेंसिंग, एस्टेट- I, एस्टेट- II, बागवानी-उत्तर, बागवानी-दक्षिण, संपत्ति कर, शिक्षा, अग्नि, लेखा/वित्त/ पेंशन, प्रवर्तन-उत्तर, प्रवर्तन-दक्षिण, कार्मिक विभाग, कल्याण विभाग, चिकित्सा सेवाएं, पार्किंग प्रबंधन प्रणाली, मुख्य सुरक्षा कार्यालय, ईबीआर विभाग, म्युनिसिपल हाउसिंग, लाइब्रेरी, सतर्कता और आईटी विभाग। इस सुविधा कैम्प में नए बिजली कनेक्शन/डिस्कनेक्शन, लोड वृद्धि/कमी, नाम परिवर्तन/स्थानांतरण, संपत्ति कर, जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र, एनडीएमसी के सेवारत और सेवानिवृत्त कर्मचारियों के सेवा मामलों, जल भराव, स्वच्छता, अपशिष्ट निपटान, सड़क मरम्मत, विधवा पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन, विकलांग पेंशन, बरात घर और पार्कों की बुकिंग और एनडीएमसी द्वारा दी जाने वाली कोई अन्य सेवाओं से संबंधित शिकायतों का समाधान/निवारण किया जाएगा। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद हर महीने के पहले शनिवार को एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर, जय सिंह रोड पर सुविधा शिविर का आयोजन कर रही है। इन सुविधा शिविरों के आयोजन के अलावा, पालिका परिषद ने एनडीएमसी क्षेत्र के निवासियों और सेवा उपयोगकर्ताओं के लिए संपर्क रहित शिकायत निवारण तंत्र के रूप में एक जन सुविधा पोर्टल भी लॉन्च किया है। इस जन सुविधा पोर्टल का लिंक एनडीएमसी की वेबसाइट (https://www.ndmc.gov.in/complaints.aspx) पर उपलब्ध है। जन सुविधा पोर्टल का उपयोग शिकायत दर्ज करने, उस शिकायत की स्थिति पर नज़र रखने और शिकायत निवारण तंत्र पर अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए किया जा सकता है।

नशीला पदार्थ पिलाकर युवती से किया दुष्कर्म, अश्लील वीडियो बना रुपए ऐंठे

पलवल। पलवल में एक युवती को कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया गया। उसकी अश्लील वीडियो बना कर ब्लैकमेल करके रुपए ऐंठे गए। बाद में उसकी वीडियो भी वायरल कर दी गई। युवती को शादी का झांसा देकर फंसाया गया था। सिटी थाना पुलिस ने युवती की शिकायत पर 6 युवकों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अभी तक सभी आरोपी पुलिस की गिरफ्त से बाहर हैं।

सिटी थाना क्षेत्र की रहने वाली एक युवती ने पुलिस को दी शिकायत में कहा है कि वह जब स्कूल में पढ़ती थी तो उसके साथ राहुल नाम का एक युवक पढ़ता था। राहुल उसके साथ छेड़छाड़ करता और विरोध करने पर उससे शादी करने की बात करता था। उसका कहना है कि आरोपी राहुल उसे अपने साथी राकेश की गाड़ी में बैठाकर ले गया और रास्ते में कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ मिलाकर पिला दिया। उसके अचेत होने पर उसके साथ दुष्कर्म किया और फिर उसकी अश्लील वीडियो भी बना ली। इस वीडियो के आधार पर उसे ब्लैकमेल कर कई बार उसके साथ दुष्कर्म किया। आरोप है कि राहुल व उसके साथी करन, राकेश, उमेश, अरुण व निखिल भी उसे ब्लैकमेल कर वीडियो वायरल करने के नाम पर पैसों की मांग करने लगे। लड़की ने बताया कि वह वीडियो वायरल करने से रोकने के लिए राहुल को ढ़ाई लाख व उसके साथियों को 20 हजार रुपए दे चुकी है। इसके बावजूद भी आरोपियों ने उसकी वीडियो को सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। इसका पता चलने पर शिकायत पुलिस से की।

कारोबारी के बेटे के अपहरण में इस्तेमाल कार पर लगा था फर्जी नंबर

शोएब आलम,सद्भावना टुडे

ग्रेटर नोएडा। कारोबारी के 15 वर्षीय बेटे कुणाल का कोई सुराग नहीं लगा है। जिस कार में उसका अपहरण हुआ है, उस पर फर्जी नंबर प्लेट लगी थी। घटना की सीसीटीवी फुटेज भी सामने आई है। एक युवती कुणाल को साथ ले जाती दिखाई दी है। इसके बाद मुंह पर गमछा बांधे हुए दिव्यांग युवक कार में बैठता दिखाई दिया है। पुलिस की टीम अपहरणकर्ताओं की तलाश में जुटी है। मूलरूप से जेवर के म्याना गांव के रहने वाले कृष्ण शर्मा कासना स्थित सीएनजी पंप के समीप शिवा नाम से ढाबा चलाते हैं। कृष्ण शर्मा ने बताया कि दस मई को उनकी बेटी की शादी है।

वह शादी का सामान लेने बुधवार को दिल्ली गए थे। इसके चलते ढाबे पर उनका बेटा कुणाल बैठा था। कृष्ण शर्मा के मुताबिक सीसीटीवी कैमरे से पता चला है कि बुधवार की दोपहर एक युवती ढाबे पर पहुंची। उसने खाने का कुछ आर्डर किया। इसके बाद वह किसी बहाने से कुणाल को अपने साथ बाहर सड़क किनारे खड़ी कार की तरफ ले गई। इस बीच कुणाल का अपहरण कर लिया गया। इसके बाद से कुणाल का कोई पता नहीं चला है। पुलिस की छानबीन में पता चला है कि जिस कार में आरोपी कुणाल को बैठा कर ले गए, उस पर फर्जी नंबर प्लेट लगी थी। कार पर बाइक का नंबर लगा था। पुलिस को कुणाल के मोबाइल की लोकेशन यमुना एक्सप्रेसवे की मिली है। इसके बाद उसका फोन बंद हो गया। कृष्ण शर्मा की शिकायत पर सेक्टर बीटा दो कोतवाली पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर कुणाल की तलाश शुरू कर दी है। परिवार के लोगों का रो-रोकर बुरा हाल है। परिवार ने पुलिस से कुणाल को सकुशल बरामद करने के लिए मदद की गुहार लगाई है। एडीसीपी अशोक कुमार ने बताया कि सीसीटीवी के माध्यम से अपहरणकर्ताओं तक पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। जल्द कुणाल को सकुशल बरामद किया जाएगा। कृष्ण शर्मा ने आशंका जताई है कि किसी ने रंजिशन उनके बेटे का अपहरण करवाया है। दिल्ली के परिवार के यहां उन्होंने अपनी बेटी का रिश्ता तय किया था, लेकिन दहेज की मांग करने पर उस रिश्ते को तोड़ दिया था। उन लोगों ने परिवार को अंजाम भुगतने की धमकी दी थी। कृष्णा शर्मा के परिवार को शक है कि कहीं उन लोगों ने इस घटना को अंजाम तो नहीं दिया।

बाल विवाह को रोकने के लिए चलाया जागरूकता

अशोक कुमार, सद्भावना टुडे संवाददाता

फरीदाबाद। जिला संरक्षण एंव बाल विवाह निषेध अधिकारी हेमा कौशिक की अध्यक्षता में महिला एंव बाल विकास विभाग व आगंनवाडी वर्करों की संयुक्त बैठक का आयोजन गुरुवार को एनआईटी ब्लाक 1 व एनआईटी ब्लाक 2 में किया गया। बैठक में हेमा कौशिक ने बताया कि बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के अन्तर्गत बाल विवाह एक दण्डनीय अपराध है तथा बाल विवाह में प्रतिभाग करने वाले व्यक्तियो पर भी कानूनी कार्यवाही का प्रावधान किया गया है। किसी भी बालिका, जिसने अपनी आयु 18 वर्ष पूर्ण न की हो एंव किसी भी बालक, जिसने अपनी आयु 21 वर्ष पूर्ण न की हो, का विवाह कराया जाना प्रतिबन्धित है। हेमा कौशिक द्वारा मीटिंग में प्रतिभागी सभी को बाल विवाह रोकथाम हेतु आस-पास के आमजन को जागरूक करने बारे निर्देश दिए। फरीदाबाद जिले के महिला एवं बाल विकास विभाग ने बाल विवाह को रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण जागरूकता अभियान का आयोजन किया। इस अभियान के तहत, समाज को बाल विवाह के खिलाफ जागरूक किया जा रहा है और इसके नुकसानों पर ध्यान दिलाया जा रहा है।

बाल विवाह के कई अंधाधुंध सामाजिक, मानसिक और आर्थिक प्रभाव होते हैं, और यह विकास के मार्ग को रोकता है। इस अभियान के माध्यम से, हम सभी लोगों को बाल विवाह के खिलाफ एक साथ आवाज उठाने और समाज में संजीवनी बोते जाने का संदेश देना चाहते हैं। इस अभियान में विभिन्न क्षेत्रों के स्कूलों, कलेजों, गाँवों और शहरों में जागरूकता शिविर, सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित की गईं। साथ ही, सामाजिक संगठनों को भी समाहित किया गया ताकि उन्हें भी इस अभियान में सहयोग करने का मौका मिले। महिला एवं बाल विकास विभाग का उद्देश्य यह है कि हम समाज में बाल विवाह के खिलाफ संजीवनी और संचेतना का वातावरण बनाए रखें, ताकि हम सभी मिलकर इस बुराई का मुकाबला कर सकें।

पलवल: ठेका इंचार्ज और सेल्समैन की पिटाई कर घायल किया, तीन के खिलाफ मुकदमा दर्ज

शहजाद सैफ, सद्भावना टुडे संवाददाता

पलवल। शराब का ठेका बंद होने के बाद शराब लेने पहुंचे कार सवार तीन युवकों ने ठेके के इंचार्ज व सेल्समैन के साथ मारपीट कर तथा दोनों को उठाकर जिला नागरिक अस्पताल में छोड़ दिया। पुलिस ने सेल्समैन की शिकायत पर गेलपुर गांव निवासी कार सवार तीनों के खिलाफ मारपीट कर अपहरण करने सहित विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

मिली जानकारी के अनुसार गेलपुर गांव निवासी विजय सिंह ने पुलिस को गुरूवार को दी शिकायत में कहा कि वह गेलपुर गांव के बस स्टैंड पर स्थित शराब के ठेके पर बतौर इंचार्ज लगा हुआ है। उसके साथ ठेके पर सहराला गांव निवासी अजय सेल्समैन है। उन्होंने बुधवार की रात ठेका बंद कर दिया और ठेके के साथ कमरे में जाकर आराम करने लगे। इसी दौरान रात्रि करीब 11 बजे गेलपुर गांव निवासी सौरव, प्रिंस व गुल्लू कार में सवार होकर आए और शराब मांगी। जिस पर अजय ने कहा कि शराब का ठेका बंद हो गया है। इसके बाद प्रिंस व सौरव उसके साथ बहस करने लगे और वापस चले गए। कुछ देर बाद तीनों गाड़ी में वापस आए और फिर बहस करने लगे। उन्होंने विरोध किया तो तीनों उनके आराम करने वाले कमरे मे घुस आए और अजय के साथ मारपीट शुरू कर दी और उससे कहा कि इसे गाड़ी में डालकर ले जाऐंगे। जिसके बाद उसे व अजय को जबरन गाड़ी में बैठाकर ले गए। उस समय ठेके पर शराब लाने-ले जाने का काम करने वाले टैम्पू का चालक नांगल जाट गांव निवासी चिंटू मौजूद था, उसे भी धमकी दी गई। उन्हें जब आरोपी गाड़ी में ले गए तो चिंटू ने 112 पर पुलिस को फोन कर दिया। इसी दौरान आरोपी उसे और अजय को सरकारी अस्पताल छोडक़र फरार हो गए। जिसके बाद पुलिस व उनके परिजन भी अस्पताल पहुंच गए। चिकित्सकों ने अजय की हालत नाजुक देखते हुए हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया। सदर थाना प्रभारी मनोज कुमार ने गुरूवार को बताया कि पीड़ित की शिकायत पर सौरव, प्रिंस व गुल्लू के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

क्रेडिट कार्ड बनवाने का झांसा देकर 49 हजार ठगे

नोएडा। साइबर अपराधियों ने छपरौली गांव में रहने वाले युवक को क्रेडिट कार्ड बनवाने का झांसा देकर 49,416 रुपये हड़प लिए। जालसाजों ने पीड़ित के फोन में एक ऐप को डाउनलोड करा ठगी की। उन्होंने इसको लेकर एक्सप्रेसवे थाने में केस दर्ज कराया है। पुलिस को दी गई शिकायत में आदित्य कुमार ने बताया कि उनके पास कुछ समय पहले एक निजी बैंक से फोन आया। इस दौरान उनकी बात एक व्यक्ति से हुई। उसने खुद को बैंक का कर्मचारी होने की बात कही। इस दौरान आरोपी ने उनको अच्छे ऑफर में क्रेडिट कार्ड दिलाने की बात कही। उसने क्रेडिट कार्ड बनवाने का फॉर्म भरने के लिए उनके फोन में एक ऐप को डाउनलोड कराया। पीड़ित ने बताया कि उन्होंने जैसे ही ऐप को डाउनलोड किया। जालसाजों ने उनके फोन को हैक करके कई बार में उनके खाते से 49416 रुपये निकाल लिए। बैंक से रुपये कटने का मैसेज आने के बाद उनको ठगी की जानकारी हुई। आदित्य की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जजपा के राष्ट्रीय महासचिव हर्ष कुमार ने पार्टी से इस्तीफा दिया

पलवल। हरियाणा में जननायक जनता पार्टी (जजपा) को बड़ा झटका लगा। गुरुवार को पूर्व मंत्री व जजपा के राष्ट्रीय महासचिव हर्ष कुमार ने अपने समर्थकों के साथ पार्टी छोड़ने का ऐलान किया। साथ ही उन्होंने चुनाव में फरीदाबाद लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार महेंद्र प्रताप का समर्थन करने की घोषणा की। हालांकि वे अभी कांग्रेस पार्टी में शामिल नहीं हो रहे। उनके साथ जजपा के नूंह जिला अध्यक्ष रहे व पार्टी से चुनाव लड़ चुके इकबाल जेलदार ने भी पार्टी छोड़ दी है।

पूर्व मंत्री व जजपा के राष्ट्रीय महासचिव हर्ष कुमार ने गुरुवार को अपने समर्थकों के साथ मीटिंग की। इसमें उन्होंने वर्तमान राजनीतिक हालात पर चर्चा के बाद जजपा को छोड़ने का फैसला लिया। इस बैठक के बाद होडल में पत्रकारों से बातचीत में हर्ष कुमार ने कहा कि जजपा में दिग्विजय चौटाला और पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला की कार्यशैली उन्हें पसंद नहीं है। उनसे हम जैसों का मन मेल नहीं खाता। उन्होंने काफी समय पहले ही जजपा की गतिविधियों से दूरी बना ली थी। हर्ष कुमार ने कहा कि अब जनभावना के अनुरूप फैसला लेकर ही उन्होंने फरीदाबाद लोकसभा सीट से कांग्रेस उम्मीदवार का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के वरिष्ठ व ईमानदार उम्मीदवार महेंद्र प्रताप को टिकट देकर कांग्रेस ने अच्छा फैसला लिया है। हर्ष कुमार ने भाजपा उम्मीदवार के 10 लाख वोटों से चुनाव जीतने के दावे को लेकर कहा कि चुनाव नतीजों के आने से उनका वहम निकल जायेगा। उन्होंने कहा कि हमने महेंद्र प्रताप की कार्यशैली को देखकर उन्हें बिना शर्त समर्थन दिया है। हर्ष कुमार के साथ जजपा के नूंह के जिला अध्यक्ष रहे और पार्टी से चुनाव लड़ चुके इकबाल जेलदार ने भी जजपा के नेताओं पर लोगों के काम न करने का आरोप लगाते हुए पार्टी को अलविदा कह दिया। इस मौके पर फरीदाबाद लोकसभा सीट से कांग्रेस उम्मीदवार महेंद्र प्रताप के पुत्र विवेक प्रताप भी मौजूद रहे।

हत्या आरोपी को पकड़ने गई पुलिस टीम पर फायरिंग की, आरोपी गिरफ्तार

पलवल,एजेंसी। पलवल में हत्या के आरोपी को पकड़ने पहुंची पुलिस टीम पर आरोपी द्वारा फायरिंग करने का मामला गुरूवार को सामने आया है। आरोपी ने फायरिंग करते हुए मौके से भागने का प्रयास किया तो पुलिस ने उसके पैर में गोली मारकर उसे काबू किया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ हत्या के प्रयास सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

उपमंडल हथीन थाना प्रभारी छत्रपाल ने गुरूवार को बताया कि एवीटी स्टाफ इंचार्ज एसआई दीपक गुलिया ने तहरीर में कहा है कि उसे सूचना मिली की मिंडकोला में युवक की हत्या कर तालाब में फेंकने का आरोपी मिंडकोला गांव निवासी आकाश मुंबई एक्सप्रेस-वे पुल के पास से मिंडकोला की तरफ आने पाले रोड़ पर बने एक कोटड़ा में छिपा हुआ है। सूचना पर दीपक गुलिया ने दो टीमों का गठन किया और मौके पर दबिश देकर कोटडा को चारों तरफ से घेर लिया। आरोपी पुलिस को देखते ही कोटडा से बाहर निकाला और पुलिस पर जान से मारने की नियत से सीधा फायर किया, जो पुलिस की गाड़ी की चालक साइड की खिड़की गंड्में लगा और मौके से खेतों के रास्ते अंधेरे का फायदा उठाकर भागने लगा। एसआई ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि आप अपने आप को पुलिस के हवाले कर दो। लेकिन आरोपी पुलिस पार्टी पर फायर करता हुआ भागता रहा। आरोपी हाथ में लिए हथियार से पुलिस पर जान से मारने की नियत से सीधी गोली चलाता हुआ भागता रहा और पुलिस कर्मी नीचे बैठकर अपनी जान बचाते रहे। पुलिस ने अपनी आत्मरक्षा व आरोपी को रोकने के लिए सरकारी पिस्टल से उसके पैरों को निशाना लगाकर फायर किया। पुलिस की एक गोली आरोपी के पैर में लगी तो वह गिर पड़ा। गोली लगने के बाद गिरते ही पुलिस टीम ने आरोपी को काबू कर नाम पता पूछा तो उसने मिंडकोला गांव निवासी आकाश बताया। आरोपी के कब्जे से एक पिस्टल, मैगजीन व दो जिंदा रोंद बरामद किए। हथीन थाना पुलिस ने एवीटी स्टाफ इंचार्ज दीपक गुलिया की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

शराब के नशे में जीजा ने की साले की हत्या, गिरफ्तार

फरीदाबाद। जीजा ने रुपये के लेने देन के विवाद में बुधवार रात को अपने साले को चाकू से गोदकर हत्या दी। लोगों ने आरोपित को पकड़कर पुलिस को सौंप दिया है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है। घटना सीकरी गांव से लगे सहरोला गांव स्थित जेके सफल कंपनी में बुधवार रात को हुई। मृतक की बहन रीना ने बताया कि उसका भाई कुसुम पाल और अजय पाल जेके सफल कंपनी में पिछले 4 वर्षों से कम कर रहे हैं और उसी कंपनी में रहते भी हैं।

उसके पति यानी कुसुम पाल के जीजा जगदीश प्रसाद फिलहाल बेरोजगार थे, जिसे कुसुम पाल ने ही लगभग चार महीने पहले अपने पास की कंपनी में ठेकेदार कृपाल के पास नौकरी के लिए रखवा दिया था। रीना ने बताया कि कुसुम पाल और अजय पाल के ठेकेदार कृपाल से घर जैसे संबंध थे। इसी के चलते ठेकेदार कृपाल भी जगदीश को अपना जीजा ही मानता था। इसी का फायदा उठाकर जगदीश ने ठेकेदार कृपाल से बहाने बनाकर करीब 20 हजार रुपये ले लिए। जगदीश शराब का आदी था। जब कर्ज ज्यादा हो गया तो उसका पति जगदीश 10 दिन पहले कंपनी छोडक़र अपने गांव कोसी स्थित तुमोला चला गया। उसके भाग जाने के बाद कुसुम पाल ने ठेकेदार के लिए रुपयों को देने के लिए अपने जीजा जगदीश पर दबाव बनाया। इसी बात को लेकर जगदीश और कुसुम पाल की फोन पर कहासुनी हुई। वहीं ठेकेदार कृपाल का भाई सतपाल काफी बीमार चल रहा था, जिसे अलफलाह मेडिकल कॉलेज में इलाज के लिए भर्ती कराया गया था। जहां से डॉक्टर ने उसे बीके अस्पताल के लिए बीते कल रेफर किया था लेकिन डॉक्टरों ने उसे फिर वापस अलफलाह अस्पताल में ले जाकर भर्ती करने के लिए रेफर कर दिया। बीमारी की खबर सुनकर जगदीश सतपाल को देखने के बहाने कंपनी में पहुंचा था। रीना के मुताबिक, रात करीब साढ़े ग्यारह बजे जगदीश ने पहले कुसुम पाल को बीती रात शराब पिलाई। फिर उस पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया, जिसमें एक चाकू कुसुम पाल की गर्दन पर लगा। चाकू लगने के बाद कुसुम पाल ने शोर मचाया। इसके बाद वह भी मौके पर आ गई और शोर सुनकर आसपास के अन्य लोग आ गए और जगदीश को पकड़ लिया। आनन फानन में कुसुम पाल को फरीदाबाद के बादशाह खान सिविल अस्पताल में लाया गया, जहां इलाज के दौरान कुसुम पाल की मौत हो गई। वहीं ठेकेदार कृपाल ने बताया कि वह घटना के समय अपने गांव लदीयापुर में थे। घटना की सूचना मिलने के बाद पहले कंपनी पहुंचे। पुलिस को बुलाकर आरोपित जगदीश को पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सत्ताकामी राजनीति में अतृप्त आत्माएं

विश्वनाथ सचदेव

पहले टिकट के लिए और फिर चुनाव जीतने के लिए भटकते उम्मीदवारों की राजनीति के बारे में तो अक्सर सुनते रहे हैं, पर अब देश की राजनीति में भटकती आत्माओं ने भी प्रवेश कर लिया है। यह खोज करने का श्रेय भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को जाता है। पुणे की एक चुनावी सभा में प्रधानमंत्री ने श्रोताओं को बताया कि यह भटकती आत्माएं वे हैं जिनकी इच्छाएं पूरी नहीं होती तो वे दूसरों के काम खराब करने लगती हैं। प्रधानमंत्री ने ऐसी किसी आत्मा का नाम तो नहीं लिया, पर यह समझना किसी के लिए भी मुश्किल नहीं था कि उनका निशाना किस पर है। बिना नाम लिये ही प्रधानमंत्री ने यह स्पष्ट कर दिया था कि पैंतालीस साल पहले महाराष्ट्र में कौन-सी आत्मा ने इस तमाशे की शुरुआत की थी। पैंतालीस साल पहले महाराष्ट्र के तब के युवा नेता शरद पवार ने राज्य की कांग्रेस सरकार में विद्रोह कराया था और वे राज्य में सबसे युवा मुख्यमंत्री बन गये थे। तब से लेकर आज तक शरद पवार कई पार्टियां बना-बिगाड़ चुके हैं। इस दौरान यह बात भी कई बार सामने आई कि पवार स्वयं प्रधानमंत्री बनने का सपना देखते रहे थे। उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पायी, और अब इसकी कोई संभावना भी नहीं दिख रही। प्रधानमंत्री मोदी ने इसी बात पर निशाना साधते हुए हमारी राजनीति की अतृप्त आत्माओं के भटकने वाली बात कही है।

प्रधानमंत्री के निशाने पर भले ही शरद पवार रहे हों, पर हमारी आज की राजनीति की यह एक कड़वी सच्चाई है कि 'अतृप्त आत्माएं' लगातार भटकती फिर रही हैं। जिस तरह से, और जिस गति से आज यह भटकाव दिख रहा है, वह साफ-सुथरी और सकारात्मक राजनीति की अपेक्षा करने वालों के लिए आश्चर्य और पीड़ा का विषय होना चाहिए। दल-बदल हमारी राजनीति का एक स्थाई मुद्दा बन चुका है। सच बात तो यह है कि अब यह एक ऐसी बीमारी बन चुका है जिसका शिकार हर राजनीतिक दल हो रहा है। था कोई ज़माना जब अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए दल बदल करने वाले को घटिया राजनीति का उदाहरण माना जाता था, उसे घटिया नज़र से देखा जाता था। बहुत ज़्यादा उदाहरण नहीं दिखते थे इस बात के। पर अब ऐसी कोई बात नहीं रही। अब न दल बदलने वाले को शर्म आती है और न ही किसी राजनीतिक दल को इस बात की कोई चिंता है कि उस पर घटिया राजनीति करने का आरोप लगता है। हमारी राजनीति की इन भटकती आत्माओं का ताज़ा उदाहरण सूरत और इंदौर में देखने को मिला है। सूरत में कांग्रेस के एक प्रत्याशी पर जान-बूझकर अपना नामांकन पत्र रद्द करवाने का आरोप लगा है और इंदौर में ऐसे ही एक प्रत्याशी ने अपना नामांकन वापस ले लिया है! दोनों ही प्रत्याशी, सुना है, सत्तारूढ़ दल भाजपा का दामन थाम कर अपना राजनीतिक भविष्य सुरक्षित महसूस कर रहे हैं! सच तो यह है कि भटकती आत्माओं को अपने दामन की सुरक्षा का अहसास देने वाले दल को भी अपने कृत्य पर कोई शर्म नहीं आती। हैरानी तो इस बात पर भी होती है कि दस साल तक पूर्ण बहुमत की सरकार चलाने और 'अबकी बार चार सौ पार' का नारा लगाने वाली भारतीय जनता पार्टी को ऐसी अतृप्त आत्माओं की ज़रूरत महसूस हो रही है! स्पष्ट है, हमारी राजनीति आज सत्ताकामी बनकर रह गयी है। सेवा के लिए राजनीति अब सिर्फ एक जुमला है। आये दिन हमारे राजनेता नए-नए जुमले उछाल रहे हैं। राजनीतिक दल लंबे-चौड़े घोषणापत्र जारी कर रहे हैं, नए-नए नाम देकर इन घोषणापत्रों को भरोसेमंद बनाने के दावे कर रहे हैं। हैरानी की बात तो यह भी है कि जहां तक दस साल तक राज करने के बाद भी सत्तारूढ़ दल अपने किये काम की दुहाई देने की बजाय प्रतिपक्षी की कथित कमियों के नाम पर वोट मांग रहा है, वहीं प्रतिपक्ष कोई वैकल्पिक कार्यक्रम नहीं दे रहा। कुल मिलाकर हमारा विपक्ष सत्तारूढ़ दल के आरोपों के उत्तर देने, या फिर स्वयं को बेहतर कहने तक ही सीमित लग रहा है। दोनों ही पक्ष यह तो कहते हैं कि वे जनता के हित की राजनीति में विश्वास करते हैं, पर, दुर्भाग्य से, जनता को यह विश्वास दिलाने में असफल सिद्ध हो रहे हैं कि सत्ता पाने के अलावा भी उनका कोई लक्ष्य है। भटकती आत्माओं जैसे जुमले उछाल कर तालियां तो बटोरी जा सकती हैं, इन आत्माओं की तृप्ति के लिए आश्वासन भी दिये जा सकते हैं, लेकिन जनता के हितों को साधने वाली राजनीति का दुर्भाग्य से, अभाव अब ज़्यादा खलने लगा है। हिंदू-मुस्लिम, मंदिर-मस्जिद, अगड़ी जाति-पिछड़ी जाति जैसे मुद्दों को उछालकर आज जो राजनीति की जा रही है, वह भविष्य के प्रति किसी प्रकार की आशाएं जगाने वाली तो नहीं ही है। सुना है किसी चुनावी सभा में कांग्रेसी नेता ने राजों-महाराजों के अत्याचारों की दुहाई दी थी। पलटवार प्रधानमंत्री की तरफ से हुआ। नहीं, उन्होंने यह नहीं कहा कि राजों-महाराजों की आलोचना क्यों हुई, उनकी शिकायत यह है कि राजों-महाराजों की बात करने वाले ने नवाबों-बादशाहों का नाम क्यों नहीं लिया? हमारी राजनीति का यह गिरता स्तर निराश भी करता है और चिंतित भी। हैरानी की बात है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण जैसे गंभीर मुद्दे हमारी राजनीति में कोई जगह नहीं पा रहे। भटकती आत्माओं का सच भी किसी की चिंता का विषय नहीं है। रोज़गार की बात सिर्फ विपक्ष कर रहा है, और वह भी दबी जुबान से। यह सच्चाई भी किसी को परेशान करती नहीं दिखाई दे रही कि पिछले पांच साल में देश में दो करोड़ से अधिक रोज़गार घटे हैं और 45 करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्होंने निराश होकर काम की उम्मीद ही छोड़ दी है। यह बात भी किसी को परेशान नहीं करती दिखती कि आर्थिक असमानताएं लगातार बढ़ रही हैं। अमीर और अमीर होते जा रहे हैं, गरीब और मार झेल रहे हैं। महिलाओं के सशक्तीकरण की बात तो हो रही है, पर सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमिक (सीएसआईई) का यह निष्कर्ष किसी की चिंता नहीं बनता दिख रहा कि काम न मिलने से देश की महिलाएं अधिक परेशान हैं। किसी भी पार्टी का कोई नेता यह नहीं बता रहा कि 2017 से 2020 के बीच कुल कामगारों की संख्या 46 प्रतिशत से घटकर 40 प्रतिशत क्यों हो गयी है। राजनीति की भटकती आत्माओं वाली बात सुनने में आकर्षक तो लगती है, पर हमारी राजनीति की चालों को देखते हुए यह भी एक चुनावी जुमला है। हमारे राजनेताओं ने जनता को देश का भाग्य-विधाता नहीं माना। यह भूमिका उन्होंने अपने लिए सुरक्षित रख छोड़ी है। जनता को भीड़ समझ लिया है हमारे नेताओं ने। एक ऐसी ही भीड़ जो आसानी से बहलायी-बहकाई जा सकती है। लोकतंत्र की सार्थकता की दृष्टि से यह स्थिति कतई ठीक नहीं है। जहां तक हमारी राजनीति की भटकती आत्माओं का सवाल है हकीकत यह भी है कि किसी भी रंग का राजनेता इसके दुष्प्रभाव से नहीं बचा है। हमारे लोकतंत्र को बदसूरत करने में इन सबका योगदान है। इन सब पर जागरूक जनता को नज़र रखनी होगी। जनतंत्र में चुनाव राजनेताओं की ही नहीं, जनता की भी परीक्षा होती हैं। राजनेता तो हार कर भटकती आत्मा भी बन सकते हैं, पर जनता को तो सिर्फ जीतना ही होता है। जनता जीतेगी, तभी जनतंत्र जियेगा!

सिंगापुर और हांगकांग द्वारा भारत के कुछ बड़े ब्रांड के मसालों को बैन करने के बाद अमेरिकी फूड और ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) भी इस मामले में सक्रिय हो गया है। हैरत नहीं कि बैन का फैसला अमेरिका की तरफ से भी देर-सवेर आ जाए। फिलहाल की स्थिति में एफडीए ने कहा है वह भारतीय कंपनियों को लेकर जारी रिपोर्ट्स को लेकर गंभीर है और वह इस बाबत ज्यादा जानकारी जुटाने में लगा है। वैसे एफडीआई की जांच या किसी निर्णायक जांच या निर्देश से पहले ही अमेरिका में भारतीय मसालों को लेकर सख्ती बढ़ गई है। आलम यह है कि बीते छह महीने में अमेरिका ने भारत की सबसे बड़ी मसाला कंपनी के 31 फीसद मसालों के शिपमेंट को लेने से मना कर दिया है। अमेरिका से भारतीय मसालों के शिपमेंट को लौटाने के पीछे फिलहाल कारण यह बताया जा रहा है कि यह फैसला साल्मोनेला संक्रमण के खतरों को लेकर लिया गया है। अलबत्ता भारतीय मसालों को लेकर अस्वीकार की स्थिति अमेरिका में नई नहीं है। बल्कि देखा जाए तो यह सिंगापुर और हांगकांग के बैन के पहले से चला आ रहा मामला है। अमेरिकी सीमा शुल्क अधिकारियों ने पिछले साल भी भारत से आने वाले 15 फीसद मसालों को लौटाया था। वैसे भारत और अमेरिका से आगे बढ़कर यह मामला अब मालदीव तक पहुंच गया है। मालदीव ने भारतीय मसालों की बिक्री पर रोक लगा दी है। मालदीव की फूड एंड ड्रग अथॉरिटी का कहना है कि भारत के दो मशहूर ब्रांड के मसालों में एथिलीन ऑक्साइड मिला है जिसके कारण इनकी बिक्री पर रोक लगाई गई है। इससे पहले सिंगापुर और हांगकांग ने इन भारतीय ब्रांडों के कुछ उत्पादों में पेस्टिसाइड एथिलीन ऑक्साइड की लिमिट से ज्यादा मात्रा होने के कारण उन्हें प्रतिबंधित किया था। बताया गया कि इनमें पेस्टिसाइड की ज्यादा मात्रा से कैंसर होने का खतरा है। बात अंतर्राष्ट्रीय मानक और चेतावनियों की करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (आईएआरसी) एथिलीन ऑक्साइड को ग्रुप वन के कार्सिनोजेन के रूप में देखती और वर्गीकृत करती है। लिहाजा इस निष्कर्ष से इनकार मुश्किल है यह लोगों में कैंसर का कारण बन सकता है। अंतर्राष्ट्रीय जगत से आई इन खबरों के बाद भारत का सक्रिय होना स्वाभाविक है। यह उसके लिए व्यापार में नुकसान से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय साख का सवाल है। लिहाजा दो देशों के बैन के घोषित फैसले के बाद भारतीय खाद्य सुरक्षा नियामक (एफएसएसएआई) भी इन दोनों कंपनियों के मसालों की जांच कर रहा है। हालिया चर्चा में आए मसालों के दोनों ही ब्रांड देश में भी खासे लोकप्रिय हैं। बात इनकी अंतर्राष्ट्रीय साख और व्यापारिक नेटवर्क की करें तो ये मसाले यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका में खूब प्रचलन में हैं। फूडिंग, कुकिंग और रेसिपी को लेकर प्रभावशाली तरीके से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लिखने-बोलने वालों ने यह बात बीते वर्षों में बार-बार कही है कि भारतीय मसालों ने दुनियाभर के लोगों का स्वाद बदल दिया है। यह बदलाव इतना बड़ा है कि अलग-अलग प्रकार और स्वाद वाले इंडियन करीज और इंटरनेशनल रेसिपीज का हिस्सा हैं। मौजूदा घटनाक्रम का भारत के लिए व्यापारिक महत्व कितना बड़ा है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 2022-23 में भारत ने करीब 32 हजार करोड़ रुपये के मसालों का निर्यात किया। मिर्च, जीरा, हल्दी, करी पाउडर और इलायची भारत से निर्यात होने वाले कुछ प्रमुख मसाले हैं। इस बात से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि सेहत और उससे जुड़ी गुणवत्ता को लेकर सख्ती जरूरी है। इस मुद्दे पर किसी तरह की लापरवाही को हतोत्साहित किया ही जाना चाहिए। आखिरकार यह व्यापार से ज्यादा स्वास्थ्य और मानवता से जुड़ा संवेदनशील मसला है। पर इस मामले को हथियार बनाकर जब किसी एक देश के खिलाफ कार्रवाई हो तो यह भी कहीं से न्यायसंगत नहीं है। माना जाना चाहिए कि जो स्थिति है उसमें भारतीय उद्योग जगत के साथ सरकार भी दूरगामी नीति और विवेक के साथ कार्य करने का सबक लेंगे।

मसालों की गुणवत्ता व व्यापारिक कूटनीति के प्रश्न

प्रेम प्रकाश

समय और संदर्भ मिलकर साझे तौर पर हमारे देशकाल को रचते हैं। इस लिहाज से देखें तो हमारा देशकाल बीसवीं सदी के आखिरी दशक से लेकर अब तक कई ठोस निर्मितियों को लेकर आया है। हम इस पूरे दौर को देखेंगे तो कई बातें जहां साफ होती हैं, वहीं इससे हम अपने समकाल को भी ज्यादा बेहतर समझ पाते हैं। गौरतलब है कि दुनियाभर में बाजार के दरवाजे एक साथ खुलने से जो स्थिति पैदा हुई है, उसमें भारत जैसे बड़ी आबादी और उत्पादक संभावनाओं वाले देश ने बीते दो-तीन दशक में बड़ी छलांग लगाई है। अब इससे आगे की स्थिति पगबाधा दौड़ जैसी है। भारत के लिए यह स्थिति इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उसे खासतौर पर व्यापारिक मोर्चे पर न सिर्फ कठिन अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से गुजरना पड़ रहा है, बल्कि विभिन्न स्तरों पर सक्रिय अंतर्राष्ट्रीय लॉबी भी उसके खिलाफ है। बड़ी बात यह कि खासतौर पर कोविड बाद के दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था की बढ़ी मजबूती ने भारत के खिलाफ अघोषित रूप से अंतर्राष्ट्रीय सांठगांठ को जन्म दिया है। लिहाजा इसे व्यापारिक कूटनीति के रूप में देखना ज्यादा सही होगा। किसी एक देश के खिलाफ इस तरह कूटनीतिक मोर्चा खुलना बिल्कुल नई बात है। इसी पूरे मामले में नई खबर यह है कि भारत में बने कफ सिरप पर रोक से शुरू हुआ मामला अब भारत से निर्यात हुए मसालों तक आ पहुंचा है। सिंगापुर और हांगकांग द्वारा भारत के कुछ बड़े ब्रांड के मसालों को बैन करने के बाद अमेरिकी फूड और ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) भी इस मामले में सक्रिय हो गया है। हैरत नहीं कि बैन का फैसला अमेरिका की तरफ से भी देर-सवेर आ जाए। फिलहाल की स्थिति में एफडीए ने कहा है वह भारतीय कंपनियों को लेकर जारी रिपोर्ट्स को लेकर गंभीर है और वह इस बाबत ज्यादा जानकारी जुटाने में लगा है।

वैसे एफडीआई की जांच या किसी निर्णायक जांच या निर्देश से पहले ही अमेरिका में भारतीय मसालों को लेकर सख्ती बढ़ गई है। आलम यह है कि बीते छह महीने में अमेरिका ने भारत की सबसे बड़ी मसाला कंपनी के 31 फीसद मसालों के शिपमेंट को लेने से मना कर दिया है। अमेरिका से भारतीय मसालों के शिपमेंट को लौटाने के पीछे फिलहाल कारण यह बताया जा रहा है कि यह फैसला साल्मोनेला संक्रमण के खतरों को लेकर लिया गया है। अलबत्ता भारतीय मसालों को लेकर अस्वीकार की स्थिति अमेरिका में नई नहीं है। बल्कि देखा जाए तो यह सिंगापुर और हांगकांग के बैन के पहले से चला आ रहा मामला है। अमेरिकी सीमा शुल्क अधिकारियों ने पिछले साल भी भारत से आने वाले 15 फीसद मसालों को लौटाया था। वैसे भारत और अमेरिका से आगे बढ़कर यह मामला अब मालदीव तक पहुंच गया है। मालदीव ने भारतीय मसालों की बिक्री पर रोक लगा दी है। मालदीव की फूड एंड ड्रग अथॉरिटी का कहना है कि भारत के दो मशहूर ब्रांड के मसालों में एथिलीन ऑक्साइड मिला है जिसके कारण इनकी बिक्री पर रोक लगाई गई है। इससे पहले सिंगापुर और हांगकांग ने इन भारतीय ब्रांडों के कुछ उत्पादों में पेस्टिसाइड एथिलीन ऑक्साइड की लिमिट से ज्यादा मात्रा होने के कारण उन्हें प्रतिबंधित किया था। बताया गया कि इनमें पेस्टिसाइड की ज्यादा मात्रा से कैंसर होने का खतरा है। बात अंतर्राष्ट्रीय मानक और चेतावनियों की करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (आईएआरसी) एथिलीन ऑक्साइड को ग्रुप वन के कार्सिनोजेन के रूप में देखती और वर्गीकृत करती है। लिहाजा इस निष्कर्ष से इनकार मुश्किल है यह लोगों में कैंसर का कारण बन सकता है। अंतर्राष्ट्रीय जगत से आई इन खबरों के बाद भारत का सक्रिय होना स्वाभाविक है। यह उसके लिए व्यापार में नुकसान से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय साख का सवाल है। लिहाजा दो देशों के बैन के घोषित फैसले के बाद भारतीय खाद्य सुरक्षा नियामक (एफएसएसएआई) भी इन दोनों कंपनियों के मसालों की जांच कर रहा है। हालिया चर्चा में आए मसालों के दोनों ही ब्रांड देश में भी खासे लोकप्रिय हैं। बात इनकी अंतर्राष्ट्रीय साख और व्यापारिक नेटवर्क की करें तो ये मसाले यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका में खूब प्रचलन में हैं। फूडिंग, कुकिंग और रेसिपी को लेकर प्रभावशाली तरीके से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लिखने-बोलने वालों ने यह बात बीते वर्षों में बार-बार कही है कि भारतीय मसालों ने दुनियाभर के लोगों का स्वाद बदल दिया है। यह बदलाव इतना बड़ा है कि अलग-अलग प्रकार और स्वाद वाले इंडियन करीज और इंटरनेशनल रेसिपीज का हिस्सा हैं। मौजूदा घटनाक्रम का भारत के लिए व्यापारिक महत्व कितना बड़ा है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 2022-23 में भारत ने करीब 32 हजार करोड़ रुपये के मसालों का निर्यात किया। मिर्च, जीरा, हल्दी, करी पाउडर और इलायची भारत से निर्यात होने वाले कुछ प्रमुख मसाले हैं। इस बात से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि सेहत और उससे जुड़ी गुणवत्ता को लेकर सख्ती जरूरी है। इस मुद्दे पर किसी तरह की लापरवाही को हतोत्साहित किया ही जाना चाहिए। आखिरकार यह व्यापार से ज्यादा स्वास्थ्य और मानवता से जुड़ा संवेदनशील मसला है। पर इस मामले को हथियार बनाकर जब किसी एक देश के खिलाफ कार्रवाई हो तो यह भी कहीं से न्यायसंगत नहीं है। माना जाना चाहिए कि जो स्थिति है उसमें भारतीय उद्योग जगत के साथ सरकार भी दूरगामी नीति और विवेक के साथ कार्य करने का सबक लेंगे।

विचार

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती उत्पादों की मांग

प्रहलाद सबनानी

भारत में आज भी लगभग 60 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है एवं अपने जीवन यापन के लिए मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र पर ही आश्रित रहती है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार किये जा रहे विकास कार्यों के चलते इन क्षेत्रों में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत व्यय की जाने वाली राशि में अतुलनीय वृद्धि दर्ज हुई है। इससे, ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के नए अवसर निर्मित होने लगे हैं एवं ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कुछ कम हुआ है। विशेष रूप से कोरोना महामारी के खंडकाल में शहरों से ग्रामीण इलाकों की ओर शिफ्ट हुए नागरिकों में से अधिकतर नागरिक अब ग्रामीण क्षेत्रों में ही बस गए हैं एवं अपने विशेष कौशल का लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिकों को प्रदान कर रहे हैं। हाल ही में जारी किए गए कुछ सर्वे प्रतिवेदनों के अनुसार, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग की एक नई कहानी लिखी जा रही है क्योंकि अब विभिन्न उत्पादों की मांग ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती दिखाई दे रही है। उपभोक्ता वस्तुओं एवं ऑटो निर्माता कम्पनियों द्वारा प्रदान की गई जानकारी के अनुसार, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में हाल ही के समय में उपभोग की जाने वाली विभिन्न वस्तुओं एवं दोपहिया एवं चार पहिया वाहनों (ट्रैक्टर सहित) की मांग में तेजी दिखाई दे रही है, जो कि वर्ष 2023 में लगातार कम बनी रही थी। यह संभवतः रबी फसल के सफल होने के चलते भी सम्भव हो रहा है। उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने भी हाल ही में सम्पन्न अपनी द्विमासिक मोनेटरी पॉलिसी की बैठक में रेपो दर में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं की है, ताकि बाजार, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के बाजार में, उत्पादों की मांग विपरीत रूप से प्रभावित नहीं हो, ताकि इससे अंततः वित्तीय वर्ष 2024-25 में देश के आर्थिक विकास की दर भी अच्छी बनी रहे। भारत में पिछले कुछ समय से ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न उत्पादों की मांग, शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध मांग की तुलना में कम ही बनी रही है। परंतु, वित्तीय वर्ष 2023-24 की तृतीय तिमाही के बाद से इसमें कुछ परिवर्तन दिखाई दिया है एवं अब ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादों की मांग में तेजी दिखाई देने लगी है। यह तथ्य विकास के कुछ अन्य सूचकांकों से भी उभरकर सामने आ रहा है। जनवरी-फरवरी 2024 माह में दोपहिया वाहनों की बिक्री में, पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान की बिक्री की तुलना में, 30.3 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की गई है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान दोपहिया वाहनों की बिक्री में 9.3 प्रतिशत की वृद्धि दर रही है, जो हाल ही के कुछ वर्षों में अधिकतम वृद्धि दर मानी जा रही है। दोपहिया वाहनों की बिक्री ग्रामीण इलाकों (लगभग 10 प्रतिशत) में शहरी इलाकों (लगभग 7 प्रतिशत) की तुलना में अधिक रही है।

महात्मा गांधी नरेगा योजना के अंतर्गत प्रदान किए जाने वाले रोजगार के अवसरों की मांग में भी फरवरी-मार्च 2024 माह के दौरान 9.8 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है क्योंकि ग्रामीण इलाकों में निवासरत नागरिकों को रोजगार के अवसर अन्य क्षेत्रों में उपलब्ध हो रहे हैं। इसी प्रकार, ट्रैक्टर की बिक्री में भी जनवरी-फरवरी 2024 माह के दौरान 16.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान भारत में कुल 892,313 ट्रैक्टर की बिक्री हुई है जो पिछले वित्तीय वर्ष 2022-23 की तुलना में 7.5 प्रतिशत अधिक है। भारत के मौसम विभाग द्वारा जारी की गई भविष्यवाणी के अनुसार, वर्ष 2024 के मानसून मौसम के दौरान भारत में मानसून की बारिश के सामान्य से अधिक रहने की प्रबल सम्भावना है। इससे भारत के किसानों में हर्ष व्याप्त है क्योंकि मानसून के अच्छे होने से खरीफ की फसल के भी बहुत अच्छे रहने की सम्भावना बढ़ गई है। मौसम विभाग के सोचना है कि इस वर्ष अल नीनो के स्थान पर ला नीना का प्रभाव दिखाई देगा। अल नीनों के प्रभाव में देश में बारिश कम होती है एवं ला नीना के प्रभाव में देश में बारिश अधिक होती है। साथ ही, भारतीय किसान अब तिलहन, दलहन एवं बागवानी की फसलों की ओर भी आकर्षित होने लगे हैं। दालों, वनस्पति, फलों एवं सब्जियों के अधिक उत्पादन से किसानों की आय में वृद्धि दृष्टिगोचर है। केंद्र सरकार द्वारा विभिन्न खाद्य उत्पादों की बिक्री के लिए ई-पोर्टल के बनाए जाने के बाद से तो भारतीय किसान अपनी फसलों को वैश्विक स्तर पर सीधे ही बेच रहे हैं और अपने मुनाफे में वृद्धि दर्ज कर रहे हैं। भारतीय खाद्य पदार्थों की मांग अब वैश्विक स्तर पर भी होने लगी है एवं खाद्य पदार्थों के निर्यात में भी नित नए रिकार्ड बनाए जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादों की मांग सामान्यतः अच्छे मानसून के पश्चात अच्छी फसल एवं विभिन्न सरकारों, केंद्र एवं राज्य सरकारों, द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों पर किए जा रहे खर्चों में बढ़ौतरी के चलते ही सम्भव होती है।

एक नजर

जीजा से शादी रचाने के लिए पत्नी ने करा दी अपने पति की हत्या

पूर्वी चंपारण,एजेंसी। पकड़ीदयाल थाने के सिरसा गांव में दो दिन पूर्व राजेश कुमार उर्फ किरिम कुमार के हत्या कांड का पुलिस ने उद्भेदन कर लिया है।इस हत्याकांड में गिरफ्तार पत्नी प्रियंका कुमारी ने पुलिस के समक्ष राज का खुलासा किया है। 30 अप्रैल को सिरसा बंसवारी में सूखें पते से एक युवक का शव पुलिस ने बरामद किया, जिसकी पहचान सिरसा के कपिल देव प्रसाद के पुत्र राजेश कुमार के रूप में हुई थी। हत्या के बाद पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर पुलिस उपाधीक्षक सुबोध कुमार के नेतृत्व में एसआईटी का गठन किया गया था।जहां तकनीकी अनुसंधान के क्रम में पुलिस ने मुतक के पत्नी को हिरासत में लेकर पूछताछ किया, जहां उसने स्वीकार किया कि उसकी शादी मार्च 24 में राजेश कुमार से हुई , किंतु चार साल पूर्व से ही वह मधुबन में रह रहे अपने जीजा शंभू प्रसाद से प्रेम करती है,जिससे शादी करना चाह रही थी। इस बीच परिवार वाले शादी नही होने दिए और उसकी शादी राजेश से कर दी गई। प्रेम प्रसंग की भनक उसके पति राजेश को लग गयी जिससे वह उससे दूरी बनाते हुए बोल - चाल भी बन्द कर दिया। इसको लेकर वह अपने जीजा व उसके कुछ सहयोगी के साथ मुजफ्फरपुर के कांटी से राजेश को अगवा कर हत्या करने के बाद शव को बांसवारी में छिपा दी। पुलिस घटना में शामिल अन्य लोगो की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी में जुटी है।

रक्सौल में ब्राउन सुगर, स्मैक समेत अन्य मादक पदार्थ के साथ एक गिरफ्तार

पूर्वी चंपारण। जिले के रक्सौल थाना पुलिस ने डीएसपी धीरेंद्र कुमार के निर्देश पर गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर भारी मात्रा में नशीली दवाओं सहित अन्य नशीली पदार्थ बरामद किया है। इसकी जानकारी थानाध्यक्ष राजीव नंदन सिन्हा ने देते हुए बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि रक्सौल नगर परिषद क्षेत्र के इस्लामपुर पुल के पास गुमटी में नशीली दवाओं कि बिक्री भारी मात्रा में हो रही हैं। इसपर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए छापा मार कर एक युवक को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार युवक नगर परिषद क्षेत्र के इस्लामपुर गांव निवासी तौफिक अली है, जिसके पास से लगभग ब्राउन शुगर 5. 210 मिली ग्राम, स्मैक 18.15 मिली ग्राम, कोडिवेल सिरप 9 पीस, ओनरेक्स सीरप 29 पीस, नाइट्रावेट 180 पीस, नाइट्राजेम 149 पीस, पोक्सी मोसपास 76 पीस, तारामोल्ड 76 पीस, ड्राइवपे जेल इंजेक्शन 33 पीस, फेंटराग्राम इंजेक्शन 34 पीस, नोराफिन 34 पीस, खाली टॉबलेट का पत्ता 71 पीस आदि नशीली दवाओं के साथ गिरफ्तार किया गया है, जिसके पास से भारतीय रूपया 3730 रूपया तथा नेपाली 13640 रूपया बरामद किया गया है। पुलिस को पूछताछ में उसने बताया टिंकू मियां का दुकान हैं। जो मुख्य कारोबारी हैं। गिरफ्तार विरुद्ध कांड दर्ज किया गया है।अन्य की तलाश की जा रही है।

मतदान बहिष्कार की सूचना पर सक्रिय हुआ जिला प्रशासन, ग्रामीणों से समस्या को लेकर की बातचीत

अररिया,एजेंसी। सोशल मीडिया के माध्यम से जिले के जोकीहाट प्रखंड के पछियारी पिपरा पंचायत के वार्ड संख्या 05 एवं 06 में अवस्थित मतदान केंद्र संख्या 304 एवं 305 के मतदाता सड़क नहीं बनने के कारण मतदान का बहिष्कार करने का ऐलान कर रखा था,जिसकी जानकारी जिला प्रशासन को मिलने पर जिला निर्वाची पदाधिकारी सह जिलाधिकारी के निर्देश पर अधिकारियों का दल गांव पहुंचा और मतदाताओं से समस्या को लेकर बातचीत की। जिला निर्वाचन पदाधिकारी -सह- जिला पदाधिकारी इनायत खान के निर्देश पर सहायक नोडल पदाधिकारी स्वीप कोषांग को ग्रामीणों से वार्ता कर समस्या हल निकाला गया। इस क्रम ग्रामीणों के साथ सफल बातचीत हुई। ग्रामीणों ने उपस्थित पदाधिकारीयों के समक्ष मतदान का बहिष्कार नही करने का वादा किया और आदर्श अचार संहिता की समाप्ति के उपरांत तुरंत सड़क निर्माण का कार्य कराने का अनुरोध किया। वार्ता के क्रम में नोडल पदाधिकारी स्वीप कोषांग एवं उपस्थित पदाधिकारी द्वारा ग्रामीणों को आदर्श अचार संहिता की समाप्ति के उपरांत तुरंत सड़क निर्माण का कार्य यथाशीघ्र प्रारम्भ करने का आश्वासन दिया गया, जिसके बाद ग्रामीणों ने 07 मई 2024 को बढ़ चढ़कर मतदान में हिस्सा लेने की बात कही।

उत्तर से दक्षिण पूर्व से पश्चिम तक फैला है भ्रष्टाचारियों का कुनबा: जेपी नड्डा

मुजफ्फरपुर,एजेंसी। बिहार में मुजफ्फरपुर जिले के कैरमा मैदान में भाजपा उम्मीदवार के पक्ष में चुनवी सभा को संबोधित करते हुए गुरुवार को भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि हमारे विरोधी वह लोग जिसको अपने परिवार और खुद से लेना देना है। आम आदमी से कोई लेना देना नहीं है। इन लोगों का घोटाला भ्रष्टाचार से लेना देना है। लालू यादव से बड़ा डकैत कोई नही, उत्तर से दक्षिण पूर्व से पश्चिम तक फैला है भ्रष्टाचारियों का कुनबा।

जेपी नड्डा ने कहा कि इंडी गठबंधन भ्रष्टाचारियों को बचाने का जमावड़ा है। यह लोग परिवार चलाने वाले लोग है।देश के उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक भ्रष्टाचारियों का जमावड़ा लगा है। कश्मीर से दक्षिण तक और सभी जगह पर इन लोगो की जमात है। कश्मीर के उमर अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती के साथ चौटाला परिवार मुलायम अखिलेश परिवार लालू यादव परिवार ममता बनर्जी अभिषेक केटीआर केआरसी स्टालिन शरद पवार उद्धव ठाकरे, राहुल गांधी सोनिया गांधी यह सब परिवार वाद के लोग है। जेपी नड्डा ने कहा कि लालू यादव अलकतरा चारा जमीन घोटाला, कविता शराब तो अरविंद केजरीवाल दवाओं और शराब, ममता बनर्जी शिक्षक घोटाला करने वाले लोगों के साथ और निया गांधी,राहुल गांधी, लालू तेजस्वी परिवार बेल पर है। ममता बनर्जी संजय सिंह डीएमके टीएमसी आप के नेता मनीष सिसोदिया सत्येंद्र जैन आजम खां भी जेल में है। जे पी नड्डा ने कहा कि देश में इन दिनों आरक्षण खत्म करने की बात बताई जा रही या कुछ और नहीं बल्कि एक बड़ा षड्यंत्र है ।विरोधी की नजर कुछ और नही है बल्कि अपनी संपति पर है। भीम राव अम्बेडकर के आरक्षण पर सवाल उठाकर पिछड़ा-अति पिछड़ा का आरक्षण को छीन कर अब मजहब के आधार पर देना चाहते। जब तक भाजपा है किसी का आरक्षण खत्म नहीं होगा। यह लोग डाका डालने की साजिश कर रहे हैं। इससे पहले जेपी नड्डा ने अपने संबोधन की शुरुआत में महादेव की नगरी बाबा गरीब नाथ को नमन और भारत माता की जय के नारे से किया । कुढ़नी क्षेत्र के केरमा खेल मैदान में आयोजित कार्यक्रम और जनसभा को संबोधित करने के दौरान भाजपा के उम्मीदवार राजभूषण चौधरी निषाद के पक्ष में वोट देने की अपील की। इस दौरान उनके साथ बिहार सरकार में पूर्व डिप्टी सीएम तारकेश्वर प्रसाद, बिहार सरकार में मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता, भाजपा के बरूराज से विधायक अरुण कुमार, औराई क्षेत्र से भाजपा विधायक रामसूरत राय, पूर्व मंत्री सुरेश शर्मा, जिला अध्यक्ष रंजन कुमार सहित कई भाजपा के नेता मौजूद रहे।

विहिप के मतदाता जागरण समिति मतदान के लिए लोगों को करेंगे जागरूक

पूर्वी चंपारण। विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) व बजरंगदल की बैठक गुरुवार को मोतिहारी शहर के वृक्षा स्थान में जिला उपाध्यक्ष देवेन्द्र कुमार सिंह की अध्यक्षता मे हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि विहिप लोकसभा चुनाव मे मतदाता को जागरूक बनाने को लेकर एक अभियान चलायेगी। ताकि ज्यादा संख्या में समाज के लोग मतदान कर सके।अभियान को लेकर पुरे लोक सभा क्षेत्र को 25 भागो मे बांटकर मतदाता जागरण समिति बनाया गया।प्रत्येक टोली में एक संयोजक बनाया गया है जिसके निर्देशन मे मतदाताओ को मतदान करने के लिए जागरूक किया जाएगा।

मौके पर विहिप के बिहार झारखंड के विधि प्रकोष्ठ प्रमुख अशोक श्रीवास्तव अधिवक्ता ने बताया कि मतदाता जागरूक अभियान चलकार विहिप राष्ट्र वाद के पक्ष मे वोटिंग करने के लिए मतदाताओ से आह्वान करेगा। इन्होने बताया कि भारत मे समान नागरिक संहिता का लागू होना अति आवश्यक है,जिसके लिए देश में राष्ट्रवादी सरकार का बनना जरूरी है।उन्होने बताया कि धारा 370 का समापन राम मंदिर का निर्माण और सीएए जैसे मुद्दो को विहिप काफी दिनो से उठाकर आंदोलन चला रहा था जो पुरा भी हुआ। उन्होंने कहा कि जो हिन्दू संस्कृति की बात करे उस दल को वोटिंग करना चाहिए। स्पष्ट रूप से कहा कि जो हिन्दू हित की बात करेगा वही देश पर राज करेगा। लोकतंत्र की रक्षा के लिए अधिक संख्या मे मतदान होना जरूरी है इन्होने कहा कि युद्ध स्तर पर कार्यकर्ता मतदाता जागरण अभियान चलाएगा। बैठक में विहिप के संजीव कुमार,बजरंग दल के विभाग संयोजक जितेन्द्र कुशवाहा जिला संयोजक हेमंत कुमार,जिला प्रचार प्रसार प्रमुख आनन्द प्रकाश जिला सह संयोजक उद्धेश्य गुप्ता आनन्द सिंह नगर संयोजक राहुल सिंह ब्रजभूषण दूबे जिला सह मंत्री राजन तिवारी शेखर पाण्डेय धर्मेन्द्र ठाकुर आशुतोष कुमार मधूरेन्द्र सिंह विक्रम जायसवाल हरिश्चंद्र उपाध्याय मनीष कुमार अधिवक्ता अंकित श्रीवास्तव अंकुर श्रीवास्तव सचिन कुमार मनोज शुक्ला सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

सहरसा में एम्स निर्माण को लेकर विशेष अनुमति याचिका सर्वोच्च न्यायालय में दाखिल

सहरसा। कोशी प्रक्षेत्र के लाखों लोगों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य के रक्षार्थ कोशी में लाखों रोजगार एवं चहुंमुखी विकास हेतु लगभग 10 वर्षों से सहरसा में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की मांग हेतु आजतक संघर्ष जारी है। सहरसा में एम्स निर्माण मांग हेतु अब विशेष अनुमति याचिका संख्या-810/2024 द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में कोशी विकास संघर्ष मोर्चा अध्यक्ष विनोद कुमार झा एवं प्रधान संरक्षक प्रवीण आनंद द्वारा याचिका दाखिल कर न्यायालय से एम्स-सहरसा का गुहार लगाया गया है।

विद्वान सीनियर अधिवक्ता रतन कुमार सिंह एवं अन्य सीनियर अधिवक्ता के एम्स सहरसा की आवश्यकता पर विधिसंगत न्यायसंगत बहस को सुनने के उपरान्त न्यायालय ने सहरसा की याचिका को प्रस्वीकृत कर आदेश दिया है कि केन्द्र और बिहार सरकार बतावें कि एम्स हेतु उपयुक्त भूमि कहां है, जिसमें बिहार सरकार की ओर से काउन्टर एफिडेविट के साथ जबाब दिया गया कि सहरसा जिलाधिकारी द्वारा 217 एकड़ 74 डिसमिल सही में दिया गया है। जबकि केन्द्र सरकार की ओर से अभी तक वकालतनामा हीं दाखिल किया गया है। अभी तक याचिका का जबाब नही दिया गया है। केन्द्र को छ मई तक जबाब देना है और इसका प्रत्युत्तर फिर आवेदक के विद्वान अधिवक्ता देंगे। एम्स सहरसा हेतु देश की सबसे बड़ी अदालत से शुभ सूचना आने की उम्मीद में विनोद झा एवं प्रवीण आनंद के साथ सम्पूर्ण कोशी वासियों का साथ है। पिछले दिनों कटिहार टॉउन हॉल में विनोद झा एवं प्रवीण आनंद को कोशी के गौरव से सर्वोदय समाज द्वारा सम्मानित किया जाना संघर्षशील साथियों में एक बहुत बड़ा मैसेज गया है। बड़े बड़े राजनीति करने वाले ऐसे महानुभाव अब इनके एम्स की मांग को अपने मेनीफेस्टो में जोड़ने हेतु विज्ञापन निकाल रहे हैं। अगर सर्वोच्च न्यायालय से एम्स सहरसा के पक्ष में अंतिम आदेश आता है तो सचमुच कोशी प्रक्षेत्र के लोगों का कायाकल्प हो जाएगा। साथ ही नि:संदेह स्वच्छ स्वस्थ सुन्दर और विकसित कोशी होने मे विलंब नहीं होगा।

चार माह में 2,222 अभियुक्त गिरफ्तार, भारी मात्रा में अवैध अस्त्र मादक पदार्थ व देशी विदेशी शराब जब्त

सहरसा। लोकसभा आम निर्वाचन को भय मुक्त निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने हेतु सहरसा पुलिस दृढ संकल्पित होकर कार्यरत है। वही पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में 1 जनवरी से 30 अप्रैल तक सहरसा पुलिस की कार्रवाई में विशेष उपलब्धि हासिल की गई है।

पुलिस अधीक्षक हिमांशु के द्वारा गुरुवार को प्रेस वार्ता आयोजित कर मीडिया कर्मियों को इसकी जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि पुलिस के द्वारा विगत चार महीना में कुल 2222 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि दहेज हत्याकांड में 27, डकैती कांड में एक, लूट कांड में 40, एससी एसटी कांड में 20, पुलिस पर हमला कांड में 9,बलात्कार पोक्सो एवं महिला उत्पीड़न कांड में 12 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। शराब पीने वाले एवं व्यवसाय करने के आरोप में 793 अभियुक्त की गिरफ्तारी की गई है। उन्होंने बताया कि पुलिस की दबिश के कारण 117 अभियुक्तों ने न्यायालय में आत्मसमर्पण किया। वही 116 के तहत 8482 लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया कि 110 के तहत 15, सीसीए के तहत 134,सीसीए 12(2) के तहत एक गिरफ्तारी की गई है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि इस अभियान के दौरान 95 अवैध आग्नेयास्त्र, 440 कारतूस बरामद कर एक अवैध मिनी गन फैक्ट्री का उद्भेदन किया गया है।उन्होंने बताया कि वाहन जांच के दौरान 975500 रुपए की राशि समन की गई है। साथ ही 6274ज़700 लीटर देसी शराब, 7871ज़710 लीटर विदेशी शराब, 2023 लीटर कोडिंग युक्त कफ सिरप, 27.4 ग्राम ब्राउन शुगर, 40ज़160 केजी गांजा एवं 676ज़73 ग्राम स्मैक भी बरामद किया गया है।उन्होंने बताया कि इस अभियान की दौरान 2420 वारंट भी निष्पादन किए गए हैं।वहीं 60 कुर्की जब्ती का निष्पादन किया गया।साथ ही लोकसभा चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न करवाने को लेकर 321 लाइसेंस धारी अस्त्र जमा करवाया गया है। वही मद्य निषेध एवं उत्पाद विभाग अधिनियम के अंतर्गत 414 मुकदमे दर्ज किए गए हैं। साथ ही 95 कोरेक्स बरामदगी एवं 319 अवैध शराब बरामदगी हेतु कांड दर्ज किए गए हैं। उन्होंने बताया कि कोरेक्स में 149 अवैध शराब में 653 तथा एनडीआरडी एक्ट अंतर्गत 22 कांड दर्ज किए गए हैं।

जब लालूजी भाजपा से नहीं डरे तो उसका बेटा डर जायेगा: तेजस्वी प्रसाद

अररिया। अररिया के पलासी में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद ने राजद उम्मीदवार शाहनवाज आलम के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए भाजपा पर प्रहार किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि जब लालूजी भाजपा से नहीं डरे तो उसका बेटा डर जायेगा। तेजस्वी ने कहा कि वह मुद्दे की बात करने आए हैं। आज देश का दुश्मन बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी और गरीबी है। जिससे जनता जूझ रही है। लेकिन भाजपा न तो पढ़ाई, न दवाई, न कमाई और न सिंचाई की बात करती हैं। उन्होंने कहा कि 2014 में किए गए अच्छे दिन का वादे भूल गए हैं। 2014 में किए गए वादे 2019 में भूल गए तो 2019 की बात 2024 के चुनाव में भूल गए हैं।

उन्होंने बिहार को विशेष राज्य और पैकेज देने की बात कही थी, जो अब तक नहीं मिला। उन्होंने कहा कि अररिया में मक्का और मखाना की खेती बड़े पैमाने पर होती है। किसानों के लिए फूड प्रोसेसिंग यूनिट नहीं खोला गया। उन्होंने कहा कि 17 महीने के कार्यकाल में उन्होंने लाखों नौकरियां दी। विकास मित्र, टोला सेवक, तालिमी मरकज,और शिक्षामित्र के मानदेय को दुगना करने का काम किया। जाति आधारित जनगणना के साथ-साथ आईटी पॉलिसी, स्पोर्ट्स पॉलिसी और टूरिज्म पॉलिसी डेवलप करने का काम किया। निवेशकों को बुलाकर बिहार में निवेश करवा रहे थे। और जब हम लोग यह काम कर रहे थे और नौकरी दे रहे थे तो भाजपा वालों ने चाचाजी को हाईजैक कर लिया। लेकिन वह उनका इज्जत करते हैं। चाचाजी बुजुर्ग और अभिभावक हैं। तेजस्वी प्रसाद ने कहा कि भाजपा में चले जाओ तो राजा हरिश्चंद्र और भाजपा से लड़ो तो बेईमान और चोर। उन्होंने बेंगलुरु में एनडीए के सांसद द्वारा 3 हजार लड़कियों के शोषण का मामला उठाते हुए कहा कि 26 अप्रैल को हुए चुनाव के बाद उन्हें विदेश भेज दिया गया।

नेशन फर्स्ट वोटिंग मस्ट: विधार्थी परिषद

समस्तीपुर,एजेंसी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद समस्तीपुर विभाग की विभागीय बैठक ताजपुर रोड स्थित होटल राजश्री में विभाग संयोजक अनुपम कुमार झा की अध्यक्षता में गुरुवार को हुई। बैठक में मुख्य रूप से मतदाता जागरूकता अभियान को लेकर चर्चा की गई। बैठक में कार्यकर्ताओं को बिहार झारखंड के क्षेत्रीय संगठन मंत्री निखिल रंजन का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। बैठक को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय संगठन मंत्री निखिल रंजन जी ने कहा कि हमें मतदान के माध्यम से पुन: सुरक्षित हाथों में शासन सपना है। आज देश में राष्ट्रवाद के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर में भी बहुत बड़ा सुधार आया है।

उन्होंने बताया कि हमें मतदान के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभानी है। उन्होंने परिषद के कार्यक्रम नेशन फर्स्ट वोटिंग मस्ट के माध्यम से उपस्थित कार्यकर्ताओं को नगर गांव मोहल्ला और प्रखंड तक मतदाता जागरूकता अभियान के माध्यम से सभी युवा महिला तथा बुजुर्गों मतदाताओं को बूथ तक पहुंच कर मतदान करने का आहान करते हुए उन्होंने कहा कि देश के विकास के लिए बेहतर सरकार बनाने में अपनी सहभागिता दर्ज करने के लिए बढ़-कर कर मतदान करने की आवश्यकता है। आप स्वयं मतदान करें साथ ही साथ लोगों को भी मतदान करने के प्रति

जागरूक करें। मतदान हम सभी का नागरिक कर्तव्य भी है जिसका हमें निर्वहन करना चाहिए। बैठक को प्रांत उपाध्यक्ष डॉ स्मिता झा, प्रांत सह मंत्री उत्सव पराशर, विभाग प्रमुख डॉ नितिका सिंह, विभाग संयोजक अनुपम कुमार झा, जिला प्रमुख डॉक्टर राहुल मनहर, कोमल कुमारी आदि ने भी संबोधित किया मौके पर जिला संयोजक कुंदन यादव आदि सैंकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

एक नजर

चीन में एक्सप्रेस-वे हादसे में मृतकों की संख्या 48 हुई

गुआंगहोउ,एजेंसी। दक्षिण चीन के गुआंग्डोंग प्रांत में एक्सप्रेस-वे का एक हिस्सा टूट जाने की घटना में मरने वालों की संख्या बढ़कर 48 हो गयी है। अधिकारियों ने मेइझोउ शहर में एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। मलबे से निकाले गये अन्य तीन लोगों के डीएनए की पहचान अभी की जानी है। मीझोउ शहर के अधिकारियों के अनुसार, 30 घायल लोगों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। सभी घायलों की हालत स्थिर बतायी जा रही है। यह हादसा मेइझोउ में मेइझोउ-डाबू एक्सप्रेस-वे पर कल देर रात करीब 2:10 बजे हुआ। अधिकारियों ने बताया कि एक्सप्रेस-वे का 17.9 मीटर लंबा हिस्सा टूट गया। घटनास्थल पर बचाव और खोज अभियान अभी जारी है।

ब्राजील में तूफान से मरने वालों की संख्या बढ़कर दस हुई

साओ पाउलो। दक्षिणी ब्राजील में तूफान से मरने वालों की संख्या बुधवार को बढ़कर 10 हो गई, जबकि 21 अन्य अभी भी लापता हैं। नागरिक सुरक्षा एजेंसी ने यह जानकारी दी है। गवर्नर एडुआर्डो लेइट ने घोषणा की कि बाढ़ और भूस्खलन के कारण रियो ग्रांडे डो सुल राज्य को गुरुवार के लिए कक्षाएं निलंबित करनी पड़ीं। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो लूला डी सिल्वा क्षति का आकलन करने और संघीय धन प्रदान करने के लिए राज्य का दौरा करने वाले हैं। उन्होंने स्थिति को गंभीर बताते हुए कहा कि जलमग्न घरों में फंसे लोगों को बचाने के लिए मदद की जरूरत है। मौसम विज्ञान सेवा ने शनिवार तक बारिश होने का अनुमान व्यक्त किया है। श्री लेइट ने कहा, हर चीज से संकेत मिलता है कि यह हमारे राज्य में अब तक की सबसे खराब जलवायु आपदा होगी। उन्होंने कहा कि लगभग 4,400 निवासियों को निकाला गया है, 107 शहरों में आपातकाल की स्थिति घोषित कर दी गई है। प्रमुख शहरों में से एक, सांता मारिया में बुधवार को भूस्खलन हुआ जिससे एक नदी के तट टूट गए और पुल एवं सड़क बह गयी।

यूएई में फिर हुई मूसलाधार बारिश, कई उड़ानें रद्द...मौसम विभाग ने जारी किया अलर्ट

दुबई,एजेंसी। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में बृहस्पतिवार को भारी बारिश और आंधी के कारण कई अंतरराष्ट्रीय उड़ानें रद्द कर दी गईं। इससे दो सप्ताह पहले दुबई में आए अभूतपूर्व तूफान के चलते कई दिन तक जन-जीवन अस्त व्यस्त रहा था। बुधवार को देश के राष्ट्रीय आपात संकट एवं आपदा मोचन प्राधिकरण (एनसीईएमए) ने हालात से निपटने के लिए तैयारियां तेज कर दीं। हालांकि बारिश के पिछले महीने हुई अभूतपूर्व बारिश की तुलना में कम गंभीर रहने का अनुमान है, लेकिन फिर भी लोगों से ऐहतियात बरतने का आग्रह किया गया है। इससे पहले 14-15 अप्रैल को भीषण बारिश के चलते अरब प्रायदीप के क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुए थे। इस दौरान दुबई में 1949 के बाद से सबसे अधिक बारिश हुई थी। दुबई की 'एमिरेट्स एयरलाइन' ने संयुक्त अरब अमीरात में खराब मौसम के कारण बृहस्पतिवार को कई उड़ानें रद्द करने की घोषणा की। दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (डीएक्सबी) पर आवाजाही कम हो गई है। एमिरेट्स ने एक बयान में कहा, दो मई को दुबई हवाई अड्डे पर यात्रियों को कुछ प्रतीक्षा करनी पड़ सकती है क्योंकि उड़ानें पुनर्निधारित की गई हैं। देश के मौसम विभाग ने एक एम्बर अलर्ट जारी किया। राष्ट्रीय मौसम विज्ञान केंद्र के मौसम विशेषज्ञ ने कहा, आने वाले दिनों में अलग-अलग इलाकों में मध्यम से भारी बारिश होगी, कभी-कभी बिजली और गरज के साथ बारिश होगी, साथ ही ओले गिरने की भी संभावना है।

सोलोमन द्वीप के सांसदों ने पूर्व विदेश मंत्री जेरेमिया मनाले को नया प्रधानमंत्री चुना

मेलबर्न। सोलोमन द्वीप के सांसदों ने पूर्व विदेश मंत्री जेरेमिया मनाले को देश का नया प्रधानमंत्री चुना है। सोलोमन द्वीप की हालिया वर्षों में चीन के साथ निकटता बढ़ी है। चीन समर्थक पूर्व प्रधानमंत्री मानासेह सोगावारे ने सरकार का प्रमुख बने रहने के मुकाबले से अपना नाम वापस ले लिया था जिसके बाद मनाले के प्रधानमंत्री बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ। मनाले का चयन इस बात का संकेत है कि देश की चीन समर्थक विदेश नीति में खास बदलाव नहीं आएगा। प्रधानमंत्री को 17 अप्रैल को हुए आम चुनाव में जीत हासिल करने वाले 49 सांसदों ने गुप्त मतदान के जरिए चुना। गवर्नर जनरल डेविड वुनागी ने बताया कि मनाले को 31 वोट मिले।

अमेरिका में स्कूल के पास हथियारबंद व्यक्ति की मौजूदगी की सूचना के बाद पुलिस ने छात्र को गोली मारी

माउंट होरेब (अमेरिका)। अमेरिका में बुधवार को एक स्कूल के पास हथियारबंद व्यक्ति की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने एक छात्र को गोली मार दी जिससे उसकी मौत हो गई। यह घटना विस्कॉन्सिन मिड्ल स्कूल के बाहर हुई। राज्य के अटॉर्नी जनरल ने बताया कि इसके बाद स्थानीय स्कूलों को एक घंटे के लिए बंद कर दिया गया। इससे पहले, अधिकारियों ने कहा था कि एक हथियारबंद व्यक्ति को परिसर के अंदर प्रवेश करने से पहले ही माउंट होरेब मिड्ल स्कूल के बाहर मार गिराया गया।

राज्य के अटार्नी जनरल जोश कौल ने संवाददाताओं को बताया कि बुधवार शाम को हुई इस घटना में किसी अन्य को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है और जांच जारी है। उन्होंने कहा कि घटना स्कूल के बाहर हुई। अधिकारियों ने बताया कि छात्र नाबालिग था लेकिन उन्होंने उसकी उम्र नहीं बताई। अधिकारी यह भी नहीं बता सके कि उसने माउंट होरेब जिले के किस स्कूल में पढ़ाई की थी। कौल ने पुलिस के कई सवालों का जवाब देने से इनकार कर दिया। एक सवाल यह भी था कि क्या छात्र ने कोई गोलीबारी की थी। उन्होंने यह भी नहीं बताया कि उसके पास किस प्रकार का हथियार था और क्या उसने स्कूल के अंदर जाने की कोशिश की थी। पुलिस घटनास्थल पर देर तक रही और इस दौरान छात्रों को स्कूल के अंदर ही रखा गया। बाद में, अभिभावकों के आने पर छात्रों को घर जाने दिया गया। इस घटना के बाद बच्चे और उनके माता-पिता घबराए हुए थे। अभिभावकों ने बताया कि बच्चे कक्षाओं में छिपे रहे और फोन पर बातचीत करने से डर रहे थे। अधिकारियों ने दिनभर फेसबुक पोस्ट से अपडेट जानकारी दी। सबसे पहले सुबह 11:30 बजे के आसपास बताया गया कि सभी स्कूलों को बंद कर दिया गया है। अधिकारियों ने बताया कि गोलीबारी में कथित हमलावर को ही नुकसान हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी और दर्जनों बच्चे भागते हुए दिखाई दिए। दोपहर में किए गए एक पोस्ट में बताया गया कि मिड्ल स्कूल में शुरुआती जांच के बाद किसी अन्य पर संदेह नहीं है। पोस्ट में कहा गया है, हमारे पास ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं है जिसमें हमलावर के अलावा किसी अन्य को नुकसान होने का पता चलता हो। इससे पहले अधिकारियों ने फेसबुक पोस्ट किया था कि राज्य की राजधानी मैडिसन से लगभग 40 किलोमीटर दूर एक गांव माउंट होरेब में स्कूल भवन के बाहर खतरे को विफल कर दिया गया है। प्रत्यक्षदर्शी जीन केलर ने कहा कि मिड्ल स्कूल से कुछ ही दूरी पर स्थित अपनी दुकान में उन्होंने पांच गोलियों की आवाजें सुनीं। केलर ने एसोसिएटेड प्रेस को फोन पर बताया, मैंने सोचा कि यह आतिशबाजी थी। मैं बाहर गया और सभी बच्चों को भागते देखा॰मैंने शायद 200 बच्चों को देखा। स्कूल के एक छात्र ने कहा कि जब उन्होंने गोलियों की आवाजें सुनीं तब उसकी कक्षा के छात्र स्कूल के जिम में स्केटिंग का अभ्यास कर रहे थे। कौल ने बताया कि चिंतित अभिभावक घंटों तक बस डिपो पर अपने बच्चों का इंतजार करते रहे। उन्होंने कहा कि कानून लागू करने वाली एजेंसी खतरे को लेकर लगातार चिंतित थी।

उम्मीद है कि संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता के लिए फलस्तीन के आवेदन पर पुनर्विचार किया जाएगा: भारत

संयुक्त राष्ट्र,एजेंसी। भारत ने उम्मीद जताई है कि संयुक्त राष्ट्र का पूर्ण सदस्य बनाए जाने के फलस्तीन के जिस आवेदन के खिलाफ अमेरिका ने पिछले महीने वीटो का इस्तेमाल किया था, उस पर पुनर्विचार किया जाएगा और वैश्विक संगठन का सदस्य बनने की उसकी कोशिश को समर्थन मिलेगा। संयुक्त राष्ट्र की पूर्ण सदस्यता हासिल करने के फलस्तीन के प्रयासों के संबंध में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव के खिलाफ अमेरिका ने पिछले महीने वीटो का इस्तेमाल किया था। परिषद ने मसौदा प्रस्ताव पर मतदान किया था जिसके पक्ष में 12 वोट पड़े थे, स्विट्जरलैंड और ब्रिटेन मतदान से दूर रहे थे और अमेरिका ने वीटो का इस्तेमाल किया था। मसौदा प्रस्ताव तभी पारित होता है यदि उसे परिषद के 15 में से कम से कम नौ सदस्यों का समर्थन मिले और उसके स्थायी सदस्यों-चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमेरिका में से कोई भी वीटो का इस्तेमाल नहीं करे। संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने यहां कहा, ''हम जानते हैं कि संयुक्त राष्ट्र में सदस्यता के लिए फलस्तीन के आवेदन को वीटो के कारण सुरक्षा परिषद ने अनुमोदित नहीं किया लेकिन मैं भारत की दीर्घकालिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए शुरुआत में ही यह बताना चाहती हूं कि हम आशा करते हैं कि उचित समय पर इस पर पुनर्विचार किया जाएगा और संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बनने के फलस्तीन के प्रयास का समर्थन किया जाएगा। भारत 1974 में फलस्तीन मुक्ति संगठन को फलस्तीनी लोगों के एकमात्र और वैध प्रतिनिधि के रूप में मान्यता देने वाला पहला गैर-अरब देश बना था। भारत 1988 में फलस्तीन देश को मान्यता देने वाले शुरुआती देशों में से एक था और 1996 में दिल्ली ने गाजा में फलस्तीन प्राधिकरण के लिए अपना प्रतिनिधि कार्यालय खोला, जिसे बाद में 2003 में रामल्ला में स्थानांतरित कर दिया गया। इस समय फलस्तीन संयुक्त राष्ट्र में एक ''गैर-सदस्य पर्यवेक्षक देश'' है जिसे 2012 में महासभा ने यह दर्जा दिया था।

कंबोज ने बुधवार को महासभा की बैठक को संबोधित करते हुए रेखांकित किया कि भारतीय नेतृत्व ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि इजराइल और फलस्तीन के बीच सीधी और सार्थक बातचीत के माध्यम से प्राप्त द्विराष्ट्र समाधान ही स्थायी शांति को संभव बनाएगा। उन्होंने कहा, ''भारत ऐसे द्विराष्ट्र समाधान का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है, जहां फलस्तीनी लोग इजराइल की सुरक्षा जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सुरक्षित सीमाओं के भीतर एक स्वतंत्र देश में स्वतंत्र रूप से रह सकें। कंबोज ने इस बात पर जोर दिया कि स्थायी समाधान पर पहुंचने के लिए भारत सभी पक्षों से शीघ्र ही प्रत्यक्ष शांति वार्ता फिर से शुरू करने के लिए अनुकूल परिस्थितियों को बढ़ावा देने का आग्रह करेगा।

फलस्तीन समर्थक शिविर पर हमले को रोकने के लिए कार्रवाई नहीं करने पर यूसीएलए की आलोचना

लॉस एंजिलिस। अमेरिका के लॉस एंजिलिस स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (यूसीएलए) के परिसर में फलस्तीनी समर्थकों के शिविर पर प्रदर्शनकारियों के हमले को रोकने के लिए त्वरित कार्रवाई नहीं कर पाने पर प्रशासन और परिसर में तैनात पुलिस को कड़ी आलोचना झेलनी पड़ रही है। यूसीएलए में मंगलवार और बुधवार की दरमियानी रात को फलस्तीन समर्थक और इजराइल समर्थक प्रतिद्वंद्वी समूहों में झड़प हो गई थी जिसे रोकने के लिए कानून प्रवर्तन एजेंसियों को बुलाया गया। इस दौरान किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया और झड़प में कम से कम 15 प्रदर्शनकारी घायल हो गए। अमेरिका के कुछ कॉलेज के परिसरों में इजराइल-हमास युद्ध को लेकर हिंसा की घटनाओं में हाल में तेजी आई है। 'मुस्लिम पब्लिक अफेयर्स काउंसिल' की 'चीफ ऑफ स्टाफ' रेबेका हुसैनी ने बुधवार को लॉस एंजिलिस स्थित परिसर में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''समुदाय को यह लगना चाहिए कि पुलिस उनकी रक्षा कर रही है, ना कि दूसरों को उन्हें नुकसान पहुंचाने में सक्षम बना रही है। यूसीएलए में जहां पुलिस के अधिक हस्तक्षेप की मांग की जा रही है, वहीं इसके विपरीत, अमेरिका के अन्य परिसरों में अधिकारियों की कार्रवाई की निंदा की जा रही है। मैडिसन स्थित विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में बुधवार तड़के पुलिस अधिकारियों ने प्रदर्शनकारियों के तंबू नष्ट हटा दिए, जिसके बाद प्रदर्शनकारी पुलिस से भिड़ गए।

प्रधानमंत्री के भाई के खिलाफ मानहानि मामले में अदालत में पेश हुए भारतीय मूल के दो मंत्री

सिंगापुर। सिंगापुर के भारतीय मूल के दो मंत्री, प्रधानमंत्री ली सीन लूंग के छोटे भाई ली सीन यांग के खिलाफ एक मानहानि मामले में सुनवाई के लिए बृहस्पतिवार को उच्च न्यायालय में पेश हुए। यांग ने दोनों मंत्रियों के दो अलग-अलग सरकारी बंगलों को किराये पर दिए जाने के संबंध में टिप्पणी की थी। प्रधानमंत्री और उनके छोटे भाई के बीच पारिवारिक संपत्ति से जुड़े मामले को लेकर संबंधों में तनाव है। विधि और गृह मंत्री के. शणमुघम और विदेश मंत्री विवियान बालकृष्णन ने रिडआउट रोड पर अपने दो बंगलों को किराये पर देने के बारे में पिछले साल की गई टिप्पणी पर ली सीन यांग पर मानहानि का मुकदमा दर्ज कराया था।

यांग द्वारा दोनों वरिष्ठ कैबिनेट मंत्रियों को बदनाम करने के लिए जमा किया जाने वाला जुर्माना तय करने के लिए अदालत में सुनवाई शुरू हुई और दोनों वादियों ने अदालत पर राशि तय करने का निर्णय छोड़ा। चैनल न्यूज एशिया के अनुसार, दोनों मंत्री अदालत में उपस्थित थे और वकील देविंदर सिंह ने उनकी ओर से पैरवी की, वहीं यांग अदालत में उपस्थित नहीं थे और ना ही किसी ने उनकी पैरवी की। सिंह ने अदालत को बताया कि उनकी टीम ने सुनवाई की तारीख, समय और स्थान बताने के लिए कई बार यांग से संपर्क किया था, और उनके किसी भी वकील ने अभी तक उनसे प्राप्त निर्देशों की जानकारी नहीं दी है। ली यांग इससे पहले एक अन्य मामले में 2022 में अपनी पत्नी ली सुएत फर्न के साथ देश छोड़कर चले गए थे। उन्होंने फेसबुक पोस्ट में लिखा था कि दोनों मंत्रियों ने सरकारी बंगलों को किराये पर दे दिया है।

फलस्तीन समर्थन में कोलंबिया विश्वविद्यालय और सिटी कॉलेज में विरोध प्रदर्शन करने पर 300 लोग गिरफ्तार

लॉस एंजिलिस। कोलंबिया विश्वविद्यालय और सिटी कॉलेज में फलस्तीन समर्थकों के प्रदर्शन करने पर पुलिस कार्रवाई में लगभग 300 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। न्यूयॉर्क शहर के मेयर एरिक एडम्स ने यह जानकारी दी।

लॉस एंजिलिस स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (यूसीएलए) में बुधवार को फलस्तीन समर्थक और इजराइल समर्थक समूहों के बीच झड़प हो गई। फलस्तीन समर्थक और इजरायल समर्थक प्रदर्शनकारियों के बीच रात भर यूसीएलए परिसर में हिंसक झड़प हुई और स्थिति को नियंत्रित करने के लिए दंगा रोधी साजो-सामान के साथ पुलिस पहुंची। लोगों ने एक दूसरे पर कुर्सियां फेंकी। लाठियों से लैस कुछ लोग दूसरों को पीटते नजर आए। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि कितने लोग घायल हुए हैं।

पुलिस ने पिछले दो हफ्तों में पूरे अमेरिका में अन्य परिसरों में फलस्तीन-इजराइल संघर्ष को लेकर किए जा रहे प्रदर्शनों पर भी कार्रवाई की है और करीब 1,000 से अधिक प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया है। लॉस एंजिल्स के मेयर करेन बैस ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में हिंसा को ''घृणित और अक्षम्य'' बताया। कोलंबिया से कुछ ही दूरी पर, न्यूयॉर्क के सिटी कॉलेज में, प्रदर्शनकारियों की कॉलेज के मुख्य द्वार के बाहर पुलिस के साथ झड़प हुई।

इस बीच, फ्लैगस्टाफ स्थित नार्थ एरिजोना यूनिवर्सिटी में दंगारोधी पुलिस ने मंगलवार देर रात प्रदर्शन स्थल को खाली करा लिया और प्रदर्शन कर रहे 20 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। विश्वविद्यालय प्रशासन ने इससे पहले प्रदर्शनकारियों को स्थान खाली करने या कार्रवाई की चेतावनी दी थी।

अमेरिका: गर्भावस्था संबंधी मृत्यु दर महामारी के शुरुआती स्तर तक पहुंची

न्यूयार्क,एजेंसी। अमेरिका में गर्भावस्था संबंधी मृत्यु दर महामारी के शुरुआती स्तर तक पहुंच गई है। नये सरकारी आंकड़ों ने यह जानकारी दी है। सीडीसी आंकड़ों के अनुसार, पिछले वर्ष प्रसव या गर्भावस्था के दौरान करीब 680 महिलाओं की जान गई। यह आंकड़े 2022 में 817 मौत और 2021 में 1,205 मौत के मुकाबले कम है जब यह पिछले 50 वर्षों की तुलना में अपने उच्चतम स्तर पर था। रोग नियंत्रण और मातृ मृत्यु रोकथाम केन्द्र की शोधार्थी डोना होयर्ट ने बताया कि कोविड-19 को बढ़ती मातृ मृत्यु दर का मुख्य स्पष्टीकरण चिन्हित किया।

कोरोना वायरस गर्भवती महिलाओं के लिए विशेष रुप से हानिकारक हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि महामारी के बुरे दिनों में गर्भवतियों की समस्या पर ध्यान न देकर डॉक्टरों ने खतरे पैदा कर दिए हैं। कुछ मृत्यु प्रमाण पत्र बताते हैं कि गर्भावस्था संबंधी मौत की संख्या में बढ़ोतरी का कारण कोरोना वायरस है। होयर्ट का कहना है कि यह संख्या साल 2021 में 400 थी पर पिछले 10 सालों की तुलना में कम है। बृहस्पतिवार को एजेंसी ने मातृ मत्यु दर 2022 के अंतिम आंकड़े जारी किये। हाल ही में एजेन्सी ने साल 2023 के अनंतिम आंकड़े जारी किये हैं। होयर्ट ने बताया कि आंकड़ों के अग्रिम विश्लेषण के बाद परिवर्तन की संभावनाएं है- 2022 के पूरक आंकड़े साल 2023 के अनंतिम आंकड़ों की अपेक्षा 11 प्रतिशत अधिक है। सीडीसी उन महिलाओं की गणना करता है जिनकी मृत्यु गर्भावस्था के दौरान, प्रसव के दौरान और जन्म के 42 दिन बाद तक गर्भावस्था से संबंधित स्थितियों से होती है। अत्याधिक रक्तस्राव, रक्त वाहिका में रुकावट और संक्रमण इसके प्रमुख कारक है। अनंतिम आंकड़ों के अनुसार, साल 2023 में प्रत्येक 100,000 जीवित जन्मों पर लगभग 19 मातृ मौतें हुई हैं।

लेकिन नस्लीय असमानताएं बनी हुई है-

मार्च ऑफ डाईम्स के एप्लाइड रिसर्च एंड एनालिटिक्स के निदेशक एशले स्टोनबर्नर से कहा, ''पिछले पांच वर्षों में हमने वास्तव में अपने देश में मातृ मृत्यु दर को कम करने में सुधार दर्ज नहीं किया है, इसलिए अभी भी बहुत काम करना बाकी है।'' एक संगठन ने इस सप्ताह एक शिक्षण अभियान शुरु किया है जिससे अधिक से अधिक गर्भवती महिलाओं को एस्पिरिन की कम खुराक लेने को प्रेरित किया जाए, जिन्हें प्रीक्लेम्पसीया की समस्या है। प्रीक्लेम्पसीया एक उच्च रक्तचाप विकार है जो मां और बच्चे दोनों को नुकसान पहुंचाता है। न्यूयार्क शहर में गंभीर गर्भावस्था का इलाज करने वाली डॉ लौरा रिले ने कहा, ऐसे अन्य प्रयास हैं जो गर्भावस्था से संबंधित मौतों और लंबे समय से चली आ रही स्वास्थ्य समस्याओं को कम करने में मदद कर सकते हैं, जिसमें संक्रमण से लड़ने और रक्त की कमी को दूर करने के प्रयास भी शामिल हैं। रिले के मुताबिक, एक जोखिम यह भी है कि उन सुधारों की भरपाई कई कारकों से हो रही है जो महिलाओं को जन्म से पहले, उसके दौरान और बाद में चिकित्सा देखभाल प्राप्त करने की क्षमता को कम कर सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि सूची में ग्रामीण अस्पतालों को बंद करना और 2022 में अमेरिकी उच्चतम न्यायलय के फैसले, जिसमें गर्भपात के संघीय रुप से स्थापित अधिकारों को कम करना शामिल है, और डॉक्टरों को गर्भावस्था से संबंधित चिकित्सा आपात स्थितियों के दौरान देखभाल प्रदान करने में हिचक महसूस करना हैं। रिले कहती हैं ''मुझे लगता है कि यह अच्छी खबर है। हम कुछ क्षेत्रों में प्रगति कर रहे हैं। लेकिन बुरी और डरावनी खबर यह है कि ये अन्य राजनीतिक और सामाजिक ताकतें हैं जो इसे (मातृ मृत्यु दर को) कम करने में कठिनाई उत्पन्न करती है।''

जेल जाने की चेतावनी मिलने के बाद ट्रंप ने न्यायाधीश को 'कुटिल' कहा

वौकेशा। अदालत की अवमानना के मामले में दोषी ठहराए जाने और इस बारे में कुछ न कहने के 'गैग आदेश' का उल्लंघन करने पर जेल जाने की चेतावनी दिए जाने के एक दिन बाद डोनाल्ड ट्रंप ने अपने खिलाफ रिश्वत मामले में सुनवाई कर रहे न्यायाधीश को 'कुटिल' कहा।

2024 के राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप पर वयस्क फिल्मों की अभिनेत्री स्टॉर्मी डेनियल्स को, उन दोनों के कथित अवैध संबंधों के बारे में चुप्पी साधने के बदले 130,000 डॉलर की रिश्वत देने का तथा इस राशि के भुगतान को छिपाने के लिए कारोबारी रिकॉर्ड में हेराफेरी करने का आरोप है। मामले की सुनवाई कर रहे जज ने मंगलवार को पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को गैग आदेशों (विचाराधीन मामले में बयानबाजी करने की मनाही) के उल्लंघन का दोषी ठहराते हुए उन पर नौ हजार डॉलर का जुर्माना लगाया। यह जुर्माना चुप रहने के लिए धन देने के मामले में गवाहों, ज्यूरी और अन्य के संबंध में सार्वजनिक बयान देने से रोकने वाले 'गैग आदेश' का लगातार उल्लंघन करने पर लगाया गया। ट्रंप के 'ट्रुथ' सोशल मीडिया खाते और प्रचार वेबसाइट पर पोस्ट के लिए जुर्माना लगाते हुए न्यायाधीश जुआन एम. मर्चन ने कहा था कि यदि ट्रम्प ने उनके आदेशों का उल्लंघन करना जारी रखा, तो वह जेल जांएगे। पूर्व राष्ट्रपति ने विस्कॉन्सिन के वौकेशा में एक कार्यक्रम में समर्थकों को संबोधित करते हुए कहा, कोई अपराध नहीं है। एक कुटिल न्यायाधीश हैं। वह पूरी तरह से विरोधाभासी न्यायाधीश हैं। उन्होंने दावा किया कि यह मामला और उनके खिलाफ अन्य मामले व्हाइट हाउस द्वारा उनके चुनाव अभियान को कमजोर करने के लिए चलाए गए हैं। 'गैग आदेश' न्यायाधीश द्वारा अदालत के समक्ष वकीलों, गवाहों और पक्षों को किसी मामले के तथ्यों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा नहीं करने के लिए दिया जाता है। यह आम तौर पर विशेष आपराधिक मामलों में दिया जाता है ताकि प्रतिवादी को निष्पक्ष सुनवाई का आश्वासन दिया जा सके।

रूस ने अंतरिक्ष में हथियारों पर प्रतिबंध संबंधी एक प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र में पेश किया

संयुक्त राष्ट्र। रूस ने संयुक्त राष्ट्र में एक प्रस्ताव पेश किया है जिसमें सभी देशों से बाह्य अंतरिक्ष में हथियारों की तैनाती ''हमेशा के लिए रोकने'' के वास्ते तत्काल कदम उठाने की अपील की गई है। दिलचस्प बात यह है कि एक सप्ताह पहले कमोबेश इसी प्रकार का एक प्रस्ताव अमेरिका और जापान ने संयुक्त रूप से विश्व निकाय में पेश किया था जिसपर रूस ने वीटो कर दिया था। रूस के इस प्रस्ताव में अमेरिका और जापान के प्रस्ताव से इतर बाह्य अंतरिक्ष में हथियारों की तैनाती हमेशा के लिए रोकने के लिए तत्काल कदम उठाने की बात है वहीं अमेरिका और जापान के प्रस्ताव में अंतरिक्ष में परमाणु हथियारों की तैनाती रोकने के लिए कदम उठाने की बात की गई थी। संयुक्त राष्ट्र में रूस के राजदूत वासिली नेबेंजिया ने जब अमेरिका-जापान के प्रस्ताव पर वीटो किया था तब उन्होंने सुरक्षा परिषद में कहा था कि यह अंतरिक्ष में सभी प्रकार के हथियारों पर प्रतिबंध लगाने के लिए असरदार नहीं है। रूस ने जिस प्रस्ताव पर वीटो किया था उसमें पूरा ध्यान केवल परमाणु हथियारों सहित सामूहिक विनाश के हथियारों पर केन्द्रित था और उसमें अंतरिक्ष में अन्य हथियारों की तैनाती के संबंध में कोई उल्लेख नहीं था।

एक नजर

महिला हॉकी टीम की कप्तानी सविता की बजाय सलीमा टेटे को

नई दिल्ली। मिडफील्डर सलीमा टेटे को अनुभवी गोलकीपर सविता पूनिया की जगह इस महीने के आखिर में होने वाले एफआईएच प्रो लीग के बेल्जियम और इंग्लैंड चरण के लिये भारत की 24 सदस्यीय महिला हॉकी टीम का कप्तान चुना गया है। नवनीत कौर को उपकप्तान बनाया गया है। सलीमा ने हॉकी इंडिया द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा, ''मुझे खुशी है कि टीम की कप्तानी दी गई है। यह बड़ी जिम्मेदारी है और मैं इसे लेकर उत्साहित हूं। हमारे पास मजबूत टीम है जिसमें अनुभवी और युवा खिलाड़ी हैं।'' उन्होंने कहा, ''एफआईएच प्रो लीग के आगामी बेल्जियम और इंग्लैंड चरण में हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। हमें अपनी कमजोरियों से पार पाना है। सविता ओलंपिक क्वालीफायर और उसके बाद प्रो लीग मैचों में भारत की कप्तान रही थी। बेल्जियम में मैच 22 से 26 मई तक और इंग्लैंड में एक से नौ जून तक होंगे। भारत का सामना पहले चरण में दो बार अर्जेंटीना और बेल्जियम से होगा। लंदन चरण में टीम ब्रिटेन और जर्मनी से खेलेगी। भारत इस समय प्रो लीग तालिका में छठे स्थान पर है। सलीमा को हाल ही में हॉकी इंडिया सालाना पुरस्कारों में बलबीर सिंह सीनियर वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी का पुरस्कार मिला था।

भारतीय महिला टीम

गोलकीपर: सविता, बिछू देवी खारीबाम

डिफेंडर: निक्की प्रधान, उदिता, इशिका चौधरी, मोनिका, ज्योति छत्री, महिमा चौधरी

मिडफील्डर: सलीमा टेटे (कप्तान), वैष्णवी विट्ठल फाल्के, नवनीत कौर, नेहा, ज्योति, बलजीत कौर, मनीषा चौहान, लालरेम्सियामी

फॉरवर्ड: मुमताज खान, संगीता कुमारी, दीपिका, शर्मिला देवी, प्रीति दुबे, वंदना कटारिया, सुनेलिता टोप्पो, दीपिका सोरेंग।

टी20 विश्व कप में अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका का प्रायोजक होगा अमूल

नई दिल्ली। भारतीय दुग्ध उत्पाद निर्माता अमूल जून में टी20 विश्व कप के दौरान अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका टीम का प्रायोजक होगा। दोनों टीमों के क्रिकेट बोर्ड ने बृहस्पतिवार को यह ऐलान किया। अमेरिका एक जून से हो रहे टूर्नामेंट में सह मेजबान के तौर पर पदार्पण करेगा। टूर्नामेंट में सेमीफाइनल और फाइनल समेत कई मुकाबले वेस्टइंडीज में होंगे। विश्व कप का पहला मैच एक जून को अमेरिका और कनाडा के बीच होगा। अमूल पहले भी नीदरलेंड, दक्षिण अफ्रीका और अफगानिस्तान का प्रायोजक रह चुका है। अमूल दूध अब अमेरिका में भी बेचा जाता है। अमूल के प्रबंध निदेशक जयेन मेहता ने एक बयान में कहा, ''अमूल दूध की गुणवत्ता से अमेरिकी क्रिकेट टीम दुनिया भर में दिल जीत सकेगी। हम टीम को आगामी टी20 विश्व कप के लिये शुभकामना देते हैं। दक्षिण अफ्रीका के प्रायोजन के बारे में उन्होंने कहा, ''अमूल 2019 वनडे श्रृंखला और 2023 वनडे विश्व कप से दक्षिण अफ्रीकी टीम से जुड़ा है। इस साझेदारी को आगे बढाने में हमें गर्व हो रहा है। हम उन्हें टी20 विश्व कप के लिये शुभकामना देते हैं।'' दक्षिण अफ्रीका को तीन जून को श्रीलंका से पहला मैच खेलना है।

आयरलैंड और इंग्लैंड सीरीज के लिए पाकिस्तान की टी20 टीम घोषित, हारिस रऊफ की वापसी

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ आगामी टी20 सीरीज के लिए राष्ट्रीय टीम की घोषणा कर दी है। स्टार तेज गेंदबाज हारिस रऊफ की टीम में वापसी हुई है। रऊफ कंधे की चोट के कारण हाल ही में समाप्त हुई न्यूजीलैंड सीरीज से बाहर रहे थे। रऊफ के अलावा तेज गेंदबाज हसन अली की भी टीम में वापसी हुई है जो 20 ओवर की सीरीज के लिए आयरलैंड और इंग्लैंड का दौरा करेंगे। पाकिस्तान की पुरुष राष्ट्रीय चयन समिति ने न्यूजीलैंड सीरीज में हिस्सा लेने वाले अधिकांश खिलाड़ियों को टीम में शामिल किया है। सलमान अली आगा को हाल ही में ब्लैक कैप्स के खिलाफ सीरीज के दौरान रिजर्व में रखा गया था, लेकिन उन्होंने 18 सदस्यीय टीम में अपनी जगह बनाई है। चोट के कारण न्यूजीलैंड सीरीज से बाहर रहने वाले आजम खान को टीम में शामिल किया गया है। इस बीच, न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे टी20 मैच के दौरान हैमस्ट्रिंग की चोट से पीड़ित मोहम्मद रिजवान को भी टीम में शामिल किया गया है। पाकिस्तान के बल्लेबाज बाबर आजम आयरलैंड और इंग्लैंड में टीम की अगुआई करेंगे।

दौरे के कार्यक्रम

आयरलैंड श्रृंखला: 10 मई: पहला टी20, डबलिन, 12 मई दूसरा टी20, डबलिन, 14 मई: तीसरा टी20, डबलिन।

इंग्लैंड श्रृंखला: 22 मई: पहला टी20, लीड्स, 25 मई: दूसरा टी20, बर्मिंघम; 28 मई: तीसरा टी20, कार्डिफ; 30 मई-चौथा टी20, लंदन।

पाकिस्तान टीम: बाबर आज़म (कप्तान), अबरार अहमद, आज़म खान, फखर जमान, हारिस रऊफ, हसन अली, इफ्तिखार अहमद, इमाद वसीम, मोहम्मद अब्बास अफरीदी, मोहम्मद आमिर, मोहम्मद रिजवान, मोहम्मद इरफान खान, नसीम शाह, सैम अयूब, सलमान अली आगा, शादाब खान, शाहीन शाह अफरीदी, उस्मान खान।

रोमांचक मुकाबले में हैदराबाद ने राजस्थान को एक रन से हराया

हैदराबाद,एजेंसी। नितीश कुमार रेड्डी नाबाद (76) और ट्रैविस हेड (58) की शानदार अर्धशतकीय पारियों की और उसके गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर सनराइजर्स हैदराबाद ने गुरुवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 50वें मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स को एक रन से हरा दिया है। मुकाबला इतना रोमांचक था कि राजस्थान रायल्स की टीम जीता हुआ मैच आखिरी गेंद पर रोवमन पॉवेल के पगबाधा आउट होने से एक रन से हार गई। 202रनों के लक्ष्य पीछा करने उतरी राजस्थान की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने पहले ही ओवर में जॉस बटलर (शून्य) का विकेट गवां दिया। उसके बाद तीसरे ओवर में कप्तान संजू सैमसन भी (शून्य) पर पवेलियन लौट गये। ऐसे में यशस्वी और रियान ने ना केवल पारी को संभाला और तेजी के साथ रन भी बटोरे। यशस्वी जायसवाल ने 40गेंदों में सात चौके और दो छक्के लगाते हुये (67) रन बनाये। रियान पराग ने 49 गेंदों में आठ चौके और चार छक्के लगाते हुए (77) रनों की पारी खेली। शिमरॉन हेटमायर (13), ध्रुव जुरेल (1) रवि अश्विन (1) और रोवमन पॉवेल (27) बनाकर आउट हुये। रवि अश्विन (दो) रन पर नाबाद रहे। राजस्थान की टीम निर्धारित 20 ओवर में सात विकेट पर 200 रन ही बना सकी और मुकाबला एक रन से हार गई। हैदराबाद की ओर से भुवनेश्वर कुमार ने तीन विकेट लिये। पैट कमिंस और थंगारसु नटराजन ने दो-दो विकेट लिये। इससे पहले नितीश कुमार रेड्डी नाबाद (76) और ट्रैविस हेड (58) की शानदार अर्धशतकीय पारियों की मदद से सनराइजर्स हैदराबाद ने राजस्थान रॉयल्स को जीत के लिए 202 रनों का लक्ष्य दिया है।

आज यहां राजीव गांधी अंतरराष?ट्रीय स?टेडियम में सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाज करनी का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी हैदराबाद की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने पांचवें ओवर में अभिषेक शर्मा (12) का विकेट गवां दिया। इसके बाद अगले ही ओवर में अनमोलप्रीत सिंह (5) रन बनाकर पवेलियन लौट गये। ऐसे संकट के समय नितीश कुमार रेड्डी ने ट्रैविड हेड के साथ पारी को संभाला और तीसरे विकेट के लिए ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए (96) रन जोड़े। ट्रैविस हेड ने 44 गेंदों में छह चौके और तीन छक्के लगाते हुए (58) रन बनाये। वहीं नितीश कुमार रेड्डी ने 42 गेंदों में तीन चौके और आठ छक्के लगाते हुए नाबाद (76) रनों की पारी खेली। हाइनरिक क्लासन 19 गेंदों में तीन चौके और तीन छक्के लगाते हुए (42) रन बनाये। हैदराबाद ने निर्धारित 20 ओवर में तीन विकेट पर 201 रनों का स्कोर खड़ा किया। राजस्थान की ओर से आवेश खान ने दो विकेट लिये। संदीप शर्मा ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

महिला टी20 विश्व कप क्वालीफायर: आयरलैंड ने सेमीफाइनल में जगह पक्की की

नई दिल्ली। आयरलैंड ने बुधवार रात बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए टॉलरेंस ओवल की रोशनी में वानुअतु पर एकतरफा जीत के साथ आईसीसी महिला टी20 विश्व कप क्वालीफायर के ग्रुप बी सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है। वहीं, जायद क्रिकेट स्टेडियम में दूसरे मैच में थाईलैंड ने यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका (यूएसए) को हराकर ग्रुप ए सेमीफाइनल में जगह बनाने की अपनी संभावनाओं को और बेहतर कर लिया है।

आयरलैंड और थाईलैंड दोनों ने नौ विकेट से शानदार जीत हासिल की। आयरलैंड की टूर्नामेंट में यह लगातार तीसरी जीत थी, जिससे वे ग्रुप बी में मजबूती से शीर्ष पर पहुंच गए।

ग्रुप ए में, थाईलैंड ने श्रीलंका के खिलाफ टूर्नामेंट के शुरुआती मैच में मिली हार के बाद शानदार वापसी की है और इस लगातार दूसरी जीत के साथ अब उनका लक्ष्य शुक्रवार को अपने अंतिम ग्रुप मैच में स्कॉटलैंड को हराना है, यह मैच यह तय करेगा कि ग्रुप ए से सेमीफाइनल में श्रीलंका के साथ कौन शामिल होगा। मैच में आयरलैंड ने टॉस जीतकर वानुअतु को पहले बल्लेबाजी करने के लिए कहा। वानुअतु की टीम एक समय 11.2 ओवर में 58 रन पर 1 विकेट खोकर ठीक-ठाक स्थिति में थी, लेकिन इसके बाद टीम ने शीर्ष स्कोरर वैलेंटा लैंगियाटू (31 गेंदों पर 27 रन, चार चौके) का विकेट गंवा दिया। लैंगियाटू ने नसीमाना नविका (19) साथ मिलकर दूसरे विकेट के लिए 49 रन की साझेदारी की, लेकिन उनके आउट होने के बाद वानुअतु के विकेट नियमित अंतराल पर गिरते रहे और टीम 20 ओवर में 9 विकेट पर 88 रन ही बना सकी। आयरलैंड के लिए ऑफ स्पिनर एमियर रिचर्डसन ने शानदार गेंदबाजी की, उन्होंने अपने चार ओवर में आठ रन देकर तीन विकेट चटकाए। कप्तान, लॉरा डेलानी और अर्लीन केली ने दो-दो विकेट लिए। एमियर को उनकी शानदार गेंदबाजी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

जवाब में, गैबी लुईस और एमी हंटर की शानदार आयरिश ओपनिंग जोड़ी ने पहले विकेट के लिए 82 रनों की साझेदारी कर टीम को 9 विकेट से एकतरफा जीत दिला दी। लुईस ने 36 गेंदों में आठ चौकों की मदद से 45 रन बनाए। हंटर 34 रन बनाकर नाबाद रहीं, जिसमें दो चौके शामिल थे। यह जोड़ी अब टूर्नामेंट के रन-स्कोरर की सूची में शीर्ष पर है। लुईस ने तीन पारियों में 47 की औसत से 141 रन बनाए हैं - जो टूर्नामेंट में सबसे अधिक रन हैं - जबकि हंटर तीन पारियों में 65 रन प्रति पारी के हिसाब से 130 रन बनाकर दूसरे स्थान पर हैं। लगातार दूसरे मैच में थाईलैंड की गेंदबाजों ने अपने कप्तान के पहले गेंदबाजी करने के फैसले को सही साबित किया। यूएसए की शुरुआत बेहद खराब रही, सलामी बल्लेबाज दिशा ढींगरा को पहली ही गेंद पर चानिदा सुथिरुआंग ने शून्य पर आउट कर दिया। यूएसए ने 10.5 ओवर में 36 रन पर नौ विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद इसानी वाघेला ने सानवी इम्मादी (03) के साथ मिलकर आखिरी विकेट के लिए 18 रनों की साझेदारी की और टीम का स्कोर 54 रनों तक पहुंचाया। इम्मादी 03 रन बनाकर अंतत: सुलेपोर्न लाओमी का शिकार बनीं। यूएसए की टीम 17.5 ओवर में 54 रनों पर सिमट गई।

कनाडा ने 2024 टी20 विश्व कप के लिए घोषित की टीम, साद बिन जफर होंगे कप्तान

ओटावा। क्रिकेट कनाडा ने आगामी टी20 विश्व कप के लिए गुरुवार को अपनी 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की। ऑलराउंडर साद बिन जफर आईसीसी टूर्नामेंट में कनाडाई टीम का नेतृत्व करेंगे। ऑर्थोडॉक्स स्पिनर और कप्तान साद टीम में अनुभव का खजाना लेकर आएंगे, साथ ही बल्लेबाज आरोन जॉनसन और तेज गेंदबाज कलीम सना के भी टीम में शामिल किया गया है। टीम में सिर्फ चार खिलाड़ी 30 साल से कम उम्र के हैं। निखिल दत्ता और श्रीमंथा विजयरत्ने को टीम में जगह नहीं मिली है। इस बीच, तजिंदर सिंह आईसीसी टी20 विश्व कप 2024 के लिए रिजर्व के तौर पर यूएसए और वेस्टइंडीज जाएंगे।

आगामी आईसीसी इवेंट टी20 विश्व कप में कनाडा की पहली भागीदारी होगी। साद की टीम को सह-मेजबान अमेरिका, भारत, पाकिस्तान और आयरलैंड के साथ ग्रुप ए में रखा गया है। उत्तरी अमेरिकी टीम 1 जून को डलास में यूएसए के खिलाफ अपने टूर्नामेंट की शुरुआत करेगी।

कनाडा की टी-20 विश्व कप 2024 टीम इस प्रकार है

साद बिन जफर (कप्तान), आरोन जॉनसन, दिलोन हेइलिगर, दिलप्रीत बाजवा, हर्ष ठाकर, जेरेमी गॉर्डन, जुनैद सिद्दीकी, कलीम सना, कंवरपाल तथगुर, नवनीत धालीवाल, निकोलस किरटन, परगट सिंह, रविंदरपाल सिंह, रेयानखान पठान, श्रेयस मोव्वा।

रिजर्व: तजिंदर सिंह, आदित्य वरदराजन, अम्मार खालिद, जतिंदर मथारू, परवीन कुमार।

खराब फॉर्म से जूझ रही मुंबई इंडियंस के खिलाफ अपनी कमजोरियों से पार पाने उतरेगी केकेआर

मुंबई,एजेंसी। खराब फॉर्म से जूझ रही मुंबई इंडियंस के खिलाफ शुक्रवार को इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले में कोलकाता नाइट राइडर्स अपनी कमजोरियों से पार पाने के इरादे से उतरेगी। नौ मैचों में छह जीत के बाद 12 अंक लेकर केकेआर तालिका में दूसरे स्थान पर है और प्लेआफ में उसकी जगह लगभग पक्की लग रही है। श्रेयस अय्यर की कप्तानी वाली टीम को हालांकि हर विभाग में लगातार अच्छा प्रदर्शन करके किसी तरह की कोताही से बचना होगा। केकेआर ने पिछले छह में से तीन मैच गंवाये हैं और पंजाब किंग्स ने रिकॉर्ड लक्ष्य का पीछा करके उसे हराया लेकिन फिर केकेआर ने वापसी करके दिल्ली कैपिटल्स को सात विकेट से मात दी।

बल्लेबाजी में अति आक्रामक रवैये का केकेआर को फायदा मिला है लेकिन गेंदबाजी में सुधार की गुंजाइश है। मिचेल स्टार्क प्रति ओवर 12 की दर से रन लुटा रहे हैं और उन्हें सात ही विकेट मिले हैं। बल्लेबाजों की मददगार पिचों पर आस्ट्रेलिया का यह तेज गेंदबाज कोई कमाल नहीं कर पा रहा। हर्षित राणा ने सर्वाधिक 11 विकेट लिये हैं लेकिन दिल्ली के अभिषेक पोरेल के विकेट पर अति आक्रामक जश्न मनाने के कारण उन पर एक मैच का प्रतिबंध लगा है। वैभव अरोड़ा ने पांच मैचों में नौ विकेट लिये हैं। वानखेड़े स्टेडियम बल्लेबाजों की मददगार पिच के लिये मशहूर है और इस पर 200 से अधिक का स्कोर बनना तय है। ऐसे में नजरें रिंकू सिंह पर भी होंगी जिन्हें टी20 विश्व कप के लिये भारत की मुख्य टीम में जगह नहीं मिलने से काफी बहस हो रही है। उन्हें इस साल आईपीएल में खेलने का अधिक समय ही नहीं मिल सका। दूसरी ओर मुंबई प्लेआफ की दौड़ से लगभग बाहर लग रही है हालांकि उसे पांच मैच और खेलने हैं।इनमें सभी जीतने पर भी उसके 16 ही अंक होंगे जो प्लेआफ में जगह बनाने के लिये शायद कम होंगे। जसप्रीत बुमराह (14 विकेट) और गेराल्ड कोएत्जी (13 विकेट) मुंबई के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज रहे हैं लेकिन एक ईकाई के रूप में टीम गेंदबाजी में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकी है। बल्लेबाजी में तिलक वर्मा ने तीन अर्धशतक समेत 343 रन बनाये हैं लेकिन बाकी बल्लेबाज नाकाम ही रहे हैं। ईशान किशन लगातार अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं और पावरप्ले में विकेट गंवाना मुंबई की कमजोरी रही है। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने 158.29 की स्ट्राइक रेट से रन बनाये हैं लेकिन लगातार बड़ी पारियां नहीं खेल सके हैं। टी20 विश्व कप से पहले उनके फॉर्म पर भी नजरें होंगी। वहीं सूर्यकुमार यादव ने दो अर्धशतक बनाये हैं लेकिन अपनी क्षमता के साथ पूरी तरह न्याय नहीं कर सके हैं। कप्तान हार्दिक पंड्या बल्ले या गेंद किसी से भी कमाल नहीं कर सके हैं लेकिन टी20 विश्व कप टीम का उपकप्तान बनाये जाने से उनका मनोबल बढा होगा।

उबेर कप 2024: क्वार्टर फाइनल में पूर्व चैंपियन जापान से हारी भारतीय महिला बैडमिंटन टीम

चेंगदू। भारतीय महिला बैडमिंटन टीम को एकल खिलाड़ियों के शानदार प्रयास के बावजूद गुरुवार को उबेर कप 2024 के अभियान क्वार्टर फाइनल में पूर्व चैंपियन जापान से 0-3 से हार का सामना करना पड़ा। इसी के साथ इस टूर्नामेंट में भारत का सफर समाप्त हो गया। सभी अनुभवी खिलाड़ियों की अनुपस्थिति में, भारतीय युवा दल ने कनाडा और सिंगापुर पर दो शानदार जीत के साथ अंतिम आठ चरण में जगह बनाई थी। शुरुआती एकल मैच में, विश्व की 11वें नंबर की खिलाड़ी अया ओहोरी ने अश्मिता चालिहा को एक घंटे सात मिनट तक चले मैच में 21-10, 22-24, 21-15 से शिकस्त दी। इसके बाद नामी मात्सुयामा और चिहारू शिदा की विश्व नंबर 4 जोड़ी ने राष्ट्रीय चैंपियन प्रिया कोनजेंगबाम और श्रुति मिश्रा को 21-8, 21-9 से हराकर जापान की बढ़त को दोगुना कर दिया। अंतिम एकल मुकाबले में इशरानी बरुआ ने पूर्व विश्व चैंपियन नोज़ोमी ओकुहारा को अच्छी चुनौती दी और शुरुआती गेम में 14-11 की बढ़त भी बनाई, लेकिन अनुभवी जापानी खिलाड़ी ने अगले 11 में से 10 अंक जीतकर बाजी पलट दी। दूसरा गेम भी पहले गेम जैसा ही रहा क्योंकि दोनों खिलाड़ी 9-9 तक बराबरी पर रहीं, उसके बाद ओकुहारा ने बढ़त बना ली और अंत में 21-15, 21-12 से मैच अपने नाम कर क्वार्टर फाइनल में जापान को जीत दिला दी। थॉमस कप खिताब का बचाव कर रही भारतीय पुरुष टीम क्वार्टर फाइनल में चीन से भिड़ेगी।

थॉमस कप के क्वार्टरफाइनल में पुरुष और महिला टीम की हार के साथ भारतीय अभियान समाप्त

चेंगदू,एजेंसी। भारतीय पुरुष और महिला बैडमिंटन टीम को थॉमस और उबेर कप 2024 के क्वार्टरफाइनल मुकाबले में गुरुवार को मिली हार के साथ टूर्नामेंट में उसका अभियान समाप्त हो गया।

चीन के चेंगदू में आयोजित क्वार्टरफाइनल में आज पुरुष टीम को चीन के खिलाफ 3-1 और महिला टीम को जापान के खिलाफ मुकाबले में 3-0 से हार का सामना करना पड़ा। एचएस प्रणॉय को चीनी खिलाड़ी शी यू की से 21-15, 11-21,14-21 से हार का सामना करना पड़ा। वहीं थॉमस कप के दूसरे मुकाबले में चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी को वेई केंग-वांग चांग की जोड़ी ने 21-15, 11-21, 21-12 से हराया और इसी के साथ भारत 0-2 से पिछड़ गया।

वहीं एकल मुकाबले में राष्ट्रमंडल खेलों के चैंपियन लक्ष्य सेन की जीत ने भारत की उम्मीदें बरकरार रखीं और स्कोर 1-2 हो गया। लक्ष्य ने ली शी फेंग को 13-21, 21-8, 21-14 से मात दी। लक्ष्य की शुरुआत अच्छी नहीं रही, लेकिन दूसरे गेम में भारतीय खिलाड़ी ने वापसी की और मैच को तीसरे गेम तक पहुंचाया। भारतीय शटलर ने निर्णायक गेम में जीत दर्ज कर मैच अपने नाम कर लिया। पुरुष युगल मुकाबले में ध्रुव कपिला और साई प्रतीक की जोड़ी को ही जी टिंग-रेन जियांग यू से सीधे गेम में 10-21, 10-21 से हार का सामना करना पड़ा। इस हार के साथ पुरुष टीम थॉमस कप से बाहर हो गई। इससे पहले महिला टीम ने एकल मुकाबले से प्रतियोगिता की शुरुआत की। विश्व रैंकिंग में 53वें स्थान पर मौजूद अश्मिता चालिहा को वर्ल्ड रैंकिंग में 11वें स्थान पर काबिज़ अया ओहोरी ने 21-10, 20-22, 21-15 से शिकस्त दी। वहीं, राष्ट्रीय युगल चैंपियन प्रिया कोन्जेंगबाम-सिमरन सिंघी को दुनिया की चौथे नंबर की जोड़ी नामी मत्सुयामा और चिहारू शिडा ने सीधे गेम में 21-8, 21-9 से हराया। एकल के अन्य मुकाबले में इशरानी बरुआ को भी नाजोमी ओकोहारा से 21-15, 21-12 से हार का सामना करना पड़ा। उल्लेखनीय है कि थॉमस कप में भारतीय पुरुष बैडमिंटन टीम को ग्रुप स्टेज में थाईलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ जीत मिली थी जबकि डिफेंडिंग चैंपियन को इंडोनेशिया से हार का सामना करना पड़ा था। इसके साथ भारतीय टीम ने ग्रुप की दूसरी सर्वश्रेष्ठ टीम के रूप में थॉमस कप क्वार्टरफाइनल के लिए क्वालीफाई किया था। वहीं भारतीय महिला टीम ने कनाडा और सिंगापुर पर जीत के साथ ग्रुप की दूसरी सर्वश्रेष्ठ टीम के रूप में उबेर कप क्वार्टरफाइनल के लिए अपनी जगह पक्की की थी। ग्रुप स्टेज में टीम को चीन से 5-0 से हार मिली थी।

एक नजर

दिल्ली में सरकार बनने पर किसानों का कर्ज माफ होगा- अखिलेश

बरेली,एजेंसी। समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि दिल्ली में इंडिया समूह की सरकार बनने पर किसानों का कर्ज माफ किया जायेगा। आंवला लोकसभा क्षेत्र के देवचरा में चुनावी सभा संबोधित करते हुये गुरुवार को उन्होने कहा कि सपा -कांग्रेस के इंडी गठबंधन की सरकार आती है तो वह किसानों का कर्ज माफ़ कर देंगे। भाजपा ने देश के उद्योगपतियों का कर्ज माफ़ कर दिया। सरकार किसानों के कर्ज को भी माफ़ कर सकती थी। लेकिन ऐसा नहीं किया गया। उन्होंने अग्निवीर मामले पर भी भाजपा की खिंचाई करते कहा कि पहले पूरे जीवन की फ़ौज की नौकरी मिलती थी। युवा फौज की नौकरी के लिए वर्षों तैयारी करता था। लेकिन इस सरकार ने फ़ौज की नौकरी चार साल की कर दी। जब उनकी सरकार आएगी तो अग्निवीर की नौकरी को समाप्त कर दिया जाएगा। अखिलेश ने किसानों को साधते हुए कहा कि यही सरकार किसानों के खिलाफ तीन काले कानून लाई थी जिसके विरोध में किसानों ने लड़ाई लड़ी इसके बाद कहीं तीनों काळा कानून वापस हुए थे। क्या ऐसे ही किसानों की आय दोगुनी होगी। अखिलेश ने प्रथम और दूसरे चरण में हुए मतदान को लेकर कहा कि इन दोनों चरणों में भाजपा का सफाया हो जाएगा। यहां एक सीट नहीं मिलने जा रही है। यह चुनाव संविधान बचाने का चुनाव है। उन्होने कहा 400 सीटें जीतने का नारा देने वाले भाजपा के लोगों की भाषा -भाषण बदल गये है। यह अब दूसरे चरण के बाद अपना नारा भूल गए है। अब तो जनता कह रही है 4 सौ हार। सपा के राष्ट्रीय अखिलेश यादव ने देवचरा में हुई जनसभा में आंवला सीट से चुनाव लड़ रहे नीरज मौर्य के लिए वोट मांगे।

भाजपा की जुमलेबाजी इस बार काम नहीं आने वाली, विदाई तयः मायावती

मैनपुरी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को जुमलेबाज पार्टी करार देते हुये बहुजन समाज पार्टी (बसपा) अध्यक्ष मायावती ने गुरुवार को कहा कि मौजूदा लोकसभा चुनाव में जुमलेबाजी काम नहीं आयेगी। क्रिश्चियन कॉलेज के खेल मैदान में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुये सुश्री मायावती ने कहा कि भाजपा केंद्र में वापस नहीं आयेगी। भाजपा ईवीएम में गड़बड़ी करती है और जुमलेबाजी पार्टी है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की जुमलेबाजी काम नहीं आयेगी। उन्होंने भाजपा के साथ-साथ कांग्रेस पर भी निशाना साधा और कहा कि कांग्रेस की गलत नीतियों के कारण ही कांग्रेस के हाथों से सत्ता गयी । केंद्र और राज्य कांग्रेस के हाथ से निकलते चले गए। मायावती ने कहा कि बसपा पार्टी करके दिखाने में विश्वास रखती है और अन्य पार्टियां घोषणा पत्र जारी कर जनता को गुमराह करने का काम करती हैं। उन्होने दावा किया कि समाजवादी पार्टी का प्रत्याशी मैनपुरी में दूसरे या तीसरे नम्बर पर आ सकता है। बसपा के प्रत्याशी किसी को हराने या जिताने के लिए नहीं लड़ रहे,बल्कि जीतने के लिए लड़ रहे हैं। मैनपुरी, एटा और फिरोजाबाद से बसपा प्रत्याशी जीत रहे हैं। बसपा अध्यक्ष ने मैनपुरी की जनता से बसपा प्रत्याशी शिवप्रसाद यादव को भारी बहुमत से जिताने की अपील की और कहा कि मैनपुरी में आज की रैली में उमड़ी भीड़ ने साबित कर दिया है कि जनता बसपा के साथ है और बसपा ही मैनपुरी सीट से विजयी होगी।

इंडिया अलायंस प्रत्याशी कुलदीप कुमार का जसुला विहार में कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा भव्य स्वागत

सद्भावना टुडे,संवाददाता

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र के जसुला विहार शाहीन बाग में इंडिया अलायंस के प्रत्याशी कुलदीप कुमार के समर्थन में कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया इस कार्यक्रम का आयोजन कांग्रेस पार्टी के युवा नेता और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सोशल मीडिया चेयरमैन हिदायतुल्ला जेंटल ने किया। इस मौके पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता और जाकिर नगर वार्ड के पूर्व पार्षद शोएब दानिश, सैयद तहसीन अहमद, मुहम्मद शकील, मुहम्मद रईस, मुहम्मद शाहिद, गुड्डू भाई, अबरार अहमद, किनिज फातिमा, अराफा खानम समेत कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के कई कार्यकर्ता उपस्थित थे इस मौके पर वक्ताओं ने सभी से पूर्वी दिल्ली से इंडिया अलायंस के उम्मीदवार को समर्थन देने की अपील की।

इस अवसर पर कुलदीप कुमार ने बीजेपी पर संविधान बदलने का आरोप लगाया और कहा कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस का गठबंधन संविधान की रक्षा के लिए हुआ है संविधान की रक्षा के लिए हम हर किसी से समझौता करने को तैयार हैं। उन्होंने बीजेपी के 400 पार नारे का भी मजाक उड़ाया और कहा कि उनके नेता कहते हैं कि हमें संविधान बदलने के लिए 400 सीटें चाहिए, पहले चुनाव जीतो, बाद में संविधान बदलो। बाबा साहेब के संविधान को बदलने की हिम्मत किसी में नहीं है उन्होंने कहा कि बीजेपी के लोगों को लगता था कि अरविंद केजरीवाल को जेल में डालकर हम दिल्ली में चुनाव जीत सकते हैं। दिल्ली में हर कोई उनके बेटे और भाई अरविंद केजरीवाल के साथ खड़ा है। आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार ने चेतावनी दी कि अगर मोदी जी दोबारा प्रधानमंत्री बने तो यह देश का आखिरी चुनाव होगा। पूर्व पार्षद शोएब दानिश ने कहा कि पूर्वी दिल्ली से एक अच्छे आदमी को उम्मीदवार बनाया। हम घर-घर जाकर कुलदीप कुमार की जीत के लिए वोट की अपील करेंगे। युवा नेता हिदायतुल्ला जेंटिल ने कहा कि कांग्रेस पार्टी का हर कार्यकर्ता यहां से इंडिया अलायंस की जीत के लिए हर संभव प्रयास करेगा। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी नफरत की दीवार को गिराने के लिए ही कन्याकुमारी से कश्मीर तक चले। और इसी का नतीजा है कि आज आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के कार्यकर्ता एक जगह इकट्ठा हुए हैं और पूरी उम्मीद है कि इस बार दिल्ली और देश में बीजेपी की हार तय है क्योंकि जनता उनकी मंशा और हरकतों को जान चुकी है इसलिए मैं सभी से इंडिया अलायंस प्रत्याशी के पक्ष में वोट करने की अपील करता हूं। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किये और कुलदीप कुमार के पक्ष में वोट देने की अपील की।

सुक्खू सरकार की गलत नीतियों से उद्योगों का हुआ पलायन, युवा हुए बेरोजगारः अनुराग ठाकुर

शिमला,एजेंसी। हिमाचल प्रदेश के पूर्व उद्योगमंत्री एवं हमीरपुर संसदीय क्षेत्र प्रभारी बिक्रम ठाकुर ने आज कहा कि प्रदेश में पिछले 16 महीने से कांग्रेस की सरकार में बड़े-छोटे उद्योगों के लिए जिस प्रकार की नीति बनाई हैं उसके कारण लगातार उद्योगों का यहां से पलायन हो रहा है। ठाकुर ने शिमला में आयोजित प्रेस वार्ता में कहा कि पिछले पांच वर्षों में जयराम ठाकुर की सरकार थी और उस सरकार के समय में केंद्र सरकार से मिलकर जो बड़ी बड़ी योजनाएं लेकर हम लोग आये थे, आज वे सभी योजनाएं ठंडे बस्ते में चली गई हैं। उन्होंने सुक्खू सरकार पर आरोप लगाया कि वर्तमान सरकार की उद्योगनीति सहीं नहीं हैं जिसके कारण हिमाचल से उद्योगों का पलायन हुआ हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व भाजपा सरकार की महत्वकांक्षी मुख्यमंत्री स्वाबलंबन योजना का गला घोटने का कार्य इस सरकार ने किया हैं। इस योजना के कारण से बहुत बड़ा काम पिछली सरकार के समय में हुआ। जिससे नौजवान एक करोड़ रुपये तक के प्रोजेक्ट लगवा सकते थे। लगभग 4228 यूनिट नए लगे और 200 करोड़ रुपये की सब्सिडी रिलीज़ की गई थी, लेकिन आज स्थिति यह है कि मुख्यंमत्री स्वाबलंबन योजना को इस सरकार ने समाप्त कर दिया हैं और 200 करोड़ रुपये की देनदारी लंबित हैं। जिसमें ऊना के 150 के लगभग मामले लंबित पड़े हैं और आठ करोड़ रुपये की सब्सिडी नौजवान बच्चों की फंसी हुई है। इसी प्रकार से कांगड़ा के अंदर 320 मामले लंबित है। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी योजना थी जिसके कारण हर व्यक्ति, नौजवान को अपने पैरों पे खड़ा हो सकता था और बड़े दुख की बात यह है कि सरकार की नाकामियों और नालायकियां के कारण ये योजनाएं बंद हो गई है। पूर्व उद्योग मंत्री ने कहा कि वर्तमान प्रदेश सरकार ने जिस प्रकार की योजनाएं और प्रोग्राम इंडस्ट्रीज के लिए दिए हैं उसके कारण से इंडस्ट्री बैकफुट पर चली गयी हैं। उन्होंने कहा कि जयराम सरकार के समय बड़े-बड़े प्रोजेक्ट हिमाचल को मिले जिसमें सबसे बड़ा प्रोजेक्ट हिमाचल प्रदेश को 2022 में 1923 करोड़ रूपये का बल्क ड्रग पार्क स्वीकृत किया गया।

राहुल ने मोदी पर लगाया 'सामूहिक दुष्कर्म' प्रज्वल रेवन्ना का समर्थन करने का आरोप

शिवमोग्गा (कर्नाटक)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को हासन के सांसद एवं जद (एस) नेता प्रज्वल रेवन्ना पर जोरदार हमला करते हुए हालिया सेक्स स्कैंडल को 'सामूहिक दुष्कर्म' बताया और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पोते को समर्थन देने का आरोप लगाया। श्री गांधी ने यहां एक चुनावी रैली के दौरान जोर देकर कहा, प्रत्येक भाजपा नेता अच्छी तरह से जानता था कि प्रज्वल रेवन्ना एक सामूहिक दुष्कर्मी है, फिर भी उन्होंने जेडीएस के साथ गठबंधन करके उसका समर्थन करने का फैसला किया।

उन्होंने प्रज्वल रेवन्ना पर जघन्य अपराधों का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, प्रज्वल रेवन्ना ने 400 महिलाओं के साथ बलात्कार किया और वीडियो रिकॉर्ड किया। प्रधानमंत्री मोदी ने मंच पर एक 'सामूहिक बलात्कारी' का खुले तौर पर समर्थन किया। उन्होंने श्री मोदी से महिलाओं से माफी मांगने की मांग की। इस बीच, कर्नाटक के गृह मंत्री डॉ. जी परमेश्वर ने आज घोषणा की कि प्रज्वल की गिरफ्तारी के लिए 'लुकआउट नोटिस' जारी किया गया है, क्योंकि उस पर महिलाओं के यौन शोषण के आरोप हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि अपनी विदेश यात्रा के कारण विशेष जांच दल (एसआईटी) के सामने पेश होने के लिए सात दिन की मोहलत की प्रज्वल की याचिका के बावजूद, 24 घंटे से अधिक समय देने का कोई प्रावधान मौजूद नहीं है। डॉ. परमेश्वर ने कहा, जैसे ही पता चला कि प्रज्वल विदेश चला गया है, लुकआउट नोटिस जारी कर दिया गया है। हमने लुकआउट नोटिस के बारे में सभी बंदरगाहों और हवाई अड्डों को सूचित कर दिया है। पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पोते और विधायक एवं पूर्व मंत्री एचडी रेवन्ना के बेटे प्रज्वल, हासन में कथित तौर पर उनसे जुड़े वीडियो क्लिप सामने आने के बाद विवादों में घिर गये हैं। प्रज्वल हासन लोकसभा क्षेत्र से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के उम्मीदवार हैं, जहां 26 अप्रैल को मतदान हुआ था। गृह मंत्री ने खुलासा किया कि एक महिला ने प्रज्वल और उनके पिता पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए पुलिस में शिकायत दर्ज करायी थी। उन्होंने खुलासा किया कि एक और पीड़ित प्रज्वल के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए आगे आया है। आरोपियों को और समय दिया जाये या नहीं, इस पर एसआईटी कानूनी राय ले रही है। डॉ. परमेश्वर ने सांसद के खिलाफ आरोपों की गंभीरता को रेखांकित करते हुए कहा, एसआईटी अब उन्हें गिरफ्तार करेगी क्योंकि 24 घंटे से अधिक समय देने का कोई प्रावधान नहीं है।

लोकसभा चुनावः लोकतंत्र बिना लोकलाज के नहीं चल सकता- राजनाथ

छपरा,एजेंसी। केंद्रीय रक्षामंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह ने कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) पर आरोप लगाते हुए कहा कि भ्रष्टाचार मामलों में आरोपित होने के बावजूद ये दोनों दल लोगों के बीच जाकर वोट मांग रहे हैं, इनमें थोड़ी तो लोक-लाज होनी चाहिए। श्री सिंह ने गुरुवार को सारण संसदीय क्षेत्र से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) उम्मीदवार राजीव प्रताप रूडी के नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद यहां आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस-राजद पर भ्रष्टाचार का आरोप है। ये लोग बिना भ्रष्टाचार के चल ही नहीं सकते हैं। उसके बाद भी लोगों के बीच जाकर वोट मांगते हैं। थोड़ी तो लोक-लाज होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र बिना लोकलाज के नहीं चल सकता है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार से चला 100 पैसा पूरा का पूरा ही आपके क्षेत्र में चला आता है जबकि पूर्व की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार में 100 में से 85 पैसे ऊपर ही ऊपर खत्म हो जाते थे और मात्र 15 पैसे ही आपके पास आते थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आधार कार्ड, जनधन और मोबाइल की त्रिमूर्ति के कारण ही यह काम सम्भव हो सका है। श्री सिंह ने कहा, आप एक सांसद नहीं बल्कि एक बड़ी हस्ती को चुनने जा रहे हैं। राजीव प्रताप रूडी सांसद हैं और दिल्ली में कम समय देते हैं। पूछे जाने पर बताते हैं कि जिस जनता ने मुझे चुनकर भेजा है उनके बीच रहने की कोशिश करता हूं। उन्होंने कहा, राजीव प्रताप रूडी एक कुशल पायलट हैं और मुझे भरोसा है कि वे बाकी सभी को हवा में उड़ा देंगे। केंद्रीय रक्षा मंत्री ने कहा कि सारण की जनता को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी पर भरोसा है। अब मुझे यह भी भरोसा है कि बिहार में लालटेन युग की वापसी नहीं होगी। इस मौके पर श्री रूडी ने सारण से राजद उम्मीदवार और पार्टी अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की पुत्री रोहिणी आचार्य पर जमकर निशाना साधा और कहा, रोहिणी ने वोट के लिए खून का हवाला दिया, इसका क्या मतलब है। परिवार का काम होता है साथ देना। वह मुझे हवा-हवाई कहती हैं, सही बात है मैं अकेला सांसद हूं जो हवाई जहाज उड़ाता है। इसमें गलत क्या है। हमको अंग्रेजी बोलना आता है उससे आपको तकलीफ है। हिंदी, भोजपुरी बोलते हैं उससे तकलीफ है। हम सब कुछ करते है उससे तकलीफ है। भाजपा प्रत्याशी ने रोहिणी के खुद को सारण की बेटी बताने को लेकर हमला बोला और कहा, जो पांच दिन पहले छपरा आया वो क्या बताएंगे कि मैंने पांच साल में क्या किया। मैं कोई काम पांच साल के लिए नहीं करता हूं। मैं 100 साल आगे देख कर काम करता हूं। रोहिणी पटना में रहती हैं और खुद को छपरा की बेटी बताती है। मैं बोलना नहीं चाहता लेकिन वह बार-बार चोट कर रही हैं। हमारी लड़ाई उससे नहीं है, हमारी लड़ाई लालू यादव और और उनकी पार्टी राजद से है।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया को सीएसआर पहल के अंतर्गत याली मोबिलिटी से 3-व्हील ई-वाहन प्राप्त हुआ

सद्भावना टुडे, संवाददाता

नई दिल्ली। जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के शारीरिक रूप से विकलांग व्हीलचेयर छात्रों को सशक्त बनाने हेतु आज विश्वविद्यालय के नेहरू गेस्ट हाउस में कार्यवाहक कुलपति प्रो. इकबाल हुसैन द्वारा 3-व्हील ई-वाहन लॉन्च किया गया। कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) पहल के अंतर्गत जामिया मिल्लिया इस्लामिया को याली मोबिलिटी, चेन्नई द्वारा ई-व्हीलचेयर वाहन प्रदान किया गया था और यह 200 से अधिक शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों के लिए बहुत मददगार होगा। व्हीलचेयर उपयोगकर्ता किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता बिना खुद ही व्हीलचेयर की गति, दिशा और गति को पूरी तरह से नियंत्रित कर सकता है।

सेंटर फॉर सोशल एक्सक्लूजन एंड इनक्लूसिव पॉलिसी (सीएसईआईपी), जामिया इस उद्यम में मध्यस्थता करने में सहायक रही है क्योंकि इस केंद्र का उद्देश्य महिलाओं, अल्पसंख्यकों, दिव्यांगों और ट्रांसजेंडरों सहित समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों के समावेश को बढ़ावा देना है। इस मौके पर जामिया के मो. हदीस लारी, कार्यवाहक कुलसचिव, प्रो मो. मुस्लिम खान, डीन, सामाजिक विज्ञान संकाय, प्रो तनुजा, मानद निदेशक, सीएसईआईपी, श्री शक्तिवेल थायप्पन, निदेशक, याली मोबिलिटी, आईआईटी रिसर्च पार्क, चेन्नई और उनकी टीम सहित विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य एवं छात्र उपस्थित रहे। याली मोबिलिटी, आईआईटी मद्रास का एक इनक्यूबेटेड स्टार्टअप, व्हीलचेयर उपयोगकर्ताओं और बुजुर्गों हेतु सुलभ वाहन उपलब्ध कराने में माहिर है जो उनके दैनिक आउटडोर आवागमन को सहज एवं आनंददायक बना रहा है।

प्रो इकबाल हुसैन ने अपने वक्तव्य की शुरुआत ई-वाहन प्रदान करने हेतु याली मोबिलिटी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए की, जो विश्वविद्यालय के शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों को अधिक सशक्त बनाएगा। उन्होंने यह कहा कि जामिया में पहले से ही शारीरिक रूप से विकलांग छात्रों के लिए रैंप, लिफ्ट तथा अन्य सुविधाएं मौजूद हैं और ई-वाहन के जुड़ने से न केवल उन्हें परिसर में तेज गति से आने-जाने में सहायता मिलेगी मिलेगी बल्कि विश्वविद्यालय को एनएएसी, एनआईआरएफ और अन्य रैंकिंग में भी सहायता मिलेगी। याली मोबिलिटी के निदेशक, श्री शक्तिवेल थायप्पन ने यह कहा कि उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया को प्रोजेक्ट फ्रीडम के अंतर्गत ई-वाहन प्रदान करने के लिए चुना क्योंकि इसकी समृद्ध विरासत सबसे पुराने केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है और एनआईआरएफ रैंकिंग में इसे तीसरा स्थान प्राप्त है। इसके अतिरिक्त, बहु-विषयक शिक्षा, सामाजिक समावेशिता एवं सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने पर विश्वविद्यालय ज़ोर देता है और इसमें क्रांति लाने सहित परिसर में समावेशिता को बढ़ावा देना प्रोजेक्ट फ्रीडम के लक्ष्य से पूरी तरह से मेल खाता है। प्रोफेसर तनुजा, मानद निदेशक, सीएसईआईपी ने मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथियों, गणमान्य व्यक्तियों तथा अन्य आमंत्रित लोगों को कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आभार व्यक्त किया है!

कांग्रेस और उसका घमंडिया गठबंधन ने सनातन संस्कृति को बदनाम करने का किया प्रयासः यादव

भोपाल,एजेंसी। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने आज कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हमारी सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए दिन-रात जुटे हुए हैं। वे देश का मान-सम्मान दुनियाभर में बढ़ा रहे हैं, लेकिन कांग्रेस और इसके घमंडिया गठबंधन ने हमेशा से देश की सनातन संस्कृति को बदनाम करने का काम किया है। डॉ यादव ने उज्जैन में उज्जैन उत्तर विधानसभा में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन एवं संत समागम में शिरकत करने के साथ ही देवास लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी महेंद्र सिंह सोलंकी के समर्थन में आगर, राजगढ़ लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी रोडमल नागर के समर्थन में बोड़ा, चाचौड़ा व मकसूदनगढ़ एवं सागर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी लता वानखेड़े के समर्थन में सिरोंज में आयोजित जनसभाओं को संबोधित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम सनातन संस्कृति को पूजन वाले, मानने वाले लोग हैं, लेकिन कांग्रेस और इनके नेता सनातन संस्कृति का मजाक उड़ाने वाले हैं। वे आतंकवादियों को जी कहकर संबोधित करते हैं। उन्होंने उनके चुनाव प्रचार के लिए 200 मौलवी बुलवाए हैं। कांग्रेस के न तो वचन का ठिकाना है, न उनकी पार्टी का ठिकाना है और न ही उनका भगवान श्रीराम के साथ कोई ठिकाना है। हम तो भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, बाबा महाकाल को पूजन वाले लोग हैं। डॉ यादव ने कहा कि कांग्रेस ने 70 सालों में इतने पाप कर डाले कि इनके पापों की डिक्शनरी भी कम पड़ जाए। इनके पापों का घड़ा भरा चुका है और अब फूटने वाला भी है। हमने 500 वर्षों तक अपने अराध्य के मंदिर का सपना देखा। आजादी के बाद से लगभग 70 वर्षों तक कांग्रेस ने देश में शासन किया, लेकिन वे भगवान श्रीराम को गर्भगृह में विराजमान नहीं करवा पाए। उन्होंने कहा कि जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह बीडा उठाया तो इसमें भी कई अड़ंगे लगाए। जब उच्चतम न्यायालय का निर्णय आया तो उस पर भी आपत्ति उठायी। इतना ही नहीं उच्चतम न्यायालय के निर्णय का हमारे मुस्लिम भाइयों ने भी स्वागत किया और उन्होंने भी भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा का आनंद लिया, लेकिन कांग्रेस वाले कोई नहीं आए। अब वे वोट मांगने के लिए आ रहे हैं तो उनसे पूछना कि एक फोटो दिखाओ भगवान श्रीराम के साथ में तो नहीं दिखा पाएंगे। डॉ यादव ने कहा कि कांग्रेस ने सबसे ज्यादा संविधान में संशोधन कराए और अब भी वे संविधान का अपमान कर रहे हैं। उनके नेता राहुल गांधी एक लाल किताब को संविधान बता रहे हैं। सभाओं में जाकर कह रहे हैं कि भाजपा की सरकार आ गई तो वे संविधान को बदल देंगे।

मुद्रक, प्रकाशक, स्वामी, सैफुल्लाह सिद्दिकी द्वारा आरडी प्रिंटिंग एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-08, नोएडा (यूपी), से छपवा कर एन-81, बटला हाउस, जामिया नगर पुलिस स्टेशन, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित किया। सर्वाधिकार सुरक्षित, किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा। (संपादक- सैफुल्लाह सिद्दिकी)